NEET Bulletin Helpline No.
8800265682
Completely NEET Counselling Guidance specially for
MBBS BDS BAMS BHMS BUMS
B.Sc Nursing GNM D.| B. Pharma
BPT MPT D|BMLT D.Optometry
OT Technician Clinical Research
B.Sc Ag. Micro Bio Bio Chem
Bio tech. BNYS etc.

R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

विजडम इंडिया

निर्भीक और बेबाक अभिव्यक्ति

EMAIL: sheelshukla100@gmail.com

लखनऊ से प्रकाशित

वर्ष: 14 अंक: 118 लखनऊ, शनिवार 14 दिसंबर 2024 मूल्य: 02 रूपये पृष्ठ- 08

मुख्यमंत्री ने लिया पीएम के कार्यक्रम स्थलों का जायजा

हनुमान मंदिर कारिडोर सहित विभिन्न निर्माण कार्यों का किया निरीक्षण

प्रयागराज (एजेंसी) दौरे पर आए सीएम योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को प्रस्तावित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम स्थलों का जायजा लिया। सभा स्थल के साथ ही संगम पर बने जेटी, पूजन स्थल के साथ ही सरस्वती कूप, किला घाट, गंगा घाट, अक्षयवट और हनुमान मंदिर कॉरिडोर का जायजा लेते हुए दर्शन पूजन भी किया। मेला कार्यालय पर उन्होंने जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों के साथ दोपहर का भोजन किया और पीएम मोदी के दौरान की गई व्यवस्थाओं के बारे में चर्चा की। इसके बाद योगी ने सलोरी में एसटीपी का निरीक्षण किया। यहां पर काले पानी को एसटीपी के जरिए साफ करके दिखाया गया, जिसकी सीएम ने तारीफ की और संतोष व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दौरे के समय सीएम की गाड़ी में ही डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य, कैबिनेट मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह और नंद गोपाल गुप्ता नंदी मौजूद रहे। सीएम योगी आगे वाली सीट पर चालक के बगल बैठे रहे, जबकि पीछे वाली सीट पर केशव, नंदी और स्वतंत्रदेव बैठे रहे।

संगम और हनुमान मंदिर कॉरिडोर के साथ एसटीपी और रिवर फ्रंट का निरीक्षण करने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ झूंसी में छतनाग घाट पर पहुंचे। यहां की जा रही तैयारियों का जायजा लिया और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिया।

प्रयागराज दौरे पर आए सीएम योगी ने संगम तट पर श्री बड़े हनुमान (लेटे हनुमान) जी का दर्शन पूजन किया। भोग लगाने के बाद उन्होंने आरती उतारी। उनके साथ मंदिर के महंत बलवीर गिरि के साथ डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य, कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी, स्वतंत्रदेव सिंह, विधायक हर्षद न बाजपेयी, सिद्धार्थनाथ सिंह, एमएलसी सुरेंद्र चौधरी, महापौर उमेशचंद्र गणेश केसरवानी आदि मौजूद रहे। दर्शन पूजन के बाद योगी ने हनुमान मंदिर कॉरिडोर का निरीक्षण किया। इसके बाद अक्षयवट पहुंचकर दर्शन पूजन करने के बाद यहां चल रहे निर्माण कार्योंऔर सौंदर्यीकरण का जायजा लिया लिया।

संगम नगरी में गंगा पूजन कर पीएम मोदी नें विश्व को महाकुंभ का निमंत्रणक दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)प्रधानमंत्री का यात्रा कार्यक्रम दोपहर करीब 12रू15 बजे पवित्र संगम नोज की यात्रा के साथ शुरू होगा, जहां वह पूजा और दर्शन करेंगे। इसके बाद दोपहर करीब 12रू40 बजे हनुमान मंदिर और सरस्वती कूप में दर्शन के साथ–साथ पूजा अनुष्ठान के लिए अक्षय वट वृक्ष का दौरा किया जाएगा। बाद में, प्रधानमंत्री आयोजन की योजनाओं और प्रगति की समीक्षा करने के लिए महाकुंभ प्रदर्शनी स्थल का दौरा करेंगे। दोपहर 2 बजे तक, उनका भव्य धार्मिक आयोजन के लिए बुनियादी ढांचे और तैयारियों को बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न विकासात्मक पहलों का औपचारिक रूप से उद्घाटन और शुभारंभ करने का कार्यक्रम है।2025 में होने जा रहे महाकुंभ को भव्य बनाने की कवायद पूरी तेजी के साथ जारी है। महाकुंभ के लिए पर्यटन और यात्री सुविधाओं के साथ साथ इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी परियोजनाओं को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। पीएम मोदी 13 दिसंबर को महाकुंभ तैयारियों की समीक्षा करेंगे। इससे पहले सीएम योगी आदित्यनाथ सात दिसंबर को सभी तैयारियों का जायजा लिया। इसके मद्देनजर सभी महत्वपूर्ण सड़कों का तेजी से सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, प्रयागराज की अपनी यात्रा के दौरान, वह 6,670 करोड़ रुपये से अधिक की कई परियोजनाओं का उद्घाटन और शुभारंभ करेंगे।प्रधानमंत्री का यात्रा कार्यक्रम दोपहर करीब 12रू15 बजे पवित्र संगम नोज की यात्रा के साथ शुरू होगा, जहां वह पूजा और दर्शन करेंगे। इसके बाद दोपहर करीब 12रू40 बजे हनुमान मंदिर और सरस्वती कूप में दर्शन के साथ–साथ पूजा अनुष्ठान के लिए अक्षय वट वृक्ष का दौरा किया जाएगा। बाद में, प्रधानमंत्री आयोजन की योजनाओं और प्रगति की समीक्षा करने के लिए महाकुंभ प्रदर्शनी स्थल का दौरा करेंगे। दोपहर 2 बजे तक, उनका भव्य धार्मिक आयोजन के लिए बुनियादी ढांचे और तैयारियों को बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न विकासात्मक पहलों का औपचारिक रूप से उद्घाटन और शुभारंभ करने का कार्यक्रम है।विज्ञप्ति में बताया गया है कि इन पहलों में महाकुंभ 2025 के उद्देश्य से विभिन्न परियोजनाएं शामिल हैं, जिनमें 10 नए रोड ओवर ब्रिज (आरओबी) या फ्लाईओवर, स्थायी घाट और नदी के किनारे की सड़कें जैसे रेल और सड़क बुनियादी ढांचे शामिल हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य बुनियादी ढांचे में सुधार करना और प्रयागराज में निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित करना है। स्वच्छ और निर्मल गंगा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप, पीएम मोदी गंगा में गिरने वाले छोटे नालों को रोकने, टैप करने, डायवर्ट करने और उपचार करने की परियोजनाओं का भी उद्घाटन करेंगे।

कोच्चि पहुचे स्टालिन, वाइकोम सत्याग्रह में पेरियार की विरासत का किया सम्मान

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने केरल में कोट्टायम के वैकोम में पुनर्निर्मित थानथाई पेरियार मेमोरियल और पेरियार लाइब्रेरी के उद्घाटन के दौरान जाति और लैंगिक असमानताओं से लड़कर पेरियार की विरासत को जारी रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। सामाजिक कार्यकर्ता और राजनेता ई वी रामासामी, जिन्हें पेरियार के नाम से जाना जाता है, के सम्मान में स्थापित स्मारक और पुस्तकालय का उद्घाटन वाइकोम सत्याग्रह की 100वीं वर्षगांठ के हिस्से के रूप में किया गया था।पेरियार 1924 और 1925 के बीच त्रावणकोर में महत्वपूर्ण अहिंसक आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति थे। वाइकोम सत्याग्रह में उनके योगदान ने उन्हें ष्वाइकोम वीरारू (वाइकोम के नायक) की उपाधि दी। इस आंदोलन ने जाति–आधारित प्रतिबंधों को चुनौती दी, जो निचली जातियों को केरल में वैकोम श्री महादेव मंदिर के आसपास की सड़कों तक पहुंचने से रोकते थे। वैकोम सत्याग्रह के शताब्दी समारोह के समापन समारोह को चिह्नित करने के लिए आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, एक आंदोलन जिसमें पेरियार ईवी रामासामी की सक्रिय भागीदारी देखी गई।

ये रिश्ता क्या कहलाता है...जार्ज सोरोस और सोनिया गांधी मामले में बीजेपी का सवाल, राज्यसभा में जारी बवाल

भाजपा ने एक्स पोस्ट में लिखा कि सिर्फ राहुल गांधी ही नहीं, बल्कि उनकी मां व कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी भी भारतीय अर्थव्यवस्था को चौपट करने और देश को अस्थिर करने के लिए जरर्ज सोरोस के भारत विरोधी एजेडे को आगे बढ़ा रही हैं।

नई दिल्ली (एजेंसी)कांग्रेस–सोरोस लिंक के आरोपों ने गुरुवार को संसद को हिलाकर रख दिया। भाजपा ने इस मुद्दे को राज्यसभा में उठाया, जिससे उच्च सदन में हंगामा पैदा हो गई। उच्च सदन में हंगामे के बीच राज्यसभा की कार्यवाही दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि वे संसदीय परंपरा का सम्मान नहीं करते हैं। सदन के नेता और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने इस मुद्दे को उठाया और कहा कि देश कांग्रेस सांसद सोनिया गांधी और अमेरिकी अरबपति जॉर्ज सोरोस के बीच रिश्तेष को जानने का हकदार है, जिन पर नरेंद्र मोदी सरकार को अस्थिर करने के लिए भारत विरोधी एजेंडा चलाने का आरोप है।वहीं, भाजपा ने एक्स पोस्ट में लिखा कि सिर्फ राहुल गांधी ही नहीं, बल्कि उनकी मां व कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी भी भारतीय अर्थव्यवस्था को चौपट करने और देश को अस्थिर करने के लिए जॉर्ज सोरोस के भारत विरोधी एजेंडे को आगे बढ़ा रही हैं। जरा सोचिए, जॉर्ज सोरोस–सोनिया गांधी का ये रिश्ता क्या कहलाता है..? दूसरी ओर विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) के कई घटक दलों के सांसदों ने अदाणी समूह से जुड़े मुद्दे पर बृहस्पतिवार को 'देश नहीं बिकने देंगे' लिखे बैनर लेकर विरोध प्रदर्शन किया। कांग्रेस, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और कुछ अन्य दलों के सांसद संसद भवन के 'मकर द्वार' के निकट एकत्र हुए और सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। उन्होंने 'वी वांट जेपीसी' के नारे लगाए। उन्होंने मकर द्वार से संसद भवन में प्रवेश करने वाले भाजपा और सहयोगी दलों के सांसदों को तिरंगा और गुलाब का फूल भेंट किया तथा कहा कि 'देश मत बिकने दें।'' कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा और कई अन्य वरिष्ठ नेता इस विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए। विपक्षी सांसद प्रतिदिन अनोखे अंदाज में विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने बुधवार को संसद में प्रदर्शन करते हुए सत्तापक्ष के सदस्यों को तिरंगा एवं गुलाब का फूल भेंट किया था। रिश्वतखोरी और धोखाधड़ी के आरोपों में अदाणी समूह के प्रमुख गौतम अदाणी और कंपनी के अन्य अधिकारियों पर अमेरिकी अभियोजकों द्वारा अभियोग लगाए जाने के बाद कांग्रेस और कुछ अन्य विपक्षी दल संयुक्त संसदीय समिति से आरोपों की जांच कराए जाने की मांग कर रहे हैं।

शराब मामले में छत्तीसगढ़ के पूर्व आबकारी अधिकारी को जमानत देने से इनकार, सुप्रीम कोर्ट ने कहा- हम दो कारणों से ऐसा नहीं कर रहे

ढेबर का राजनीतिक संबंध है। इस मामले के मुख्य सरगनाओं में से एक माना जाता है, उस पर शराब खुदरा विक्रेताओं से कमीशन लेकर एक कार्टेल चलाने और त्रिपाठी की मदद से नीतिगत निर्णयों को प्रभावित करने का आरोप है, जो उस समय छत्तीसगढ़ विपणन निगम के अध्यक्ष थे।

नई दिल्ली (एजेंसी)सुप्रीम कोर्ट ने छत्तीसगढ़ शराब मामले में आरोपी छत्तीसगढ़ के पूर्व आबकारी अधिकारी अरुण पति त्रिपाठी को जमानत देने से इनकार कर दिया। अदालत ने उनके कुछ व्हाट्सएप चौट पर गंभीर आपत्ति जताई, जहां उन्होंने मामले के अन्य आरोपियों के साथ आधिकारिक होलोग्राम टेंडर दस्तावेज साझा किए थे। राज्य आर्थिक अपराध शाखा की हिरासत में 8 महीने बिताने के बाद, न्यायमूर्ति अभय एस ओका और ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने कहा कि हम आपको तुरंत जमानत दे सकते थे लेकिन हम दो कारणों से ऐसा नहीं कर रहे हैं। आपको अनवर ढेबर के साथ होलोग्राम साझा करने का क्या काम था और वह फिर इसे अनिल टुटेजा को भेजता है।ढेबर का राजनीतिक संबंध है। इस मामले के मुख्य सरगनाओं में से एक माना जाता है, उस पर शराब खुदरा विक्रेताओं से कमीशन लेकर एक कार्टेल चलाने और त्रिपाठी की मदद से नीतिगत निर्णयों को प्रभावित करने का आरोप है, जो उस समय छत्तीसगढ़ विपणन निगम के अध्यक्ष थे। पीठ ने कहा कि इन व्हाट्सएप चौट को पढ़ने के बाद, हमें राज्य को जांच पूरी करने के लिए कुछ

महीने देने की जरूरत है क्योंकि पैसे के लेन–देन का अभी भी पता लगाया जाना बाकी है। साथ ही कोर्ट ने जांच एजेंसी से कहा कि श्यह जांच लगातार नहीं चल सकती. हम राज्य को दो महीने के भीतर जांच पूरी करने का समय देते हैं। अदालत ने जमानत याचिका को अगले साल 21 फरवरी को सुनवाई के लिए लंबित रखा। टूटेजा को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा जांच किए गए मनी लॉन्ड्रिंग मामले में भी गिरफ्तार किया गया है जिसमें आरोप लगाया गया है कि शराब मामला घ्2,161 करोड़ से अधिक का है।

भारतीय राजनीति के चाणक्य हैं शरद पवार, आज मना रहे हैं 84 वां जन्मदिन

मुम्बई (एजेंसी) राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के नेता शरद पवार आज यानी की 12 दिसंबर को अपना 84वां जन्मदिन मना रहे हैं। शरद पवार के राजनीतिक जीवन में कई तरह के उतार–चढ़ाव आए। लेकिन उनके जीवन में एक पल ऐसा भी आया, जिसने शरद पवार के राजनीतिक जीवन को मोड़कर रख दिया। हालांकि उन्होंने हमेशा अपनी शर्तों पर काम करना पसंद किया।

बता दें कि शरद पवार को राजनीति का सबसे बड़ा चाणक्य भी कहा जाता है। तो आइए जानते हैं उनके जन्मदिन के मौके पर शरद पवार के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में..राजनीतिक सफरशरद पवार ने राजनीति में एक लंबा और महत्वपूर्ण सफर तय किया है। उन्होंने साल 1956 में छात्र जीवन से राजनीति की शुरूआत की थी। वह महाराष्ट्र की राजनीति में प्रमुख नाम हैं। साल 1956 में छात्र राजनीति में शरद पवार ने अपने राजनीतिक सफर की शुरूआत की। इस दौरान पवार ने महाराष्ट्र के प्रवरनगर क्षेत्र में गोवा की स्वतंत्रता को लेकर एक विरोध मार्च शुरू किया था। फिर साल 1960 में शरद पवार युवा कांग्रेस में शामिल हो गए।

LAC विवाद पर 5 साल बाद होगी स्पेशल बातचीत, मोदी के जेम्स बान्ड चीनी विदेश मंत्री से करेंगे मुलाकात

एसआर वार्ता में एलएसी को अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित और चित्रित करने के उद्देश्य से बहुस्तरीय चर्चा शामिल होने की उम्मीद है, जिसका अंतिम लक्ष्य स्थायी समाधान प्राप्त करना है। सूत्र बताते हैं कि इन वार्ताओं के नतीजे अगली कोर कमांडर-स्तरीय बैठक की समयसीमा तय करेंगे,

नई दिल्ली (एजेंसी)भारत और चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर लंबे समय से चले आ रहे तनाव को हल करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल इस मुद्दे पर एक महत्वपूर्ण चर्चा के लिए चीनी विदेश मंत्री वांग यी से मिलने के लिए तैयार हैं। दिसंबर के अंत में होने वाली विशेष प्रतिनिधि (एसआर) वार्ता, 2020 में गलवान घाटी संघर्ष के बाद पहली उच्च स्तरीय वार्ता होगी। पिछली एसआर बैठक तनाव बढ़ने से पहले दिसंबर 2019 में हुई थी। यह बैठक डेपसांग और डेमचोक में हाल ही में सैनिकों की वापसी के प्रयासों के मद्देनजर हो रही है, जो सीमा विवाद के व्यापक समाधान में संभावित सफलता का संकेत है। एसआर वार्ता में एलएसी को अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित और चित्रित करने के उद्देश्य से बहुस्तरीय चर्चा शामिल होने की उम्मीद है, जिसका अंतिम लक्ष्य स्थायी समाधान प्राप्त करना है। सूत्र बताते हैं कि इन वार्ताओं के नतीजे अगली कोर कमांडर–स्तरीय बैठक की समयसीमा तय करेंगे, जो आगे के टकराव को रोकने के लिए चल रही गश्त और बफर जोन के संबंध में परिचालन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करेगी।भारत और चीन 2020 से एलएसी पर स्थिति को कम करने के लिए सैन्य और राजनयिक प्रयासों की एक श्रृंखला में लगे हुए हैं। आगामी वार्ता दोनों देशों के लिए अपने मतभेदों को दूर करने, विश्वास बढ़ाने और अधिक स्थिर ढांचा स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करती है। अपनी विवादित सीमा का प्रबंधन करना।

पंचमसाली लिंगायत संत ने सिद्धारमैया को बताया लिंगायत विरोधी, बीजेपी ने लाठीचार्ज पर की माफी की मांग

पंचमशाली लिंगायत समुदाय के सदस्यों ने 2ए श्रेणी के तहत आरक्षण की मांग को लेकर सुवर्णा विधान सौध के पास विरोध प्रदर्शन किया।

नई दिल्ली (एजेंसी)कर्नाटक में पंचमशाली पीठ के संत ने बेलगावी में पंचमशाली लिंगायत प्रदर्शनकारियों पर मंगलवार को हुए लाठीचार्ज की निंदा की और राज्यव्यापी सड़क नाकाबंदी का आह्वान किया। बसव जयमृत्युंजय स्वामीजी ने मुख्यमंत्री सिद्धारमैया पर लिंगायत विरोधी होने का आरोप लगाते हुए आरोप लगाया कि पुलिस कार्रवाई पूर्व नियोजित थी और उच्चतम स्तर पर आदेश दिया गया था। तनाव तब बढ़ गया जब पंचमशाली लिंगायत समुदाय के सदस्यों ने 2ए श्रेणी के तहत आरक्षण की मांग को लेकर सुवर्णा विधान सौध के पास विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेड्स को पार कर लिया और उस परिसर में घुसने का प्रयास किया जहां विधानमंडल का शीतकालीन सत्र चल रहा था। जवाब में पुलिस ने भीड़ को तितर–बितर करने के लिए हल्का लाठीचार्ज किया, जिसमें 10 से ज्यादा लोग घायल हो गए। द्रष्टा ने दावा किया कि समुदाय वर्षों से शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन कर रहा था लेकिन पहली बार उसे हिंसा का सामना करना पड़ा। उन्होंने सरकार से माफी मांगने, इसमें शामिल वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को निलंबित करने और समुदाय के सदस्यों के खिलाफ दर्ज मामले वापस लेने की मांग की। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र ने कांग्रेस सरकार पर लोकतांत्रिक विरोध को दबाने का आरोप लगाया। मुख्यमंत्री ने प्रदर्शनकारियों को धमकाने के लिए लाठीचार्ज का आदेश दिया था। विजयेंद्र ने सवाल किया कि क्या सिद्धारमैया लोकतंत्र में विश्वास करते हैं, उन्होंने कहा कि सिद्धारमैया को पुलिस तैनात करने के बजाय प्रदर्शनकारियों का प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए था।विधायक अरविंद बेलाड ने लाठीचार्ज की तुलना जलियांवाला बाग हत्याकांड से करते हुए कहा कि सिद्धारमैया ने जनरल डायर जैसा व्यवहार किया था। उन्होंने कहा कि यह लिंगायतों पर हमला है और राज्य में अशांति है जो कांग्रेस के कारण है।

क्या कल संसद में पेश होगा एक देश-एक चुनाव बिल? बीजेपी ने अपने सभी सांसदों को जारी किया तीन लाइन का व्हिप

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने गुरुवार को लोकसभा के अपने सभी सांसदों को 13 और 14 दिसंबर 2024 को दोनों सदनों में चर्चा के लिए कुछ महत्वपूर्ण विधायी व्यवसाय के रूप में सदन में उपस्थित रहने के लिए तीन–लाइन व्हिप जारी किया। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट द्वारा वन नेशन वन इलेक्शन बिल पारित करने के बाद आया है। इस निर्णय के बाद एक व्यापक विधेयक आने की उम्मीद है, जिससे पूरे देश में एकीकृत चुनाव का मार्ग प्रशस्त होगा।इसे भी पढ़ेंरू अडानी मुद्दे से ध्यान भटकाने के लिए लगाए जा रहे झूठे आरोप, केसी वेणुगोपाल बोले– संसदीय मंच का दुरुपयोग कर रहे सत्ता पक्ष के सदस्यइससे पहले बुधवार को, भारत के पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने कहा कि केंद्र सरकार को श्एक राष्ट्र, एक चुनावश पहल पर आम सहमति बनानी चाहिए, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह मुद्दा राजनीतिक हितों से परे है और समग्र रूप से राष्ट्र की सेवा करता है। गौरतलब है कि इस साल सितंबर में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने श्एक राष्ट्र, एक चुनावश प्रस्ताव को मंजूरी दे दी थी, जिसका उद्देश्य 100 दिनों की अवधि के भीतर शहरी निकाय और पंचायत चुनावों के साथ–साथ लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराना है। पूर्व राष्ट्रपति कोविंद की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय पैनल की एक रिपोर्ट में सिफारिशों की रूपरेखा दी गई थी।कैबिनेट की मंजूरी के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस फैसले की सराहना की और इसे भारत के लोकतंत्र को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। पीएम मोदी ने एक्स पर पोस्ट किया कि कैबिनेट ने एक साथ चुनाव पर उच्च स्तरीय समिति की सिफारिशों को स्वीकार कर लिया है। मैं इस प्रयास का नेतृत्व करने और हितधारकों की एक विस्तृत श्रृंखला से परामर्श करने के लिए हमारे पूर्व राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द जी की सराहना करता हूं।

प्रयागराज में 25 हजार वर्ग फीट भूमि पर बनेगा एक और फूड कोर्ट, महाकुंभ में मिलेगा 'स्वाद का संगम'

लखनऊ (संवाददाता)। दुनिया का सबसे बड़ा आध्यात्मिक समागम, महाकुंभ–2025 एक माह बाद शुरू होने वाला है। कुंभ मेले में आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं को विशिष्ट अनुभव मिले, इसके लिए विभिन्न योजनाओं को मूर्त रूप दिया जा रहा है। इसी क्रम में प्रयागराज सिविल लाइंस में सीएमपी डिग्री कॉलेज के सामने एक और फूड कोर्ट बनाया जाएगा। करीब 25 हजार वर्ग फीट भूमि में फैले फूड कोर्ट में स्थानीय तथा विभिन्न प्रांतों के प्रसिद्ध शाकाहारी व्यंजन उपलब्ध रहेंगे। यह जानकारी उत्तर प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने दी।

पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि महाकुंभ–2025 की तैयारियां लगभग अंतिम चरण में है। सरकार इस आयोजन को भव्य और दिव्य रूप से संपन्न कराएगी। इसके लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। पर्यटकों के स्नान, ध्यान, भ्रमण, ठहरने आदि की व्यवस्था की जा रही है। बड़े पैमाने पर टेंट सिटी तैयारी की जा रही है। महाकुंभ क्षेत्र के अलावा प्रयागराज, अयोध्या, काशी, विंध्याचल सहित अन्य स्थलों पर भ्रमण के लिए विभिन्न पैकेज तैयार किए गए हैं। उत्तर प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम लिमिटेड (यूपीएसटीडीसी) श्रद्धालुओं के लिए पीपीपी मोड पर दो भव्य फूड कोर्ट की तैयारी कर रहा है। पहला फूड कोर्ट परेड ग्राउंड में बन रहा है, जबकि दूसरा सिविल लाइंस में सीएमपी डिग्री कॉलेज के सामने बनेगा। इसमें 15ग15 वर्ग फीट आकार की 25 दुकानें स्थापित की जाएगी, जिसमें गुणवत्तापूर्ण भोजन उपलब्ध होंगे। यहां विभिन्न प्रांतों के भोजन मिलेंगे। गौरतलब है कि महाकुंभ मेले में विभिन्न प्रांतों और दुनियाभर से पर्यटक आएंगे। आगंतुकों को उनका पसंदीदा भोजन उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से विकास करने वाला राज्य है। अयोध्या, काशी, मथुरा सहित अन्य तीर्थ स्थलों पर बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। महाकुंभ–2025 में देश–दुनिया से लगभग 40 से 50 करोड़ श्रद्धालुओं–पर्यटकों के आने की संभावना है। सभी आगंतुकों को बेहतर अनुभव देने का प्रयास किया जा रहा है।

शिक्षा और संस्कारों से मिलती है जीवन में तरक्की -कोविंद

47.39 करोड़ रुपये से तैयार होगा सर्वोदय बालिका विद्यालय, 490 बेटियों को मिलेगी शिक्षा
छात्राओं को आर्टिफिशियल इटेलिजेंस, और कंप्यूटेशनल थिंकिंग जैसी आधुनिक शिक्षा प्रदान की जाएगी
जेईई और नीट जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए निःशुल्क कोचिंग की सुविधा उपलब्ध होगी

लखनऊ (संवाददाता)। कानपुर देहात जिले के परौंख गांव में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक पहल हुई। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के पैतृक गांव में सर्वोदय बालिका विद्यालय का शिलान्यास किया गया। इस कार्यक्रम ने ग्रामीण भारत में बेटियों के लिए गुणवत्तापूर्ण और तकनीक आधारित शिक्षा का नया अध्याय शुरू किया।

सर्वोदय विद्यालय बालिका का शिलान्यास करने के बाद कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि गांव की बेटियां 5वीं कक्षा के आगे पढ़ने में असहज महसूस करती हैं क्योंकि आगे पढ़ने के लिए उन्हें दूसरे गांव या घर से दूर जाना पड़ता है, सर्वोदय विद्यालय के बन जाने से बेटियां निडर होकर आगे की पढ़ाई कर सकेंगी। संस्कारों की अहमियत पर जोर देते हुए कहा कि अच्छी शिक्षा और संस्कार आपको जमीन से उठाकर आसमान पर ले जा सकते है। मेहनत और ईमानदारी से चलेंगे तो आप जीवन में तरक्की करेंगे। कोविंद ने कहा कि राष्ट्रपति रहते हुए उन्होंने थल सेना प्रमुख जनरल विपिन रावत से कहा था कि डिफेंस में बेटियों की भागीदारी बढ़नी चाहिए। इसी को ध्यान में रखते हुए सर्वोदय विद्यालय को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर डिफेंस एंड पुलिस फोर्सेज के रूप में विकसित किया जाएगा। स्कूल से पढ़कर जब गांव की बेटी निकलेगी तो उसमेंआत्मविश्वास भरा होगा कि वह किसी से कम नहीं है।कार्यक्रम के दौरान समाज कल्याण राज्य मंत्री (स्व.प्र.) असीम अरुण ने कहा कि सर्वोदय विद्यालय विकसित भारत के आसमान में बच्चियों को उड़ान भरने के लिए हवाई पट्टी का काम करेगा। यहां सिर्फ एक विद्यालय का शिलान्यास नहीं बल्कि विकसित भारत की नींव रखी जा रही है। विद्यालय के बारे में जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि "परौंख में बनने वाला सर्वोदय बालिका विद्यालय न केवल शिक्षा का केंद्र होगा, बल्कि यह बेटियों को डिफेंस और पुलिस फोर्स में अपना करियर बनाने के लिए प्रेरित करेगा। इसे सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर डिफेंस एंड पुलिस फोर्सेज के रूप में विकसित किया जाएगा।" उन्होंने कहा कि जिन बच्चियों को सेना से इतर किसी अन्य क्षेत्र में जाने का मन होगा उनके लिए कौशल विकास के प्रशिक्षण की सुविधा होगी। मुख्यमंत्री अभ्युदय कोचिंग प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए बच्चियों को तैयार करेगी। एनसीसी का प्रशिक्षण भी बच्चियों को विद्यालय में मिलेगा। यह विद्यालय दो साल में बनकर तैयार हो जाएगा और वर्ष 2027 में बच्चियों के लिए पहले सत्र की शुरुआत होगी। धन्यवाद ज्ञापन समाज कल्याण राज्य मंत्री संजीव कुमार गोंड ने किया।

ग्रामीण बालिकाओं के लिए उम्मीद की किरण

यह विद्यालय बालिकाओं को कक्षा 6 से 12 तक निःशुल्क आवासीय शिक्षा प्रदान करेगा। आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित यह विद्यालय, स्मार्ट क्लास, ई–लैब, टैब–लैब, और लाइब्रेरी जैसी तकनीकी सुविधाएं उपलब्ध कराएगा। इसके अलावा, जेईई और नीट जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए मुफ्त कोचिंग भी दी जाएगी। छात्राओं को एनसीसी के माध्यम से डिफेंस और पुलिस फोर्स में जाने का प्रशिक्षण मिलेगा।

शिक्षा का तकनीक और परंपरा से जुड़ाव

सर्वोदय बालिका विद्यालय शिक्षा की प्राचीन गुरुकुल परंपरा और आधुनिक तकनीकी शिक्षा का अनूठा संगम होगा। विद्यालय में "ज्म्ड, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और कंप्यूटेशनल थिंकिंग जैसे विषय पढ़ाए जाएंगे। समाज कल्याण विभाग द्वारा 75 जनपदों में मॉडल सर्वोदय विद्यालय विकसित करने का प्रयास चल रहा है।

पूर्व राष्ट्रपति की प्रेरणा से नई पहल

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की ग्रामीण विकास और शिक्षा के प्रति गहरी निष्ठा के परिणामस्वरूप यह विद्यालय स्थापित हो रहा है। उन्होंने कहा, "परौंख में इस विद्यालय का निर्माण न केवल बेटियों को आत्मनिर्भर बनाएगा, बल्कि उन्हें सपनों को साकार करने का अवसर देगा।"

विश्व दिव्यांग दिवस कार्यक्रम को भव्य रूप से आयोजित करने और महाकुम्भ में दिव्यांगजन विभाग का शिविर लगाने के निर्देश

लखनऊ (संवाददाता)। प्रदेश के पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नरेंद्र कश्यप ने आज विधानसभा सचिवालय में आयोजित विभागीय समीक्षा बैठक में योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए। मंत्री ने कहा कि योजनाओं के लिए आवंटित धनराशि का समयबद्ध और प्रभावी उपयोग सुनिश्चित किया जाए, ताकि पात्र लाभार्थियों को योजना का लाभ शीघ्र मिल सके।

बैठक के दौरान मंत्री ने शादी अनुदान, छात्रवृत्ति योजनाओं, और कम्प्यूटर प्रशिक्षण (ट्रिपल सीध्ओ लेवल) के लाभार्थियों को शीघ्रता से धनराशि हस्तांतरित करने के निर्देश दिए। उन्होंने लंबित आवेदनों का निस्तारण प्राथमिकता पर करने को कहा और यह सुनिश्चित करने पर जोर दिया कि योजनाओं का प्रचार–प्रसार गांव–गांव तक पहुंचे। दिव्यांगजन सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान देते हुए मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि दिव्यांगजनों की समस्याओं का समाधान मोबाइल कोर्ट के माध्यम से किया जाए। साथ ही, दिव्यांगजनों को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के लिए अधिक से अधिक टेबलेट का वितरण सुनिश्चित किया जाए। मंत्री ने यह भी निर्देश दिए कि विश्व दिव्यांग दिवस को भव्य रूप से आयोजित किया जाए, ताकि समाज में जागरूकता बढ़ाई जा सके।महाकुम्भ 2025 को ध्यान में रखते हुए मंत्री ने कहा कि प्रयागराज में महाकुम्भ के दौरान दिव्यांगजन और पिछड़ा वर्ग विभाग का शिविर लगाया जाए, जिसमें विभागीय योजनाओं और लाभों की जानकारी दी जाए। उन्होंने यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि शिविर में अधिक से अधिक दिव्यांगजनों और पिछड़ा वर्ग के लोगों को जोड़कर उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जाए। विभागीय निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए मंत्री ने लंबित परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि योगी सरकार की मंशा के अनुसार, हर योजना का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि पात्र लाभार्थियों को समय पर योजनाओं का लाभ मिले। मंत्री ने स्पष्ट किया कि दिव्यांगजनों की समस्याओं का समाधान समयबद्ध तरीके से होना चाहिए और इसके लिए अधिकारी तत्परता से कार्य करें।

संविधान की धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक सौहार्द को मजबूत करता है सुप्रीम कोर्ट का आदेश - अनीस मंसूरी

लखनऊ। पसमांदा मुस्लिम समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मंत्री माननीय अनीस मंसूरी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय खंडपीठ ने आदेश दिया है कि उपासना स्थलों के मामलों की सुनवाई अदालतें न करें, हम माननीय सर्वोच्च न्यायालय की खंडपीठ द्वारा दिए गए इस ऐतिहासिक और दूरदर्शी आदेश का हार्दिक स्वागत करते हैं। यह आदेश न केवल भारतीय संविधान के धर्मनिरपेक्ष ढांचे की रक्षा करता है, बल्कि सामाजिक सौहार्द, आपसी भाईचारे और राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ करता है।श्री मंसूरी ने कहा कि पसमांदा मुस्लिम समाज हमेशा से यह मानता रहा है कि धार्मिक स्थलों को विवादों और राजनीति से दूर रखा जाना चाहिए। धार्मिक स्थलों को विवादों में उलझाने से केवल सामाजिक तनाव और विघटन बढ़ता है, जिससे देश की प्रगति और शांति प्रभावित होती है। इस आदेश से स्पष्ट संकेत मिलता है कि न्यायपालिका देश में सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के प्रति प्रतिबद्ध है।

अनीस मंसूरी ने कहा कि यह निर्णय भारत की विविधता में एकता के सिद्धांत को मजबूत करता है। हमारे देश में हर धर्म, जाति, और समुदाय के लोगों के बीच प्रेम और विश्वास का जो ताना–बाना है, उसे बनाए रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। माननीय मुख्य न्यायाधीश और खंडपीठ ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि धार्मिक मामलों को न्यायपालिका के दायरे से बाहर रखकर समाज को खुद अपनी समस्याओं का समाधान आपसी संवाद और समर्पण से करना चाहिए।श्री मंसूरी ने कहा कि हम यह भी मानते हैं कि यह फैसला उन ताकतों के लिए एक सबक है, जो धार्मिक स्थलों का उपयोग राजनीतिक या सांप्रदायिक लाभ के लिए करना चाहती हैं। न्यायपालिका के इस निर्णय से भारत में कानून के शासन और संविधान के आदर्शों पर लोगों का विश्वास और अधिक मजबूत होगा।अनीस मंसूरी ने कहा कि पसमांदा मुस्लिम समाज इस फैसले के लिए माननीय मुख्य न्यायाधीश और खंडपीठ के अन्य सदस्यों का हृदय से आभार प्रकट करता है। हम आशा करते हैं कि यह आदेश देश में सामाजिक शांति और समरसता के नए युग की शुरुआत करेगा।

प्रदेश में 21 नवीन गो संरक्षण केन्द्रों के निर्माण हेतु 16 करोड़ 80 लाख रूपये की धनराशि स्वीकृत

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रदेश में निराश्रित गोवंश के संरक्षण के लिए 13 जनपदो के 21 नवीन गो संरक्षण केन्द्रों के निर्माण हेतु प्रथम किश्त के रूप में 80 लाख की दर से 16 करोड़ 80 लाख रूपये की धनराशि वर्तमान वित्तीय वर्ष में स्वीकृत की है। स्वीकृत धनराशि से बरेली के ग्राम जैनपुर कादराबाद, तहसील आँवला, हाथरसध के ग्रा0 नगला गढ्ढ, तह0 सासनी, मिर्जापुर के ग्रा0 खरिहटकला, तह0 लालगंज, लखीमपुर खीरी के ग्रा0 समैसा, तह0 धौरहरा, कानपुर देहात के ग्रा0 बम्हरौली घाट बांगर, तह0 भोगनीपुर, ललितपुर के ग्रा0 हरदारी ग्र्राम सभा मादौन, तह0 ललितपुर, बिजनौर के ग्रा0 चांगीपुर, तह0 चान्दपुर, बदायूँ के ग्रा0 कोड़ा जयकरन, तह0 दातागंज, ग्रा0 गदरौली, तह0 दातागंज, ग्रा0 ताहिरपुर जाहिदपुर, तह0 सहसवान, ग्रा0 गुठेला, तह0 बिसौली तथा गोण्डा के ग्रा0 महादेवा, तह0 तरबगंज में निर्माण किया जायेगा। इसके साथ ही शाहजहाँपुर के ग्रा0 केवल रामपुर चिलऊवा, तह0 जलालाबाद, अमेठी के ग्रा0 कठौरा, तह0 मुसाफिरखाना, ग्रा0 रोहसी बुजुर्ग, तह0 गौरीगंज, ग्रा0 तारापुर, तह0 अमेठी, ग्रा0 पीढ़ी, तह0 तिलोई, जालौन के ग्रा0 सिकरी व्यास, तह0 उरई, ग्रा0 रतहरी, तह0 जालौन, ग्रा0 रोमई मुस्तकिल, तह0 जालौन तथा झांसी के ग्रा0 लारौनी, तह0 मऊरानीपुर में गो संरक्षण केन्द्रों की स्थापना की जायेगी। प्रत्येक केन्द्र हेतु 80 लाख रूपये की धनराशि का प्रावधान किया गया है। इस संबंध में पशुधन विभाग द्वारा शासनादेश जारी करते हुए निदेशक, प्रशासन एवं विकास पशुपालन विभाग को आवश्यक दिशा–निर्देश जारी कर दिये गये हैं। शासनादेश में कहा गया है कि गो संरक्षण केन्द्रों हेतु निर्गत की गयी धनराशियों के नियम संगत व्यय, व्यय विवरणध्उपयोगिता प्रमाण पत्र तथा भौतिक प्रगति तथा गुणवत्ता सुनिश्चित किये जाने का दायित्व निदेशक प्रशासन एवं विकास पशुपालन विभाग का होगा।

सी.एम.एस. राजाजीपुरम कैम्ब्रिज सेक्शन द्वारा 'क्रिसमस्टाइड विन्टरफेस्ट–2024' का भव्य आयोजन

लखनऊ, 13 दिसम्बर। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, राजाजीपुरम प्रथम कैम्पस के कैम्ब्रिज सेक्शन के तत्वावधान में क्रिसमस्टाइड विन्टर फेस्ट–2024 का भव्य आयोजन विद्यायल के ऑडिटोरियम में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रभु ईशु की महिमा का गुणगान करते भजनों व गीतों (क्रिसमस कैरॅल्स) एवं लंदन से पधारे संगीत बैंड 'अज्योर क्वार्टेट' द्वारा पश्चिमी शाष्त्रीय संगीत की मनमोहक प्रस्तुतियों से दर्शक झूम उठे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा. श्रद्धा शुक्ला, डायरेक्टर, राज्य ललित कला एकेडमी एवं विशिष्ट अतिथि श्री इन्द्रजीत सिंह, म्युनिसिपल कमिश्नर एवं सी.एम.एस. ने समारोह की गरिमा को बढ़ाया।

'क्रिसमस्टाइड विन्टर फेस्ट' के अन्तर्गत विभिन्न प्रतिष्ठित विद्यालयों के छात्रों ने एकल गायन, समूह गायन एवं रॉक बैण्ड प्रतियोगिताओं में जोरदार भागीदारी कर अपनी स्वर लहरियों को अभूतपूर्व समाँ बाँधा। सर्वश्रेष्ठ छात्रटीम को प्रशस्ति पत्र व आकर्षक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।इस अवसर पर अपने संबोधन में मुख्य अतिथि डा. श्रद्धा शुक्ला, डायरेक्टर, राज्य ललित कला एकेडमी ने अभिभावकों का आह्वान किया कि यदि बच्चों में किसी क्षेत्र विशेष में विशेष प्रतिभा नजर आती है तो उसे नजरअंदाज न करें एवं उसकी प्रतिभा को प्रोत्साहित करने में कोई कसर न छोड़ें। विशिष्ट अतिथि श्री इन्द्रजीत सिंह, म्युनिसिपल कमिश्नर ने कहा कि सी.एम.एस. बधाई का पात्र है जो भावी पीढ़ी को ग्लोबल सिटीजन के रूप में ढाल रहा है। इससे पहले, सी.एम.एस. प्रबन्धक प्रो. गीता गाँधी किंगडन ने मुख्य अतिथि समेत सभी विशिष्ट अतिथियों व गणमान्य नागरिकों का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि गीत–संगीत हमें आध्यात्मिक अनुभूति से रूबरू कराते हैं। यह आत्मिक शक्तियों को बढ़ाता है एवं भावी पीढ़ी को समाज का सभ्य व सुसंस्कृत नागरिक बनाने में मदद करता है। 'क्रिसमस्टाइड विन्टर फेस्ट–2024' की संयोजिका एवं सी.एम.एस. राजाजीपुरम प्रथम कैम्पस की वरिष्ठ प्रधानाचार्या श्रीमती निशा पाण्डेय ने कहा कि क्रिसमस्टाइड विन्टर फेस्ट का उद्देश्य छात्रों में सर्वधर्म समभाव की भावना को बढ़ावा देना है।

देश को नष्ट करना चाहती है सत्तारूढ़ पार्टी : संजय

लखनऊ,। आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह ने हाल ही में इलाहाबाद हाई कोर्ट के न्यायधीश शेखर कुमार यादव के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह देश सभी का है और यह बात भारतीय संविधान में लिखी हुई है। कोई भी व्यक्ति संविधान के खिलाफ नहीं जा सकता है, और यदि कोई इसके खिलाफ जाता है, तो हम उसकी आवाज उठाएंगे। यह देश किसी एक वर्ग का नहीं, बल्कि सभी भारतीयों का है।ष्उन्होंने आगे कहा, सत्तारूढ़ पार्टी इस देश को नष्ट करना चाहती है। देश में बेरोजगारी बढ़ रही है, स्कूल और अस्पताल बंद हो रहे हैं। क्या सत्तारूढ़ पार्टी ने इस पर कभी कुछ कहा? नहीं। कोई भी न्यायधीश यह अधिकार नहीं रखता कि वह यह कहे कि यह देश केवल बहुसंख्यक समुदाय का है।ष्संजय सिंह ने यह भी आरोप लगाया कि वर्तमान सरकार ने देश की मूल धारा को कमजोर किया है और यह संविधान के खिलाफ काम कर रही है। उन्होंने नागरिकों से संविधान के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखने का आह्वान किया और न्याय के पक्ष में अपनी आवाज बुलंद करने का आह्वान किया।

लखनऊ गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सर्व धर्म समन्वय सभा का आयोजन

बांग्लादेश में घटित अमानवीय घटनाओं पर सभी मे रोष

लखनऊ रूआज लखनऊ गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सर्व धर्म समन्वय सभा का आयोजन किया जिसमें सभी धर्मों के धर्मगुरु एवं धर्म प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। स राजेंद्र सिंह बग्गा (अध्यक्ष) ने बताया कि इस विशेष आयोजन का संदर्भ वर्तमान में अल्पसंख्यक हिंदु समुदाय पर अत्याचार, शोषण, मंदिरों को विध्वंस करने पर की गई।बांग्लादेश में हो रही इस तरह की घटनाओं से पूरा विश्व स्तब्ध है, विशेष तौर से भारत। लखनऊ गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी समय समय पर ज्वलंत विषयों पर अपनी आवाज बुलंद करती आई है। आज सब को एक साथ बांग्लादेश में घटित इन दानवीय घटनाओं पर खंडन और रोष प्रकट करने की आवश्यकता है।इसी श्रृंखला में कार्यवाहक अध्यक्ष एवं महामंत्री, स हरपाल सिंह जग्गी ने अपने अभिभाषण में कहा कि बांग्लादेश की सरकार एवं सेना कट्टरपंथियों एवं दंगाइयों का पूरा साथ शेख हसीना के तख्ता पलटने के बाद से प्रदान कर रही हैं। हिंदुओं के व्यापारिक प्रतिष्ठानों, घरों, मंदिरों को ना केवल निशाना बनाया जा रहा है बल्कि नरसंहार,बलात्कार एवं शोषण चरम सीमा पर किया जा रहा है जिसका असर भारत में आपसी भाईचारे एवं धार्मिक सौहाद्र पर पड़ सकता है। प्रवक्ता स. सतपाल सिंह मीत ने अवगत कराया की आज के सर्व धर्म समन्वय सभा में सभी धर्मों के धर्म प्रतिनिधि सम्मिलित हैं विशेष तौर से शांति के दूत इस्लाम मत से मौलाना खालिद रशीद फिरंगी महली, मौलाना सूफियान निजामी, हिंदू मत से महंत दिव्या गिरी, बहाई समाज से भारती गांधी, श्री आर. डी. द्विवेदी अध्यक्ष आशियाना परिवार, बुद्ध मत से भंते ज्ञान लोक, ईसाई मत से फादर डोनल्ड, जैन मत से अशोक जैन, सिंधी समाज से मुरलीधर आहूजा,हिंदू पंजाबी सामाजिक नेता अखिल ग्रोवर एवं अन्य मतों से धर्म प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।मौलाना खालिद रशीद ने कहा कि बांग्लादेश में हो रही हिंदुओं पर हिंसा का भारत का प्रत्येक मुसलमान कड़ा विरोध करता है। किसी धार्मिक स्थल को तोड़ने, बेगुनाहों का कत्ल करने की इजाजत इस्लाम नहीं देता और इस तरह के लोग मुसलमान नहीं हो सकते।सूफियान निजामी जी ने कहा कि हम इस तरह की नापाक हरकतों की घोर निंदा करते हैं।महंत दिव्या गिरी ने कहा कि सर्व धर्म में मानवता का धर्म सर्वोपरि है। बांग्लादेश में घटित हो रही घटना चिंताजनक है और सभी धर्म गुरुओं के धार्मिक सामंजस्व को सशक्त करने के लिए सर्व धर्म सभाएं करनी चाहिए।श्रीमती भारती गांधी जी,बहाई धर्म प्रतिनिधि ने कहा कि सी.एम.एस. समय समय पर विश्व शांति हेतु इंटरफेथ हार्मनी का आयोजन करता रहता है जहां पर विश्व के धर्म गुरु भाग लेते हैं। बांग्लादेश में जो घटित हो रहा है वह अत्यंत खेद पूर्ण है।सभा में उपस्थित सभी का मैं आभार प्रकट करते हुए कहना चाहूँगी जय जगत।सारी दुनिया कि जय हो ।

आज हम मनुष्य जिस दुनिया में जी रहे हैं या यू कहें कि जिस विश्व को देख रहे हैं ये वही विश्व है जो हमें ईश्वर से कुदरत से या कहें कि प्रकृति से मिला था। ये दुनिया एक अनमोल धरोहर है। एक तरफ तो कुछ लोग तकनीक के नए नए ईजाद करके, नए नए कीर्तिमान स्थापित करते हुए दुनिया को और खूब सूरत बनाने की दिशा में लगातार प्रयास कर रहे हैं। परन्तु कुछ लोग न जाने क्यों बहक कर इस धरती पर युद्ध छेड़ रहे हैं। आज कि स्थितियां देख कर हम सभी सोच में पड़ जाते हैं और बहुत चिंतित हो जाते है कि ये लड़ाई ये झगडे ये द्वेष ये उत्पात क्यों हो रहा है। शांति तभी आएगी जब हम ईश्वर की बताई शिक्षाओं को जाने और मने भी । आज जो बंगलादेश की स्थिति है वो चिंता का विषय है,दुःख होता है वो तसवीरें देख कर ।धरती पर जितने भी युग अवतार हुए हैं उन्होंने सिर्फ शांति, प्रेम, दया का सन्देश दिया है। सी एम् एस का ये ही दर्शन है, सी एम् एस के एलुमनाई और छात्रों का भी यही मानना है कि दुनिया से लड़ाइयां तभी समाप्त होंगी जब हम ईश्वर को माने भी और उसकी बताई शिक्षाओं को जाने भी। मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वो सभी का मन मस्तिष्क प्रकाशित करें और सबके भीतर एकता और शांति का प्रकाश दें जिससे ये दुनिया स्वर्ग सी सूंदर हो जाये।

सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क के घर पर चलेगा बुलडोजर? तहसील से नोटिस जारी

लखनऊ,12 दिसंबर 2024 (यूएनएस)। संभल से समाजवादी पार्टी के सांसद जियाउर्रहमान बर्क की मुश्किलें बढ़ सकती हैं।तहसील प्रशासन ने निर्माणाधीन मकान के संदर्भ में नोटिस जारी किया है। आरोप है कि बिना नक्शा पास कराए आवास का निर्माण हो रहा था. सांसद को भेजी नोटिस में कहा गया है कि वैधा नक्शा पास बिना दिखाए निर्माण नहीं कर सकते नोटिस का जवाब देने के लिए सांसद को समय दिया गया है।सपा सांसद जियाउर्र रहमान बर्क का निर्माणाधीन मकान नखासा थाना क्षेत्र के दीपा सराय में बन रहा था।बर्क को नोटिस ऐसे समय में दी गई है जब एक दिन पहले बुधवार को ही संभल में बुलडोजर गरजा था और सांसद ने इसका विरोध किया था। बुधवार को डीएम और एसपी ने सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क के घर के पास पुलिस फोर्स के साथ भ्रमण किया था। संभल डीएम और एसपी की मौजूदगी में सपा सांसद के इलाके में बिजली के एक पोल को अवैध तरीके से कब्जाने पर बुलडोजर एक्शन भी लिया गया। नखासा थाना इलाके के दीपा सराय चौक पर एक बिजली के खंबे को दुकान के अंदर अवैध रूप के कब्जा कर लिया गया था जिसे प्रशासन के निर्देश पर बुलडोजर एक्शन के जरिए कब्जामुक्त कराया गया था। मौके पर मौजूद डीएम संभल डॉ राजेंद्र पेंसिया ने बताया कि यहां पर एक कूप कुआ है जिसे बंद करवा दिया गया था उसे खुलवाने के निर्देश दिए गए हैं दूसरा अतिक्रमण से संबंधित प्रकरण में मेरे और कप्तान साहब के द्वारा दबिश दी जा रही है इसी संबंध में हम यहां पर आए हैं बिजली विभाग को निर्देश दिए गए हैं कि वह अपना ट्रांसफार्मर सही जगह स्थापित करे ईओ और बिजली विभाग को बोला गया है कि दोनों की जगह पर जो अवैध कब्जा किया गया है उसे हटाया जाए। बुलडोजर एक्शन पर संभल सांसद ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर लिखा था, सम्भल से एक तल्ख हकीकत सामने आ रही। पाँच मुसलमानों की जान लेने के बाद भी मुस्लिम मोहल्लों में खौफ पैदा करने के लिए बुलडोजर चलाया जा रहा है मुतास्सिरीन को इंसाफ दिलाने के बजाय मुसलमानों को शक की बुनियाद पर जेलों में डाला जा रहा है। उनपर बेबुनियाद इल्जामात लगाए जा रहे हैं और उन्हें जिस्मानी और जेहनी अजीयत दी जा रही है। सांसद ने कहा था कि इस जुल्म का शिकार सिर्फ मर्द ही नहीं बल्कि औरतें और यहां तक कि हो रहे हैंजिसकी वजह से पूरे खघनदान बेबस और खौफजदा हैं।यह जुल्म एक हौलनाक तस्वीर पेश करता है मासूम लोगों को कुसूरवार ठहराया जा रहा और उन्हें सजा दी जा रही है।

टेक बी कार्यक्रम के जरिये इंटर के छात्रों के लिये खुलेगी कॅरियर की राह

लखनऊ,। इण्टरमीडिएट छात्रों को कॅरियर की शुरूआत करने के लिये एससीएल टेक प्रशिक्षण देने के लिये टेक बी कार्यक्रम की घोषणा की है। इस कार्यक्रम के जरिये चयनित छात्रों को एक वर्ष तक प्रशिक्षण देने के बाद एचसीएल में ही न सिर्फ पूर्णकालिक नौकरी दी जायेगी बल्कि प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे बीआईटीएस पिलानी, ट्रिपल आईटी कोट्टायम, एसएएसटीआरए विश्वविद्यालय और एमिटी विश्वविद्यालय ऑनलाइन से पार्ट–टाइम उच्च शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं।

विज्ञान प्रदर्शनी व बाल मेला पर बच्चों ने मनवाया प्रतिभा का लोहा

अयोध्या(एजेंसी)। गायत्री पब्लिक स्कूल रेवतीगंज में स्वर्गीय राम कलप शुक्ल की 24वीं पुण्यतिथि के अवसर पर सम्मान समारोह, विज्ञान प्रदर्शनी और बाल मेला आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ सपा नेता राघवेंद्र प्रताप सिंह 'अनूप' रहे। मुख्य अतिथि ने कहा कि इस तरह के आयोजनों से बच्चों में स्वावलंबिता, आत्म विश्वास, रचनात्मक एवं सृजनात्मक सोच का विकास होता है। प्रबंधक उमाशंकर शुक्ल, गायत्री देवी और प्रधानाचार्या शिखा दूबे सहित सैकड़ो लोगों की उपस्थिति में मुख्य अतिथि ने मां सरस्वती और स्वर्गीय शुक्ला की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित और पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रमों की शुरुआत की । इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा क्षेत्र के सैकड़ो गणमान्य लोगों को अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित करने के साथ फीता काटकर विज्ञान प्रदर्शनी और बाल मेले का शुभारंभ किया गया। उत्साहित एवं प्रतिभाशाली बच्चों के मॉडल और स्वनिर्मित व्यंजनों के स्टॉल का अवलोकन करने के पश्चात न सिर्फ मुख्य अतिथि अपितु विद्यालय प्रांगण में मौजूद सैकड़ों अभिभावकों एवं गणमान्यों ने मुक्त कंठ से बच्चों के प्रयास और प्रदर्शन की सराहना की। रेन वाटर हार्वेस्टिंग, वॉटर ट्रीटमेंट प्योरीफिकेशन, थर्मो इलेक्ट्रिक इफेक्ट, ई वी एम मशीन, न्यूक्लियर पावर प्लांट, ह्यूमन एनाटॉमी, वर्किंग मॉडल , ब्रह्मोस मिसाइल आदि मॉडलों के साथ उपस्थिति लोगों ने स्वनिर्मित मोमोज, फुल्की, चूरमुरे, इमरती, ब्रेड पकौड़ा, बेज रोल, गुझिया, खुरमा , पेस्टी आदि व्यंजनों का जमकर लुत्फ उठाया। उप प्रबंधक रमा शंकर शुक्ल ने उपस्थिति लोगों का स्वागत और आभार प्रकट किया। इस अवसर पर सपा नेता बख्तियार खान, प्रभा शंकर शुक्ल,अतुल पांडेय, अशोक तिवारी, संजीव तिवारी, गजराज यादव, पवन तिवारी,राजेंद्र यादव, राम प्रकाश यादव, राम अवतार प्रजापति, विकास सिंह, राधेश्याम तिवारी,बृजनंदन तिवारी सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।?

गोसाईगंज रेलवे स्टेशन पर जीआरपी व आरपीएफ चौकी खोलने की मांग

सभासद ने एसएस गोसाईगंज को सौंपा रेल मंत्री को संबोधित मांग पत्र

गोसाईगंज–अयोध्या(एजेंसी)। लखनऊ–बाराबंकी शाहगंज–जौनपुर रेलखंड स्थित पूर्वांचल में अयोध्या धाम के प्रथम प्रवेश द्वार तथा सरयू तट स्थित प्रसिद्ध सिद्धपीठ संत श्रृंगीऋषि के पावन स्थलीय क्षेत्र एवं जनपद की प्रमुख व्यावसायिक नगर गोसाईगंज रेलवे स्टेशन पर जीआरपीध आरपी एफ चौकी खोलने की मांग गोसाईगंज नगर पंचायत की सभासद एवं श्री सीता राम जी विराजमान मंदिर सेवा ट्रस्ट कस्बा दिलासीगंज की सदस्य आरती जायसवाल ने रेल मंत्री को संबोधित पत्र गोसाईगंज स्टेशन अधीक्षक महेंद्र नाथ मिश्र को पत्र सौंपकर की है। पत्र की छाया प्रति रेलवे सुरक्षा बल के ए० एन० मिश्रा,महा निरीक्षक एवं प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त उ०रे० बड़ौदा हाउस नई दिल्ली,मनोज यादव महानिदेशक रेल भवन नई दिल्ली, देवांश शुक्ला वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त उरे० हजरत गंज लखनऊ,वीरेंद्र प्रताप सिंह सहायक सुरक्षा आयुक्त उरे० वाराणसी,मंडल रेल प्रबंधक उरे० लखनऊ सहित जीआरपी के श्री प्रकाश डी० अपर पुलिस महा निदेशक रेलवे लखनऊ उप्र० एवं प्रशांत कुमार पुलिस अधीक्षक रेलवे अनुभाग लखनऊ उप्र० को भी भेजी है। दिए गए पत्र में सभासद श्रीमती जायसवाल ने दर्शाया है कि गोसाईगंज स्टेशन से प्रतिदिन बीसो किमी चौतरफा परिधि के रेल यात्री हावड़ा,जम्मूतवी,गया, वाराणसी,मुरादाबाद,लखनऊ, कानपुर, इटावा, गाजियाबाद,सहारनपुर,अहमदाबाद,सूरत,नासिक,शाहजहांपुर,बरेली,गया,गोरखपुर,फिरोजपुर,अमान,लुधियाना,मुंबई, दिल्ली,चेन्नई सहित अन्य नामी गिरामी रेलवे स्टेशन तक यात्रा करते हैं। अयोध्या धाम में राम जन्म भूमि मंदिर बनने के बाद जहां इस स्टेशन पर यात्रियों की संख्या बढ़ी हुई है वहीं गोसाईगंज स्टेशन पूर्व सांसद एवं मौजूदा एमएलसी हरिओम पांडे तथा रेल उपभोक्ता सलाहकार समिति सदस्य पंकज सिंह का होम स्टेशन होने के बावजूद यहां रेल यात्रियों की सुरक्षा राम भरोसे है।गोसाईगंज स्टेशन को डबलिंग के बाद इसे बड़े स्टेशन के रूप में विस्तारित किया जा रहा है।यहा से अपध्डाउन साइड की 5 दर्जन गाड़ियां गुजरती है,जिसमें अपध्डाउन साइड की डेढ़ दर्जन से अधिक गाड़ियों का ठहराव होने के कारण 3 प्लेटफॉर्म वाले इस स्टेशन पर आरक्षितध्अनारक्षित टिकटों की बिक्री प्रतिदिन लाखों में होती है। आरपीएफध्जीआरपी चौकी न होने के कारण यात्रियों में जहां असुरक्षा की भावना बनी रहती हैं वही स्टेशन के पूर्वीध्पश्चिमी सिरे स्थित रेल बैरियर पर छोटे बड़े वाहनों के दबाव से यात्री ट्रेनें भी रेल बैरियर बंद न होने के कारण आउटर पर अपना सिग्नल लाल देखकर खड़ी हो जाती है।यहां की सुरक्षा व्यवस्था अकबरपुर में तैनात जीआरपीध आरपीएफ के हवाले होने के कारण हैवी रेस्ट ट्रॉफिक भ्त्ज,आए दिन ट्रेनों पर होने वाली पत्थर बाजी, यात्री सामानों की चोरी की घटनाओं पर जहां अंकुश नहीं लग पाता है वहीं चौकी न होने के कारण आए दिन रेल कर्मियों से यात्रियों का किसी न किसी प्रकरण को लेकर विवाद होता रहता है।जनहित में गोसाईगंज स्टेशन पर जल्द से जल्द जीआरपीध्आरपीएफ चौकी खोलना अत्यंत जरूरी है। एस एस महेंद्र नाथ मिश्रा ने बताया कि सभासद श्रीमती जायसवाल का पत्र रेलमंत्री भारत सरकार को अग्रिम कारवाई हेतु भेज दिया जाएगा।

बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कार भी दें विद्यालय : वेद गुप्ता

-धूमधाम से मनाया गया राज शिशु प्ले स्कूल का वार्षिक उत्सव

अयोध्या(एजेंसी)। अयोध्या दिल्ली दरवाजा स्थित राज शिशु प्ले स्कूल का वार्षिक उत्सव बड़े धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अयोध्या विधायक वेद प्रकाश गुप्ता ने सर्वप्रथम मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।कार्यक्रम में बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं, जिसमें नृत्य, संगीत और नाटक के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। राम राज्य की झांकी में हनुमान बने आरव कुमार ने राम नाम की धुन पर मनमोहक प्रस्तुति दी। मोबाइल के दुष्परिणामों को देखते हुए जागरूकता के लिए नैतिक कुमार, आयुष, अनमोल कुमार ने प्रस्तुति दी। विधायक वेद प्रकाश गुप्ता ने बच्चों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसी गतिविधियां बच्चों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं। उन्होंने शिक्षा के महत्व पर भी जोर देते हुए बच्चों और उनके अभिभावकों को शुभकामनाएं दीं।शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं बल्कि यह जीवन के हर पहलू को समझने और अपनाने का नाम है विद्यालय बच्चों को अच्छे शिक्षा के साथ–साथ संस्कार भी दे रहा है शिक्षकों को धन्यवाद देता हूं कि बच्चों को न केवल पढ़ाया बल्कि उनके चरित्र निर्माण में भी योगदान दिया। सरकार शिक्षा के क्षेत्र में लगातार सुधार की दिशा में काम कर रही है ताकि हर बच्चा अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सके और अपने सपनों को साकार कर सकें।कार्यक्रम के समापन पर अयोध्या विधायक ने सभी बच्चों को आशीर्वाद देते हुए उनकी उज्जवल भविष्य की कामना की। आयोजन को लेकर विद्यालय के प्रबंधक दिग्विजय गर्ग,प्रधानाचार्य संतोष गर्ग ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। इस दौरान वंशिका गुप्ता, मोहम्मद हसन, ज्योति शर्मा, ज्योति यादव आदि मौजूद रहे

संदिग्ध परिस्थितियोंमेंखलिहान मेंलगी आग 19 बीघा धान की फसल जलकर राख

ड्रमंडगंज, मीरजापुर (एजेंसी)। ड्रमंडगंज थाना क्षेत्र के मीरजापुर प्रयागराज सीमा पर स्थित प्रयागराज जिले के मड़फा कलां निवासी तीन किसानों की मड़ाई के लिए रखी 19 बीघा धान की फसल में अज्ञात कारणों से मंगलवार की रात दस बजे आग लग गई।आग की लपटे उठती देखकर किसान शोरगुल मचाते हुए खलिहान पर पहुंचे। लेकिन तब तक आग विकराल रूप धारण कर चुकी थी। सूचना पर दो घंटे बाद फायर ब्रिगेड की गाड़ी पहुंची लेकिन तब तक सबकुछ जलकर राख हो चुका था। बुधवार दोपहर तक खलिहान में आग सुलगती रही।मड़फा कलां गांव निवासी किसान सरजू प्रसाद पाण्डेय संगम लाल पांडेय व आद्या प्रसाद पाण्डेय तीनों सगे भाई हैं। क्षेत्र के महेशपुर गांव में उनकी साढ़े नौ बीघा जमीन व गांव मड़फा कलां गांव में दस बीघा जमीन है।कुल साढ़े उन्नीस बीघा धान की फसल मड़ाई के लिए मड़फा कलां और महेशपुर गांव की सीमा पर तीन जगहों पर खलिहान में रखे हुए थे जहां मंगलवार देर रात खलिहान में संदिग्ध परिस्थितियों में आग लग गई। मौके पर ग्रामीण डिब्बा बाल्टी में पानी लेकर पहुंचे लेकिन आग बुझाने में सफलता हाथ नही लगी। घटना की खबर पाकर मौके पर पहुंचे प्रधान पति बैजनाथ बिंद ने पीड़ित किसानों को शासन से हर संभव मदद दिलाने का आश्वासन दिया। वहीं बुधवार दोपहर तहसीलदार कोरांव विनोद बरनवाल ने भी घटना की जांच कर किसानों को शासन से मुआवजा दिलाने का आश्वासन दिया। तहसीलदार कोरांव विनोद बरनवाल ने एसडीएम लालगंज आशाराम वर्मा से भी किसानों को शासन से मुआवजा दिलाने के संबंध में वार्ता की।आग से करीब छह लाख रुपए की क्षति बताई जा रही है।इस संबंध में एसडीएम आशाराम वर्मा ने बताया कि आग से जलकर राख हुई धान फसल का मुआवजा किसानों को शासन दिलवाया जाएगा।

सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का आमजन को मिले लाभ : डा. प्रियंका मौर्या

–आमजन के बीच बैठकर राज्य महिला आयोग सदस्य ने की जनसुनवाई

अयोध्या(एजेंसी)। उ.प्र. राज्य महिला आयोग की सदस्य डा. प्रियंका मौर्या की उपस्थिति में सर्किट हाउस में जनसुनवाई की गयी। जनसुनवाई प्रारम्भ करने के पूर्व राज्य महिला आयोग की सदस्य द्वारा जनसुनवाई पीड़ित पक्ष के साथ बराबर में बैठकर किये जाने के लिए कहा। इसके उपरांत सर्किट हाउस सभाकक्ष में सदस्य सहित अन्य अधिकारियों की कुर्सियां आमजन के बीच लगवायी गयी। जनसुनवाई के दौरान 40 से अधिक प्रकरण प्राप्त हुये, जिसमें सभी प्रकरणों के समाधान के लिए डा. प्रियंका मौर्या द्वारा मौके पर सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। सदस्य द्वारा पीड़िता विजयलक्ष्मी के प्रकरण में विधवा पेंशन व बाल सेवा योजना के लिए सम्बंधित अधिकारी को निर्देशित किया गया, फूलराजी के प्रकरण में उनके द्वारा तत्काल बीकापुर एस०एच०ओ० से तत्काल वार्ता कर शीघ्र निस्तारण के लिए निर्देश दिये गये। पीड़िता माधुरी के शौचालय प्रकरण को गम्भीरता से लेते हुये सदस्य द्वारा थानाध्यक्ष को निर्देश दिये गये कि प्रकरण को तत्काल संज्ञान में ले और मौके पर स्वयं जाकर इसका निस्तारण करायें। विवाह सम्बंधी एक प्रकरण में सदस्य द्वारा उसके पति को 15 दिन के अन्दर बुलाकर वार्ता कर निस्तारित किया जाय और एक परिवार को बसाया जा सकें। इसी प्रकार अनेक जमीन से सम्बंधित प्रकरण आने पर उन्होंने तत्काल उपजिलाधिकारी को मौके पर बुलाया और सम्बंधित प्रकरणों को शीघ्र निस्तारण हेतु निर्देशित किया। जनसुनवाई के दौरान घरेलू हिंसा, मार–पीट, पुलिस द्वारा दुर्व्यवहार, पुलिस विभाग से सम्बंधित, कब्जे से सम्बंधित व दहेज उत्पीड़न से सम्बंधित प्राप्त हुये, जिनको सदस्य ने प्रत्येक आवेदन को बहुत ही गम्भीरता के साथ सुना गया। कई प्रकरणों में महिलाएं काफी भावुक हो गयी जिस पर सदस्य द्वारा उनको ढांढस बंधाया गया तथा कहा वे उनके साथ है और उन्हें न्याय अवश्य मिलेगा। साथ ही सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं का भी लाभ उन्हें दिलाया जायेगा। प्रेसवार्ता के दौरान राज्य महिला आयोग की सदस्य ने कहा कि जनसुनवाई के दौरान जो भी पीड़ित महिलाएं आयी है उनकी समस्याओं का तुरन्त निस्तारण करने का प्रयास किया जा रहा है। सम्बंधित विभाग के अधिकारियों से तत्काल वार्ता कर प्रकरण को निस्तारित करने के लिए निर्देशित किया गया। इसके साथ ही बहुत सारे मामलों को आपसी वार्ता से भी निस्तारित कराने का प्रयास किया जा रहा है। इसके साथ ही पीड़ित महिलाओं व उनके बच्चों के लिए सरकार द्वारा चलायी जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिलवाने के लिए सम्बंधित अधिकारियों को निर्देश दिया गया है, जिससे पीड़ित पक्ष व उनके आश्रितों को किसी प्रकार की असुविधा न हों। सदस्य द्वारा सम्बंधित अधिकारियों को त्वरित निस्तारण हेतु भी आदेश दिये गये है। उनके द्वारा कहा गया कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में महिलाओं की सुनवाई जनपद स्तर व मुख्यालय स्तर पर गम्भीरता के साथ की जाती है। यदि पीड़ित को लग रहा है कि कार्यवाही धीरे चल रही है तो उसके लिए राज्य महिला आयोग उन पीड़ित महिलाओं के साथ है और राज्य महिला आयोग उनके लिए त्वरित कार्यवाही के लिए कार्य कर रहा है। जनसुनवाई के आयोजन का मुख्य उद्देश्य पीड़ित महिलाओं की सहायता करते हुये उनको न्याय दिलाना व उत्पीड़न से बचाना है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के उत्पीड़न से सम्बंधित प्रकरणों के सुनवाई एवं निस्तारण हेतु उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग के सदस्यों द्वारा प्रत्येक जनपद में जनसुनवाई का आयोजन किया जाता है, जिसमें महिला स्वयं उपस्थित होकर अपनी शिकायतें बता सकती है। इसके उपरांत सदस्य द्वारा अभी अन्य निरीक्षण किये जा रहे है। जनसुनवाई के दौरान उपजिलाधिकारी राजकुमार पांडेय, जिला प्रोबेशन अधिकारी अश्विनी कुमार, पुलिस उपाधीक्षक योगेन्द्र कुमार, जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार द्विवेदी सहित संबंधित विभाग के अधिकारी कर्मचारी, शिकायतकर्ता व उनके परिजन उपस्थित रहे।

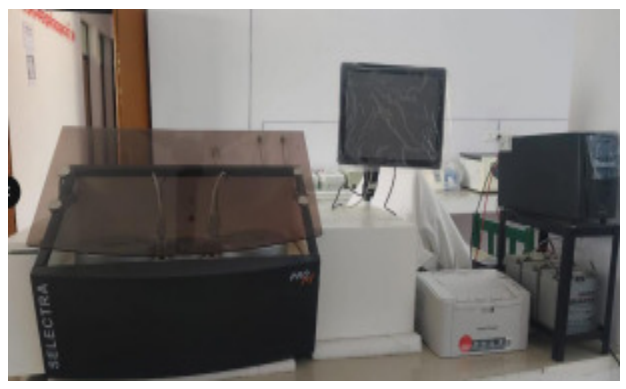

बृज किशोर होमियोपैथिक मेडिकल में होगे एक्सरे, डेंटल ओपीडी भी होगी शुरू

अयोध्या(एजेंसी)। रामनगरी के लोगों के लिए स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ी अच्छी खबर है। बृज किशोर होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज जनसेवाओं में बढ़ोतरी करने जा रहा है। यहां अब एक्सरे की सुविधा के अलावा ईसीजी जांच भी होगी। यही नहीं, अमेरिका से आक्सीजन कंसंट्रेटर भी पहुंच गए हैं। सांस के भर्ती मरीजों के लिए ये रामबाण साबित होंगे। अगर सब कुछ ठीक ठाक रहा तो नए वर्ष से सेवाओं की शुरुआत भी हो जाएगी। भव्य मंदिर में रामलला के विराजमान होने के बाद बड़ी संख्या में श्रद्धालु अयोध्या पहुंच रहे हैं। रोजाना बढ़ रही संख्या को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य को लेकर भी खासा व्यवस्था के निर्देश दिए हैं। उन्होंने अयोध्या के प्रत्येक सरकारी अस्पतालों में सुविधाएं बढ़ाने का निर्देश दिया है। इसके साथ एक मल्टीस्पेसियलिटी अस्पताल भी राम मंदिर के पास खोलने का आदेश दिया था। सीएम के आदेशों का पालन करते हुए देवकाली स्थित होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज के सुविधाओं को बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है।मेडिकल कॉलेज में अब डेंटल ओपीडी की शुरुआत होने जा रही है। इसके लिए शासन से एक डेंटल चेयर पहुंच चुकी है। इसके लिए एक ओपीडी कक्ष तैयार कराया जा रहा है। उसके तैयार होते ही ओपीडी शुरू होगी, लेकिन पेशेंट के आने पर ऑन कॉल डॉक्टर को बुलाया जाएगा।मेडिकल कालेज में ऑर्थो की ओपीडी नहीं है। ऐसे मरीजों को फिजिशियन देखते हैं। अमूमन बुजुर्ग मरीज ही यहां पहुंचते हैं। ऐसे में चिकित्सालय में आसानी से गठिया व सीने के एक्सरे भी करा सकेंगे। प्राचार्य डॉ. आशीष सिंह ने बताया कि योगी सरकार के आयुष मंत्री दयाशंकर मिश्र 'दयालु' ने एक संस्था की ओर से चार आक्सीजन कंसन्ट्रेटर दिलवाया है। भविष्य में दो और कंसन्ट्रेटर मिलेंगे। जनवरी से डिजिटल एक्सरे की सुविधा भी शुरू कर दी जाएगी।

स्वास्थ्य विभाग की उदासीनता के चलते धूल फांक रही उच्च कोटि की मशीन

सोहावल– अयोध्या(एजेंसी)।स्वास्थ्य विभाग की लापरवाही और जिम्मेदारों की उपेक्षा का नतीजा है कि आज उच्च कोटि की जांच मशीनें होने के बावजूद मरीजों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। यह पिछले कुछ महीनों से सामुदायिक स्वास्थ केंद्रों की धूल चाट रही है। मरीजों को महंगी जांच के लिए निजी पैथोलॉजी की शरण में जाना मजबूरी बन गई है जहां मनमाना शुल्क वसूला जा रहा है। सोहावल में पहले एक्सरे मशीन टेक्नीशियन की नियुक्ति थी तो मशीन नहीं थी करीब 2 वर्ष तक इंतजार के बाद मशीन आई और एक्सरे का लाभ मरीजों को मिलने लगा। अब पिछले कुछ माह पहले ही लीवर किडनी आदि से जुड़ी कई बीमारियों की जांच के लिए अधिकृत बताई जा रही तीन सामुदायिक स्वास्थ केंद्रों को सिलेक्टरा मशीन की उपलब्धता विभाग से करा दी गई लेकिन रिजेंट और टेक्नीशियन की कमी से यह 5 से 8 लाख तक की मशीनें धूल चाट रही है। पूरा बाजार, रुदौली, सोहावल तीनों सामुदायिक स्वास्थ केंद्रों की हालत एक जैसी है। जिम्मेदारों की अनदेखी के चलते मशीन के संचालन में प्रयोग होने वाले रिजेंट और टेक्नीशियन की नियुक्ति न होने से पूरी जांच प्रक्रिया बाधित है। एच जी ओ टी, कैल्शियम पोटेशियम की जांच सहित लिपिट प्रोफाइल आदि के लिए अधिकृत बताई जा रही हैं। इस मशीन की बाबत पूछे जाने पर सोहावल सीएचसी के प्रभारी डॉक्टर प्रेमचंद ने बताया जिले की तीनों सीएचसी में कुछ महीना पहले यह जांच मशीन स्थापित की गई है। लेकिन मशीन में प्रयोग किए जाने वाले रिजेंट की आपूर्ति और टेक्नीशियन की नियुक्ति न होने से संचालन में में नहीं आ पा रही है। जल्द ही जांच सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है।

कुम्भ के दौरान विन्ध्याचल में श्रद्धालुओं के लिए नवरात जैसी व्यवस्था -जिलाधिकारी

मीरजापुर (एजेंसी)। आगामी महाकुम्भ–2025 के दृष्टिगत विन्ध्याचल एवं मीरजापुर में आने वाले यात्रियों तथा कुम्भ मेला में भीड़ बढ़ने के उपरान्त जनपद मीरजापुर में भीड़ प्रबन्धन एवं सुरक्षा व्यवस्था को सुचारू ढंग से सम्पादित कराने के लिए जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन व पुलिस अधीक्षक अभिनन्दन ने एडीआरएम रेलवे प्रयागराज जोन व मुख्य विकास अधिकारी विशाल कुमार, अपर जिलाधिकारी शिव प्रताप शुक्ल सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारियों के साथ रेलवे स्टेशन विन्ध्याचल एवं रेलवे स्टेशन मीरजापुर पर भ्रमण कर कुम्भ मेला के दौरान आने वाले यात्रियों की जन सुविधाएं उपलब्ध कराने के दृष्टिगत निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने रेलवे स्टेशन मीरजापुर व विन्ध्याचल पर ट्रेनो के ठहराव, ट्रेनो के समय सारणी, देर आने वाली ट्रेनी की स्थिति, आरपीएफ एवं जीआरपी के द्वारा अतिरिक्त फोर्स एवं ड्यूटी प्वाइंट की व्यवस्था के साथ ही रेलवे स्टेशन के बाहर आटो टैक्सी स्टैण्ड, पार्किंग, रैन बसेरा एवं प्लेटफार्मो व स्टेशन के बाहर पेयजल, शौचालय, फायर बिग्रेड आदि की व्यवस्था सुनिश्चित कराने का निर्देश स्टेशन अधीक्षक एवं अधिशासी अधिकारी नगर पालिका मीरजापुर को दिया। उन्होंने कहा कि ट्रेनों के आने पर पब्लिक एड्रेस सिस्टम की पर्याप्त व्यवस्था हो इसके अतिरिक्त बुकिंग काउंटर अलग–अलग स्थलों पर बनाए जाए। प्लेटफार्मो पर यात्रियों के एक से दूसरे प्लेटफार्म पर जाने हेतु सम्पार फुटवेज की व्यवस्था को भी सुदृढ़ बनाए रखा जाए। उन्होंने कहा कि प्रयास यह रखा जाए कि अप व डाउन ट्रेन जिस रूट पर आ रहे है उसी पर रखा जाए अपरिहार्य परिस्थितियों को छोड़कर ट्रेन आने वाले प्लेटफार्म अन्यत्र न बदला जाए। उन्होंने कहा कि समस्त ड्यूटी व ड्यूटी प्वाइंट पर लगे अधिकारियों के नम्बर भी पुलिस अधीक्षक व जिला प्रशासन को उपलब्ध कराया जाए। स्टेशन पर आने जाने वाले मार्गो का सुन्दरीकरण, साइनेज बोर्ड, पर्याप्त मात्रा सीसीटीवी कैमरा भी लगाया जाए। जिलाधिकारी ने निर्देशित करते हुए कहा कि यदि प्रयागराज में भीड़ बढ़ती है तो मीरजापुर व विन्ध्याचल में ट्रेनो का ठहराव कर यात्रियों को अग्रिम सूचना तक रोका जा सकता है अतएव सभी व्यवस्थाएं समय से सुनिश्चित करा ली जाए। जीआरपी के साथ उत्तर प्रदेश पुलिस की टीम भी कंट्रोल के लिए लगाई जाएगी। इस अवसर पर नगर मजिस्ट्रेट लाल बहादुर सिंह, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका मीरजापुर गोवा लाल, स्टेशन अधीक्षक सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें। कुम्भ के दौरान विन्ध्याचल में श्रद्धालुओं के लिए रहेगी पर्याप्त व्यवस्थाआगामी कुम्भ मेला–2025 को देखते हुए जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन व पुलिस अधीक्षक अभिनंदन ने विन्ध्याचल में आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा दर्शन व सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत कलेक्ट्रेट सभागार में विभिन्न प्रमुख विभागो के अधिकारियों के साथ बैठक कर तैयारियों के रणनीति पर विचार विर्मश कर आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि कुम्भ मेला प्रयागराज–2025 में 40 करोड़ श्रद्धालुओ की आने की सम्भावना की जा रही है जिसमें से लगभग 12 प्रतिशत श्रद्धालु मीरजापुर विन्ध्याचल होकर कुम्भ मेला जाने का अनुमान है। मीरजापुर विन्ध्याचल होते हुए कुम्भ मेला जाने वाले श्रद्धालु विन्ध्याचल में भी दर्शन पूजन व स्नान के लिए रूकते है जिनकी जन सुविधाओं की तैयारियों के सम्बन्ध में सभी सम्बन्धित अधिकारी नवरात्र मेला की भांति विन्ध्याचल में तैयारियां सुनिश्चित करे। उन्होंने अधिशासी अधिकारी नगर पालिका मीरजापुर को निर्देशित करते हुए कहा कि विन्ध्याचल के प्रमुख स्थलों, स्थायी व अस्थायी रैन बसेरो के पास पर्याप्त मात्रा में पेयजल आपूर्ति, शौचालय की व्यवस्था, रैन बसेरो में यात्रियों की रूकने व ठंड से बचाव की व्यवस्था, अलाव की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित करायेंगे, इसके अतिरिक्त जिला पंचायत परिषद व नगर पालिका के द्वारा घाटो पर पर्याप्त बैरीकेटिंग, सुरक्षा व्यवस्था, लाइटिंग, अस्थायी शौचालय सुनिश्चित करायेंगे।

छात्र नेताओं की पुण्यतिथि पर किया कबंल वितरण

अयोध्या(एजेंसी)। सियाराम चौरिटेबल टस्ट द्वारा लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्र नेता विनोद त्रिपाठी तथा गौरव सिंह की 17 पुण्य तिथि पर आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन सहादतगंज हनुमानगढ़ी में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंदिर में निवास करने वाले साधू–संतों, कर्मचारियों व दिव्यांगों को कबंल वितरण किया गया।संस्था के अध्यक्ष रामानुज सिंह रामा ने बताया कि लखनऊ विश्वविद्यालय के महामंत्री रहे विनोद त्रिपाठी तथा छात्र नेता गौरव की पुण्य तिथि पर विगत 17 सालों से संस्था के द्वारा समाज कल्याण के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। मंगलवार को संस्था के प्रधान कार्यालय रामपथ सहादतगंज में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था। बुधवार को कंबल वितरण का आयोजन किया गया है। मौके पर सहादतगंज हनुमान गढ़ी के महंत त्रिलोकी दास जी महराज, छात्र नेता हेमंत सिंह, वरिष्ठ समाजसेवी रामानुज सिंह रामा, वरूण कुमार, अजीत सिंह, विवेक मिश्र, शामिल थे। इस दौरान कार्यक्रम संरक्षक बुढ़ऊ सिंह, शिविर प्रभारी शिवेन्द्र साहू, महामंत्री सुधा सिंह, बृजेन्द्र प्रताप सिंह, रवि कुमार, निखिल शर्मा, अंकित शर्मा, पंकज मिश्र, अंकित मंगल, शिवभूषण सिंह, शैलेन्द्र सिंह, कृष्ण प्रताप सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

प्रायोगिक परीक्षाओं के लिए अवध विवि ने 31 तक आनलाइन पोर्टल खोला

अयोध्या(एजेंसी)। डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय ने एन०ई०पी०–2020 के अन्तर्गत संचालित वर्ष–2025 की स्नातक प्रथम, तृतीय एवं पंचम सेमेस्टर तथा परास्नातक प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर की प्रायोगिक, सेशनल, मौखिकी, प्रोजेक्ट वर्क की परीक्षाओं से सम्बन्धित ऑनलाइन पोर्टल 31 दिसम्बर तक के लिए खोल दिया है। विश्वविद्यालय व सम्बद्ध महाविद्यालय नियमानुसार आन्तरिक व वाहय परीक्षकों को नियुक्त करते हुए प्रायोगिक, सेशनल, मौखिकी और प्रोजेक्ट वर्क की परीक्षाएं सम्पन्न करायेंगे। विवि के परीक्षा नियंत्रक उमानाथ ने बताया कि 08 दिसम्बर से स्नातक व परास्नातक विषम सेमेस्टर की प्रायोगिक, सेशनल, मौखिकी, प्रोजेक्ट वर्क की परीक्षाओं के सम्पादनार्थ आन्तरिक व वाहय परीक्षकों की परीक्षार्थियों के साथ स्पष्ट जियो टैग फोटो तथा तत्सम्बन्धी अंकों को आनलॉइन पोर्टल पर अपलोड करना होगा। इसके अतिरिक्त मूल अंकपर्ण जियो टैग फोटो के साथ अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में अनिवार्य रूप से संस्थान द्वारा जमा कराई जायेगी। समस्त प्रक्रिया सम्पन्न न कराने की स्थिति में महाविद्यालय स्वयं उत्तरदायी होंगे। मीडिया प्रभारी डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने बताया कि उक्त सूचना से समस्त विभागाध्यक्ष, समन्वयक एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यो को अवगत कराया जा चुका है।

हर्षोल्लास के साथ मनाई गई गीता जयंती

अयोध्या(एजेंसी)। डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा खेल एवं योग विज्ञान संस्थान में गीता जयंती के पावन पर्व बड़े ही उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में संस्थान के सभी आचार्यों एवं विद्यार्थियों ने अपने–अपने पाठ्य ग्रंथ श्रीमद् भागवद्गीता का वैदिक रीति से भावपूर्ण पूजन एवं दीप महायज्ञ किया। इसके साथ ही संसार में प्रत्येक व्यक्ति के अन्तरूकरण में स्वाध्यायशीलता के श्रेष्ठ गुण के साथ श्रीमद् भागवद्गीता के आदर्शों की स्थापना हो सके इसी उद्देश्य से विद्यार्थियों ने योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का नाम कीर्तन एवं श्रीमद्भगवद्गीता श्लोकों का सस्वर पाठ किया। शारीरिक शिक्षा, खेल विभाग के डॉ. अनिल मिश्रा एवं डॉ. अर्जुन सिंह ने श्रीमद्भगवतद्गीता के महात्म्य एवं विद्यार्थियों के समग्र स्वास्थ्य एवं समग्र विकास में श्रीमद्भगवद्गीता के योगदान के विषय में संबोधित किया। योग विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य अनुराग सोनी ने विद्यार्थियों को गीता के बोधगम्य एवं हितकारी तथ्यों से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन योग विज्ञान विभाग की सहायक आचार्या सुश्री गायत्री वर्मा ने किया। कार्यक्रम में समस्त विद्यार्थियों सहित शारीरिक शिक्षा खेल एवं योग विज्ञान संस्थान डॉ. अनिल मिश्रा, डॉ. कपिल राणा, डॉ. अर्जुन सिंह, डॉ. अनुराग पांडेय, डॉ. त्रिलोकी यादव, डॉ. मोहिनी पांडेय, स्वाति उपाध्याय, अनुराग सोनी, आलोक तिवारी सहित समस्त शिक्षक शिक्षिकाएं एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

बहुमत की इच्छा से आखिर क्यों नहीं चलेगा देश? कोई समझाएगा जनमानस को!

कमलेश पांडे ।

जबकि भारत की उदारवादी संसदीय नीतियों और उनकी सुप्रीम व्याख्या की अदूरदर्शिता से यहां की जनसंख्या बेतहाशा बढ़ी है, बेरोजगारी और भरण–पोषण का संकट उतपन्न हुआ है और कानून के उस शासन को भी अब कथित श्भीड़तंत्रश् के द्वारा जगह–जगह चुनौती मिल रही है।

कहते हैं कि जो राजा या शासन पद्धति जनभावनाओं को नहीं समझ पाते हैं, रणनीतिक रूप से अकस्मात गोलबंद किए हुए उग्र लोगों के द्वारा नष्ट कर दिए जाते हैं। मुगलिया सल्तनत से लेकर ब्रिटिश साम्राज्य का हश्र हमारे–आपके सामने है। वहीं, एक बार नहीं बल्कि कई दफे हुआ पारिवारिक लोकतांत्रिक सत्ता का पतन भी आप सबके सामने हैं, जबकि इसको यथावत बनाए रखने के लिए कथित धर्मनिरपेक्षता व जातिवाद की आड़ लेकर क्रमशः अल्पसंख्यक और आरक्षण जैसे पक्षपाती विचारों का भी पालन–पोषण किया गया तथा तुष्टीकरण की नीतियों तक को बेहिसाब बढ़ावा दिया गया। फिर भी हश्र सबके सामने है।वैश्विक और भारतीय परिस्थिति भी अब इस बात की चुगली कर रही है कि इन्हें शह देने वाले संविधानों व उस पर आधारित कुछ अतिवादी कानूनों का भी देर–सबेर कुछ यही हश्र होने वाला है, आज नहीं तो निश्चय कल! साथ ही उस बनावटी लोकतंत्र का भी, जो पूंजीवादी देशों की रखैल बन चुकी है, क्योंकि वे इसका मनमाफिक दुरुपयोग कर रहे हैं। ऐसे में हमारी संसद और सर्वोच्च न्यायालय दोनों को दूरदर्शिता दिखानी होगी, और पाकिस्तान–बांग्लादेश समेत अन्य इस्लामिक देशों के बदलते प्रशासनिक घटनाक्रमों से सबक लेना होगा, अन्यथा भारत को भी आतंकवादी ताकतें उसी तरह से नष्ट कर देंगी, जैसे उदाहरण इस्लामिक देशों में भरे पड़े हैं। अलबत्ता इलाहाबाद हाईकोर्ट के शहिंदूवादी जजश जस्टिस शेखर कुमार यादव के शबहुमत से चलेगा देशश जैसे स्पष्टवादी बयान को भी उपर्युक्त नसीहतों की कसौटी पर ही कसा जाना चाहिए। अन्यथा संसद और सुप्रीम कोर्ट की श्मनमर्जीश (षडयंत्रकारी धर्मनिरपेक्षताध्पंथनिरपेक्षता के संदर्भ में) भारत को भी श्अशांत इस्लामिक मुल्कश बना देगी, जो हमारे कतिपय धर्मनिरपेक्ष दलों का अघोषित सियासी एजेंडा है, जिससे समय रहते ही सावधान हो जाने की जरूरत है। यदि भारत के विद्वान न्यायाधीश, अधिवक्ता, प्रोफेसर, राजनेता, पत्रकार और बुद्धिजीवियों के समूह इस तथ्य को अब और नजरअंदाज करेंगे तो अशांत मुल्क के रूप में अगला नम्बर हमारे देश का ही होगा। जिसके ट्रेलर मोदी काल में जहां तहां विपक्ष के इशारे पर दिखाई भी दे रहे हैं।

देखा जाए तो विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के एक बौद्धिक व राष्ट्रवादी प्रोग्राम 'समान नागरिक संहितारू एक संवैधानिक अनिवार्यता' विषय पर इलाहाबाद हाईकोर्ट के शहिंदूवादी जजश जस्टिस शेखर कुमार यादव के द्वारा दिए गए शविवादित बयानश पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा संज्ञान लिया जाना उचित है, लेकिन इसकी सांगोपांग व्याख्या से पहले वह अपने पड़ोसी देशों के हश्र भी देख ले, जहां भारत को कमजोर करने वाले अमेरिकी और चीनी एजेंडे के अनुगामियों ने, उग्रपंथियों ने वहां की धर्मनिरपेक्ष सरकारों को अपदस्थ कर दिया और हिंदुओं पर नाना प्रकार के जुल्म कर रहे हैं। उनकी घटती आबादी इसका सबूत है।जबकि भारत की उदारवादी संसदीय नीतियों और उनकी सुप्रीम व्याख्या की अदूरदर्शिता से यहां की जनसंख्या बेतहाशा बढ़ी है, बेरोजगारी और भरण–पोषण का संकट उतपन्न हुआ है और कानून के उस शासन को भी अब कथित श्भीड़तंत्रश् के द्वारा जगह–जगह चुनौती मिल रही है। इस सूरतेहाल पर हमारी संसद और सुप्रीम कोर्ट की किंकर्तव्यविमूढ़ता भी जनहित के नजरिए से सवालों के घेरे में है, क्योंकि शांतिपूर्ण तरीके से जीना अब इस देश में भी मुहाल होता जा रहा है, इस्लामिक देशों की तरह। ऐसा इसलिए कि दुनिया की दूसरे सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी भारत में रहती है और इन्हें शिक्षित करने और उग्रपंथी विचारों से अलग रखने में हमारा प्रशासन बुरी तरह से विफल प्रतीत हुआ है। कश्मीर, पश्चिम बंगाल, केरल के अलावा जहां भी मुस्लिमों की ज्यादा आबादी है, वहां पुलिस प्रशासन की चुनौतियों को भी समझा जा सकता है। यह बात आज देश के हर बुद्धिजीवी को अखड़ रही है कि आखिर वोट बैंक की धर्मनिरपेक्ष राजनीति हमें किधर ले जा रही है और इसमें बदलाव के लिए क्या किया जा सकता है!

कहना न होगा कि हमारे निर्वाचित नेताओं और प्रशासनिक अधिकारियों व न्यायाधीशों की तरह ही स्पष्टवादी बुद्धिजीवियों के भी कुछ विशेषाधिकार हैं, जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से संरक्षित हैं और जनमत निर्माण में यथोचित योगदान देते आए हैं, इसलिए जस्टिस यादव के विचारों को भी हमें इसी कसौटी पर कसने की जरूरत है। क्योंकि उन्होंने अपने सम्बोधन के क्रम में ही यह साफ कर दिया था कि ये बातें वे जज की हैसियत से नहीं, बल्कि एक आम प्रबुद्ध भारतीय की हैसियत से कह रहे हैं और इस पर अडिग रहने की जरूरत है।वर्तमान में शेखर कुमार यादव इलाहाबाद हाईकोर्ट में न्यायाधीश हैं। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से 1988 में लॉ ग्रेजुएट शेखर कुमार यादव ने 1990 में वकील के रूप में अपना रजिस्ट्रेशन कराया था। उन्हें 12 दिसंबर, 2019 को इलाहाबाद हाईकोर्ट के अतिरिक्त न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया गया था। 26 मार्च, 2021 को उन्होंने स्थायी न्यायाधीश के रूप में शपथ ली थी। अपनी पदोन्नति से पहले उत्तर प्रदेश राज्य के स्थायी वकील रहे। भारत संघ के लिए अतिरिक्त स्थायी वकील रहे। यूपी की अदालतों में रेलवे के लिए स्थायी वकील का पद संभाला था। जस्टिस शेखर यादव 2026 में रिटायर होंगे। गत 1 सितंबर, 2021 को जस्टिस शेखर कुमार यादव ने कहा था कि वैज्ञानिकों का मानना है कि गाय ही एकमात्र जानवर है, जो ऑक्सीजन छोड़ती है। सबसे पहले हम आपको यह बता रहे हैं कि जस्टिस यादव ने कब और क्या कहा था, जिसको लेकर अब नैतिक और कानूनी सवाल उठाए जा रहे हैं? दरअसल, जस्टिस शेखर कुमार यादव ने कहा कि षमुझे यह कहने में कोई गुरेज नहीं है कि यह हिंदुस्तान है, यह देश हिंदुस्तान में रहने वाले श्बहुसंख्यकश् की इच्छा के मुताबिक काम करेगा। यह कानून है... आप यह नहीं कह सकते कि आप हाईकोर्ट के जज होने के नाते ऐसा कह रहे हैं। कानून बहुमत के हिसाब से काम करता है, परिवार या समाज के कामकाज को देखें, यह बहुमत ही तय करता है। परिवार या समाज में जो बात ज्यादा लोगों को मंजूर होती है, वही स्वीकार की जाती है। केवल वही स्वीकार किया जाएगा, जो बहुसंख्यकों के कल्याण और खुशी के लिए फायदेमंद हो।ष

अपने संबोधन में उन्होंने शाहबानो केस का जिक्र करते हुए कहा कि भारत अपने बहुसंख्यकों की इच्छा के अनुसार चलेगा। उन्होंने बातों ही बातों में यहां यहां तक कहा कि, षकठमुल्ला शब्द गलत है लेकिन यह कहने में परहेज नहीं है क्योंकि वो देश के लिए बुरा है। वो जनता को भड़काने वाले लोग हैं। देश आगे न बढ़े, इस प्रकार की सोचने के लोग हैं। उनसे सावधान रहने की जरूरत है।ष वहीं, मुस्लिम समुदाय का नाम लिए बिना उन्होंने कहा, षहमारे यहां बच्चा जन्म लेता है तो उसे ईश्वर की तरफ ले जाते हैं। वेद मंत्र बताते हैं, उनके यहां बच्चों के सामने बेजुबानों का बेरहमी से वध किया जाता है। फिर कैसे अपेक्षा की जाती है कि वो उदार होगा।ष कहने का तातपर्य यह कि हिंदुओं के बच्चों को हमेशा दयालु और अहिंसक होने की शिक्षा दी जाती है, लेकिन मुस्लिम समुदाय में ऐसा नहीं है।जस्टिस शेखर कुमार यादव ने यूनिफॉर्म सिविल कोड पर कहा कि षयह देश भारत है, यहां रहने वाले भारतीय हैं। देश एक है और एक संविधान है तो कानून क्यों नहीं है? देश के महापुरुषों का अनादर करने का अधिकार नहीं है। इस देश में हलाला, तीन तलाक नहीं चलने वाला है। आप चार पत्नियां रखने, हलाला करने या तीन तलाक करने का अधिकार नहीं मांग सकते। अगर आप कहते हैं कि हमारा पर्सनल लॉ इसकी अनुमति देता है, तो इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। अगर आप कहते हैं कि हमें तीन तलाक देने और महिलाओं को भरण–पोषण न देने का अधिकार है, लेकिन यह अधिकार काम नहीं करेगा। आप उस महिला का अपमान नहीं कर सकते जिसे हिंदू शास्त्रों और वेदों में देवी माना जाता है। समान नागरिक संहिता जल्द ही वास्तविकता बन जाएगी।षन्यायाधीश यादव आगे कहा कि षसमान नागरिक संहिता (यूसीसी) से समाज में सौहार्द बढ़ेगा। इसका उद्देश्य धर्मों और समुदायों पर आधारित असमान कानूनी प्रणालियों को समाप्त कर सामाजिक सद्भाव, लैंगिक समानता और धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देना है। यूसीसी ऐसी चीज नहीं है जिसका सिर्फ वीएचपी, आरएसएस या हिंदू धर्म ही समर्थन करता हो, बल्कि देश की टॉप अदालत भी इसके बारे में बात करती है।

सवाल है कि जब जस्टिस शेखर यादव ने यह स्पष्ट कर दिया था कि षमैं यह बात हाईकोर्ट के जज के तौर पर नहीं बोल रहा हूँष तो फिर उनकी बात पर सियासी व कानूनी बवंडर खड़ा करने के पीछे के निहित उद्देश्य को समझा जा सकता है। इससे धर्मनिरपेक्षता मजबूत नहीं, बल्कि कमजोर होगी। बता दें कि जस्टिस शेखर कुमार यादव ने प्रयागराज में विश्व हिंदू परिषद के एक कार्यक्रम में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) पर बोलते हुए जब यह विवादित बयान दिया था, तो इस मौके पर हाईकोर्ट के एक अन्य न्यायाधीश जस्टिस दिनेश पाठक भी मौजूद थे। वहीं, खबर है कि इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज जस्टिस शेखर कुमार यादव के द्वारा दिए गए विवादित बयान पर अब सुप्रीम कोर्ट ने संज्ञान लिया है। कोर्ट ने कहा, षमामला विचाराधीन है। हाईकोर्ट से विस्तृत जानकारी मांगी गई है।ष

अब इस पर सुप्रीम कोर्ट ने जस्टिस शेखर कुमार यादव की ओर से दी गई स्पीच की न्यूज पेपर्स में छपी रिपोर्ट पर ध्यान देकर हाईकोर्ट से डिटेल में इसका ब्योरा मांगा है।वहीं, इससे पहले कैंपेन फॉर ज्यूडीशियल अकाउंटैबिलिटी एंड रिफॉर्म्स (ब्श्र।त) ने भी चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया को चिट्ठी लिखकर इसकी शिकायत की है। इस चिट्ठी में इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज जस्टिस शेखर कुमार यादव के बयान की इन–हाउस जांच कराने की मांग की गई है। चिट्ठी में मांग की गई है कि जांच होने तक जस्टिस को सभी न्यायिक कार्यों से दूर रखा जाए। इस प्रकार जहां एक ओर एनजीओ कैंपेन फॉर ज्यूडिशियल अकाउंटेबिलिटी एंड रिफॉर्म्स, जिसके संरक्षक सेवानिवृत्त सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश पी बी सावंत हैं, ने जज के खिलाफ चीफ जस्टिस खन्ना के सामने शिकायत दर्ज कराई। इस शिकायत में जज के खिलाफ जांच और उनके न्यायिक कार्य को निलंबित करने की मांग की गई।

सम्पादकीय

कांग्रेस को पुनर्जीवित नहीं कर पा रहे हैं राहुल

इस साल की शुरुआत में विपक्षी गठबंधन श्इंडिया' की एक बैठक में जब अध्यक्ष पद के लिए बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का नाम आगे आया तो उनको राहुल गांधी ने यह कह कर रोका था कि इसके लिए तो ममता बनर्जी से बात करनी होगी। विडम्बना देखिए कि थोड़े समय के बाद नीतीश कुमार और ममता बनर्जी दोनों श्इंडिया' ब्लॉक से बाहर हो गए और अब ममता बनर्जी ही अध्यक्ष पद की दावेदार हो गई हैं! समय का चक्र इतनी तेजी से घूमा है कि कांग्रेस के नेता समझ नहीं पा रहे हैं कि वे इस स्थिति का सामना कैसे करें। महज छह महीने पहले चार जून को जब लोकसभा के नतीजे आए तो कांग्रेस और राहुल गांधी की जय जयकार हो रही थी। परंतु उसके बाद चार राज्यों के विधानसभा चुनाव ने सारी तस्वीर बदल दी। जम्मू कश्मीर, हरियाणा और महाराष्ट्र की हार ने कांग्रेस को बैकफुट पर ला दिया। भारत जोड़ो यात्रा से राहुल गांधी के विपक्ष का सर्वमान्य नेता होने की जो धारणा बनी थी वह सवालों के घेरे में आ गई है। एक के बाद एक विपक्षी पार्टियां राहुल के नेतृत्व पर सवाल उठा रही हैं।

इसमें सबसे दिलचस्प टिप्पणी समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव रामगोपाल यादव की थी। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी विपक्षी गठबंधन श्इंडिया' के नेता नहीं हैं। श्इंडिया' के नेता मल्लिकार्जुन खडगे हैं। पर सवाल है कि खडगे कब नेता चुने गए? इस साल लोकसभा चुनाव से पहले 13 जनवरी को विपक्षी गठबंधन श्इंडिया' की जो आखिरी बैठक हुई थी वह वर्चुअल थी और उसमें खडगे को अध्यक्ष बनाने पर सहमति बनी थी। लेकिन उसके बाद कभी इस बात की आधिकारिक घोषणा नहीं की गई कि खडगे विपक्षी गठबंधन के अध्यक्ष हैं। 13 जनवरी की बैठक में सिर्फ नौ पार्टियों के नेता शामिल हुए थे। समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव को खुद खडगे ने न्योता दिया था लेकिन वे उस बैठक में शामिल नहीं हुए थे। सो, जाहिर है कि खडगे अनौपचारिक रूप से भले श्इंडिया' ब्लॉक का नेतृत्व करते हों लेकिन उनको नेता कभी नहीं घोषित किया गया।

फिर सवाल है कि रामगोपाल यादव ने क्यों कहा कि राहुल नेता नहीं हैं और खडगे नेता हैं? इसलिए कहा क्योंकि चाहे समाजवादी पार्टी हो या तृणमूल कांग्रेस हो, उनको राहुल गांधी से समस्या है। यह समस्या रामगोपाल यादव की आगे कही बातों से जाहिर हो गई। उन्होंने कहा कि चाहे लोकसभा का चुनाव हो या विधानसभा का, कांग्रेस कहीं भी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रही है। उन्होंने भाजपा के साथ आमने सामने के मुकाबले में कांग्रेस की कमजोरी का खासतौर से जिक्र किया। यह भी याद रखने की बात है कि पिछले साल दिसंबर में ममता बनर्जी ने मल्लिकार्जुन खडगे का नाम प्रधानमंत्री पद के लिए प्रस्तावित किया था। तभी यह अनायास नहीं है कि आज खडगे को रामगोपाल यादव श्इंडिया' ब्लॉक का नेता बता रहे हैं।

बहरहाल, राहुल गांधी के नेतृत्व पर जो सवाल उठ रहे हैं उसके दो पहलू हैं। एक पहलू यह है कि वे कांग्रेस में जोश नहीं भर पा रहे हैं। कांग्रेस को पुनर्जीवित नहीं कर पा रहे हैं। कांग्रेस को रिइन्वेंट करके भाजपा से लडने लायक नहीं बना पा रहे हैं। वे वैचारिक और सैद्धांतिक धरातल पर तो भाजपा को टक्कर दे रहे हैं लेकिन जमीनी राजनीति और चुनाव में भाजपा का मुकाबला नहीं कर पा रहे हैं। सो, विपक्षी पार्टियां और कांग्रेस नेताओं का भी एक बड़ा हिस्सा मान रहा है कि राहुल गांधी से नहीं हो पाएगा। अपनी तमाम अच्छाइयों के बावजूद वे न तो कांग्रेस को भाजपा से लडने लायक बना सकते हैं और न उनकी कमान में विपक्षी गठबंधन भाजपा को प्रभावी रूप से टक्कर दे पाएगा। तभी विपक्षी पार्टियां चाहती हैं कि श्इंडिया' ब्लॉक बना रहे लेकिन उसकी कमान किसी और नेता के हाथ में रहे। यह बात श्इंडिया' ब्लॉक में शामिल रामगोपाल यादव भी चाहते हैं और उससे बाहर रह कर राजनीति कर रही ममता बनर्जी भी चाहती हैं। इन सभी नेताओं को पता है कि भाजपा से लडने के लिए एक बड़े गठबंधन की जरुरत है, जिसमें कांग्रेस का होना भी जरूरी है। परंतु साथ ही ये नेता यह भी चाहते हैं कि कोई ज्यादा परिपक्व और चुनावी राजनीति में भाजपा को परास्त करने वाला नेता इस गठबंधन का नेतृत्व करे।

इस सचाई को समझना होगा कि सारी विपक्षी पार्टियां सत्ता चाहती हैं और केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई से मुक्ति चाहती हैं। वह तभी होगा, जब केंद्र में उनकी सरकार बनेगी। उनको लग रहा है कि राहुल गांधी के हाथ में कांग्रेस और विपक्षी गठबंधन की कमान रही तो ऐसा नहीं हो पाएगा। राहुल के नेतृत्व पर उठ रहे सवालों का दूसरा पहलू यह है कि कई विपक्षी पार्टियां राहुल गांधी के साथ काम करने में असहज हैं। उनको लग रहा है कि राहुल व्यावहारिक राजनीति करने में सक्षम नहीं हैं। वे आदर्शवादी बातें ज्यादा करते हैं और व्यावहारिक राजनीति के दांवपेंच उन्होंने अभी तक नहीं सीखे हैं। विपक्षी पार्टियों और कांग्रेस के भी अनेक नेताओं व प्रादेशिक क्षत्रपों को राहुल गांधी की टीम के साथ काम करने में मुश्किल आती है। उनकी टीम के ज्यादातर सदस्य अराजनीतिक पृष्ठभूमि वाले हैं। राहुल गांधी ने कांग्रेस संगठन का महासचिव केसी वेणुगोपाल को बनाया है, जिनको देश के ज्यादातर राज्यों की जमीनी राजनीति की समझ नहीं है। हरियाणा और महाराष्ट्र में कांग्रेस की हार के मुख्य कारणों में एक कारण केसी वेणुगोपाल भी हैं। हालांकि इस कारण की समीक्षा कभी नहीं होगी। वे खुद को इतना असुरक्षित महसूस करते हैं कि राहुल के आसपास किसी को फटकने नहीं देते। हर समय राहुल को घेरे रहते हैं। उनकी सहमति के बगैर राहुल से मिलना या बात करना नामुमकिन सा हो गया है।

इंडिया गठबंधन की रार से कांग्रेस से ज्यादा क्षेत्रीय दलों को होगा नुकसान

कमलेश पांडे ।

बता दें कि तृणमूल कांग्रेस नेता कल्याण बनर्जी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का परिणाम आने के बाद तुरंत कहा था कि कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक को अपने अहंकार को अलग रखना चाहिए और ममता बनर्जी को विपक्षी गठबंधन के नेता के रूप में मान्यता देनी चाहिए।

कांग्रेस के नेतृत्व वाले श्इंडिया गठबंधनश में नेतृत्व के सवाल पर जो मौजूदा चिल्ल–पों मची हुई है और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के नेतृत्व पर एक बार फिर से जो सवाल उठाए जा रहे हैं, उससे न तो तृणमूल कांग्रेस नेत्री व पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का राजनीतिक भला होने वाला है और न ही उनकी सुर में सुर मिलाने वाले एनसीपी शरद पवार के शरद पवार–सुप्रिया सुले, शिवसेना यूबीटी के उद्धव ठाकरे–आदित्य ठाकरे, समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव–रामगोपाल यादव या आप पार्टी के अरविंद केजरीवाल आदि जैसे नेताओं का। हां, इससे कांग्रेस आई की उस सियासी साख को धक्का अवश्य लगेगा, जो कि बमुश्किल उसने राहुल गांधी के नेतृत्व में लोकसभा चुनाव 2024 के बाद हासिल कर पाई है। राजनीतिक मामलों के जानकारों का स्पष्ट कहना है कि कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टी के लिए हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा की हार जरूर मायने रखती है, क्योंकि यह जीती हुई बाजी हारने के जैसा है। लेकिन सिर्फ इसको लेकर ही इंडिया गठबंधन का नेतृत्व कांग्रेस से छीन लेना कोई राजनीतिक बुद्धिमानी का काम प्रतीत नहीं होता है। शायद कांग्रेस भी इसे नहीं मानेगी और किसी भी राष्ट्रीय दल को क्षेत्रीय दलों के सामने घुटने भी नहीं टेकने चाहिए, यदि सत्ता प्राप्ति के लिए संख्या बल का खेल नहीं हो तो! बीजेपी भी यही करती है और अपने गठबंधन सहयोगियों को उनकी वाजिब औकात में रखती है। तीसरे–चौथे मोर्चे की विफलता के पीछे भी तो अनुशासनहीनता या अतिशय महत्वाकांक्षा का खेल ही तो था, जिसे बहुधा राजनीतिक रोग समझा जाता है।बता दें कि तृणमूल कांग्रेस नेता कल्याण बनर्जी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का परिणाम आने के बाद तुरंत कहा था कि कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक को अपने अहंकार को अलग रखना चाहिए और ममता बनर्जी को विपक्षी गठबंधन के नेता के रूप में मान्यता देनी चाहिए। इसके बाद पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी हालिया हरियाणा और महाराष्ट्र चुनाव में इंडिया ब्लॉक के खराब प्रदर्शन पर असंतोष जाहिर किया और संकेत दिया कि अगर मौका मिला तो वह इंडिया ब्लॉक की कमान संभालने के लिए तैयार हैं।तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सुप्रीमो ने यहां तक कहा कि वह बंगाल की मुख्यमंत्री के रूप में अपनी भूमिका जारी रखते हुए भी विपक्षी मोर्चे को चलाने की दोहरी जिम्मेदारी संभाल सकती हैं। एक टीवी चौनल से बात करते हुए ममता बनर्जी ने कहा, षमैंने इंडिया ब्लॉक का गठन किया था, अब मोर्चा का नेतृत्व करने वालों पर इसका प्रबंधन करने की जिम्मेदारी है। अगर वे इसे नहीं चला सकते, तो मैं क्या कर सकती हूं? मैं सिर्फ इतना कहूंगी कि सभी को साथ लेकर चलना होगा।ष वहीं, यह पूछे जाने पर कि एक मजबूत भाजपा विरोधी ताकत के रूप में अपनी साख के बावजूद वह इंडिया ब्लॉक की कमान क्यों नहीं संभाल रही हैं? तो इस पर बनर्जी ने कहा, षअगर मौका मिला तो मैं इसके सुचारू संचालन को सुनिश्चित करूंगी।ष उन्होंने कहा, षमैं बंगाल से बाहर नहीं जाना चाहती, लेकिन मैं इसे यहीं से चला सकती हूं।षबता दें कि बीजेपी का मुकाबला करने के लिए गठित इंडिया (प्छक्प्।) ब्लॉक में दो दर्जन से अधिक विपक्षी दल शामिल हैं। हालांकि, आंतरिक मतभेदों और आपसी तालमेल की कमी की वजह से इसकी कई बार आलोचना भी होती रही है। इसी वजह से इसके प्रमुख सूत्रधार रहे जदयू नेता और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपना पाला बदल लिया और भाजपा के खेमे में चले गए। वो भी इंडिया गठबंधन के संयोजक का पद पाना चाहते थे, जो लालू प्रसाद के परोक्ष विरोध के चलते सम्भव नहीं हो पाया। ऐसे में संभव है कि ममता भी एकबार फिर से तीसरे मोर्चे को मजबूत करने की पहल करें और नीतीश की तरह ही इंडिया गठबंधन को टा–टा, बाय–बाय कर दें।उल्लेखनीय है कि ममता बनर्जी का यह बयान उनकी पार्टी सांसद कल्याण बनर्जी द्वारा कांग्रेस और अन्य इंडिया ब्लॉक सहयोगियों को लेकर दिए बयान के बाद सामने आया है। तब कल्याण बनर्जी ने कहा था कि कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक को अपने अहंकार को अलग रखना चाहिए और ममता बनर्जी को विपक्षी गठबंधन के नेता के रूप में मान्यता देनी चाहिए। आपको बता दें कि बीजेपी ने जहां महाराष्ट्र में शानदार प्रदर्शन करते हुए रिकॉर्ड संख्या में सीटें हासिल कीं तो वहीं कांग्रेस का प्रदर्शन बेहद खराब रहा। बीजेपी के नेतृत्व वाले सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन को भारी जीत मिली, जबकि इंडिया ब्लॉक ने सिर्फ झारखंड में जेएमएम के शानदार प्रदर्शन की बदौलत मजबूत वापसी की। कहने का तातपर्य यह है कि कांग्रेस ने अपनी हार का सिलसिला जारी रखा और हरियाणा के बाद महाराष्ट्र में भी अपना सबसे खराब प्रदर्शन किया और झारखंड में सत्तारूढ़ जेएमएम के जूनियर पार्टनर के रूप में सामने आई और विपक्षी ब्लॉक में इसकी भूमिका और भी कम हो गई क्योंकि अन्य सहयोगियों ने इससे बेहतर प्रदर्शन किया।वहीं, दूसरी ओर हाल ही में हुए उपचुनावों में भाजपा को हराकर टीएमसी की जीत ने पश्चिम बंगाल में पार्टी के प्रमुख को मजबूत किया है जबकि विपक्षी अभियान आरजी कर मेडिकल कॉलेज विरोध जैसे विवादों पर केंद्रित थे। सीपीआई (एम) के नेतृत्व वाले वाम मोर्चे उसके सहयोगी सीपीआई (एमएल) लिबरेशन और कांग्रेस, जो इंडिया ब्लॉक में राष्ट्रीय स्तर पर टीएमसी के सहयोगी हैं सभी को बड़ी असफलताओं का सामना करना पड़ा और उनके उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई। जबकि कांग्रेस इंडिया ब्लॉक की सबसे बड़ी पार्टी है, जिसे अक्सर गठबंधन का वास्तविक नेता माना जाता है। यही वजह है कि टीएमसी ने लगातार ममता बनर्जी को गठबंधन की बागडोर संभालने की वकालत की है।यह ठीक है कि तृणमूल कांग्रेस नेत्री ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल में लगातार भाजपा को सियासी चोट पहुंचा रही हैं और सदैव उस पर भारी प्रतीत हो रही हैं, लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं है कि वह राष्ट्रीय नेत्री बन गईं और उनका चेहरा लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के चेहरे से ज्यादा सर्वस्वीकार्य हो गया, वो भी अखिल भारतीय स्तर पर? चाहे राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) शरद पवार के प्रमुख और महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री शरद पवार हों या उनकी सियासी वारिस सांसद सुप्रिया सुले, शिवसेना यूबीटी के प्रमुख और महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे हों या उनके राजनीतिक वारिस आदित्य ठाकरे, समाजवादी पार्टी के प्रमुख और उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव हों या राज्यसभा सांसद रामगोपाल यादव या आप पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक व दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल हों या उन जैसे इंडिया गठबंधन के कोई अन्य नेतागण, किसी का चेहरा राष्ट्रीय स्तर पर उतना सर्वस्वीकार्य नहीं हो सकता है

भाजपा ने खड़ा किया सोरोस का जिन्न

Hkkरत की राजनीति में आरोपों के जिन्न खड़े किये जाते रहे हैं। इन दिनों अमेरिकी व्यवसायी जार्ज सोरोस को कांग्रेस पर हमले का आधार बनाया गया है। जार्ज सोरोज अमेरिका के व्यवसायी है जिन पर सरकारों को अस्थिर करने के आरोप लगते रहे हैं। सोरोस पर भारतीय अर्थ व्यवस्था को कमजोर करने और नरेन्द्र मोदी की सरकार को अस्थिर करने के आरोप इन दिनों चर्चा में हैं और इसके लिये कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी को कठघरे में खड़ा किया जा रहा है। जार्ज सोरोस पर कई देशों में आरोप लगे हैं। उन्हें बैंक आफ इंग्लैण्ड को दीवालिया करने में भूमिका निभाने का आरोप भी झेलना पड़ा है। यह भी कहा जाता है कि जार्ज सोरोस ने थाइलैण्ड की करेंसी को कमजोर करने का काम किया है। अब कहा जाता है कि कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी का संबंध जार्ज सोरोस फाउंडेशन द्वारा वित्त पोषित एक संगठन से है। इस संगठन ने नरेन्द्र मोदी की सरकार को बदनाम करने के लिए पैसा खर्च किया है। भाजपा ने दावा किया है कि फोरम आफ डेमोक्रेटिक लीडर्स इन एशिया पैसिफिक (एफडीएल–एपी) फाउंडेशन की सह अध्यक्ष के रूप में सोनिया गांधी जार्ज सोरोस फाउंडेशन द्वारा वित्त पोषित संगठन से जुड़ी हैं। कांग्रेस की तरफ से इन आरोपों को निराधार बताया जा रहा है लेकिन राजनीतिक गलियारे में इस मामले ने हलचल जरूर मचा दी है।

भाजपा ने आरोप लगाया है कि अमेरिका के डीप स्टेट के साथ मिलकर गांधी परिवार भारत के खिलाफ साजिश रचने में शामिल हैं। संसद में भी भाजपा ने इस मामले को उठाया और कहा कि कांग्रेस नेता सोनिया गांधी का संबंध जॉर्ज सोरोस फाउनडेशन से है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था को अस्थिर करना चाहते हैं। जॉर्ज सोरोस के मुद्दे पर संसद ठप हो गई। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी और अमेरिकी हंगेरियन बिजनेसमैन जॉर्ज सोरोस के बीच कथित साठगांठ के मसले पर बीजेपी और कांग्रेस दोनों एक दूसरे पर हमलावर हैं। इस बीच राहुल गांधी ने सांसदों की एक बैठक में कहा कि सोरोस का मामला दरअसल मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए उठाया गया है। सूत्रों ने बताया कि राहुल गांधी ने कहा कि बीजेपी इस मामले को ध्यान भटकाने के लिए इस्तेमाल कर रही है।राहुल गांधी ने कहा, संविधान दिवस पर चर्चा में सरकार की दलित ओबीसी और गरीब विरोधी मानसिकता का पर्दाफाश करना होगा। पीएम के पास हमारे सवालों का कोई जवाब नहीं है, हमको अपने मुद्दों के लिए बीजेपी से लड़ना होगा। इसी प्रकार सोनिया गांधी और बिजनेसमैन जॉर्ज सोरोस के बीच कथित संबंधों को लेकर बीजेपी ने जहां हमले तेज किए हुए हैं। वहीं कांग्रेस भी अब बीजेपी को घेरती नजर आ रही है। खासतौर से अब जब जॉर्ज सोरोस से जुड़े और उसके वित्त पोषित संगठन का इस्तेमाल भारत को अस्थिर करने के लिए किए जाने वाले आरोपों को अमेरिका ने 9 दिसम्बर को स्पष्ट तौर पर खारिज कर दिया है।

जॉर्ज सोरोस एक अमेरिकी व्यवसायी हैं, जिनका जन्म हंगरी के बुडापेस्ट में 1930 में हुआ था। सोरोस की गिनती दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों में होती है। उनका जन्म एक यहूदी परिवार में हुआ था, जो काफी समृद्ध था। सोरोस का परिवार हंगरी में नाजी कब्जे से निकलकर 1947 में ब्रिटेन आ गया। यहां उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स से पढ़ाई की। जानकारों का कहना है कि सोरोज ने अपनी पढ़ाई के लिए रेलवे पोर्टर और वेटर के तौर पर भी काम किया। इसके बाद 1956 में वो अमेरिका चले गए जहां उन्होंने वहां यूरोपिय प्रतिभूतियों के साथ एनालिस्ट के रूप में काम किया। सोरोस पर अपने धन बल का इस्तेमाल कर सरकारों को अस्थिर करने का आरोप लगता रहा है। आरोप है कि सोरोस ने 1997 में थाईलैंड की करेंसी (बाहट) पर सट्टा लगाकर उसे कमजोर करने का काम किया है। जॉर्ज सोरोस को बैंक ऑफ इंग्लैंड को बर्बाद करने वाले व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। कहा जाता है कि उन्होंने हेज फंड मैनेजर के रूप में ब्रिटिश करेंसी पाउंड को शॉर्ट कर अरबों का लाभ कमाया था। सोरोस पर भारतीय अर्थव्यवस्था को कमजोर करने के भी आरोप लगे हैं।

अब भाजपा के झारखंड से सांसद निशिकांत दुबे ने आरोप लगाया है कि गांधी परिवार के जॉर्ज सोरोस से संबंध हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी सोरोस से मिलकर अदाणी मुद्दे को उठाकर देश की अर्थव्यवस्था को बेपटरी करना चाहते हैं। ये भी आरोप है कि कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी का संबंध जॉर्ज सोरोस फाउंडेशन द्वारा वित्तपोषित एक संगठन से है, जिसने कश्मीर के एक स्वतंत्र राष्ट्र के विचार का समर्थन किया है। भाजपा ने दावा किया कि फोरम ऑफ डेमोक्रेटिक लीडर्स इन एशिया पैसिफिक (एफडीएल–एपी) फाउंडेशन की सह–अध्यक्ष के रूप में सोनिया गांधी जॉर्ज सोरोस फाउंडेशन द्वारा वित्तपोषित संगठन से जुड़ी हुई हैं।

डग्गामार वाहनों पर रहेगा पूर्णतया प्रतिबंध-रोडवेज बसों की कराएं पर्याप्त व्यवस्था-

((एजेंसी)एजेंसी)जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने बैठक में एआरटीओ को निर्देशित करते हुए कहा कि कुम्भ मेला के दौरान यह सुनिश्चित करे कि डग्गामार बसे किसी भी दशा में न चलने पाए ऐसे बस मालिको को अपनी बसो की मरम्मत कराने तथा फिटनेस प्राप्त कर ही चलाने हेतु अनुमन्य किया जाए सभी प्राइवेट व सरकारी बसों, छोटे यात्री वाहनो में यह सुनिश्तिच किया जाए कि फाग लाइट लगाना अनिवार्य होगा। उन्होंने एआरएम रोडवेज को पर्याप्त मात्रा में बस उपलब्ध कराने का निर्देश देने के साथ ही (एजेंसी) व विन्ध्याचल रोडवेज सहित अस्थायी बसों के पार्किंग, होर्डिंग एरिया पर पेयजल, शौचालय, बुकिंग काउंटर आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। कुम्भ मेला में भीड़ प्रबंधन हेतु बनाए जायेंगे अतिरिक्त पार्किंग

जिलाधिकारी ने कहा कि कुम्भ मेला में भीड़ प्रबंधन हेतु जनपद मीरजापुर में विन्ध्याचल, मेजा, प्रयागराज मार्ग पर एवं चील्ह तिराहा व गोपीगंज के मध्य कुम्भ में जाने वाली बसों, श्रद्धालुओं के रूकने हेतु अस्थायी पार्किंगध्स्टैण्ड बनाए जा रहे है प्रयागराज में भीड़ को देखते हुए श्रद्धालुओं को कुछ समय के लिए यहां रोका जा सकता है ऐसे चिन्हित स्थलों पर सम्बन्धित अधिकारी पेयजल व्यवस्था, यात्रियों रूकने हेतु रैना बसेरा, खाना, नाश्ता हेतु स्टाल, दुकानों की व्यवस्था, शौचालय, अलाव आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए ताकि रूकने वाले यात्रियों को किसी प्रकार की परेशानी न होने पाए।प्रमुख पर्वो पर विन्ध्याचल में जोनल सेक्टर मजिस्ट्रेट के साथ पर्याप्त मात्रा में सुरक्षा व्यवस्था जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने अपर जिलाधिकारी शिव प्रताप शुक्ल, एवं अपर पुलिस अधीक्षक को निर्देशित करते हुए कहा कि कुम्भ मेला में प्रमुख स्नान पर्वो, तिथियों 13, 14, 22 जनवरी 2025, 03 व 12 फरवरी 2025 तथा 26 मार्च 2025 को प्रमुख स्नान पर्व पर विन्ध्याचल में भी श्रद्धालुओं के भीड़ बढ़ने की सम्भावना को देखते हुए जोनल सेक्टर मजिस्ट्रेट तथा पुलिस अधिकारी, पुलिस बल की तैनाती की जाए ताकि श्रद्धालु सुचारू ढंग से स्नान, दर्शन कर सकें। उन्होंने अधिशासी अधिकारी नगर पालिका को निर्देशित करते हुए कहा कि नवरात्र मेला की भाति पार्किंग व्यवस्था को सक्रिय किया जाए तथा पूरे मन्दिर परिसर विन्ध्याचल क्षेत्र में साफ सफाई कर्मियों की तैनाती की जाए। बैठक में एडीआरएम रेलवे प्रयागराज, अपर पुलिस अधीक्षक नक्सल ओम प्रकाश सिंह, उप जिलाधिकारी सदर गुलाब चन्द्र, मड़िहान युगांतर त्रिपाठी, चुनार राजेश वर्मा, लालगंज आसाराम वर्मा, डिप्टी कलेक्टर भरत लाल सरोज सहित सभी विभागो के अधिकारी उपस्थित रहें।

दंगा नियंत्रण ड्रिल कर पुलिस अधिकारियों ने परखी तत्परता

मीरजापुर (एजेंसी)। जिला कभी नक्सलियों के खौफ से दहशत के साएं में रहा करता था. हालांकि वर्तमान में स्थितियां करवट ले चुकी हैं. पुलिस की चुस्त–दुरुस्त व्यवस्था और समय–समय पर चलाएं जा रहे अभियान ने हालात काफी बदल दिएं हैं. बुधवार को इसी मिर्जापुर जिले के चंदीपुर में अचानक से सैकड़ों की संख्या में पुलिस फोर्स का आना, दनादन दौड़ते पुलिस के वाहनों के काफिले ने आसपास के ग्रामीणों को हैरत में डाल दिया. कोई कह रहा था कि पुलिस बदमाशों को काउंटर करने वाली है तो कोई कह रहा था मुठभेड़ होने लगा है,जितने मुंह उतनी बातें हो रही थीं. हर कोई सशंकित आशंकित था. और जब पता चला है तो सभी आश्चर्यचकित रह गए हैं. दरअसल, मिर्जापुर पुलिस का मार्क ड्रिल चल रहा था. जनपद में शान्ति एवं कानून व्यवस्था अक्षुण्ण बनाये रखने तथा आपात परिस्थितियो के नियंत्रण के लिए पुलिस उपमहानिरीक्षक विन्ध्याचल परिक्षेत्र, मिर्जापुर व पुलिस अधीक्षक मिर्जापुर की उपस्थिति में चन्दईपुर ग्राउण्ड में जनपदीय पुलिस बल को दंगा, बल्वा नियंत्रण ड्रिल का पूर्वाभ्यास कराया गया.

बुधवार, 11 दिसंबर 2024 को पुलिस उपमहानिरीक्षक विन्ध्याचल परिक्षेत्र आरपी सिंह व पुलिस अधीक्षक अभिनंदन की उपस्थिति में चन्दईपुर ग्राउण्ड में जिले में कानून व शांति व्यवस्था के दृष्टिगत, आपात परिस्थितियों बलवाइयों, अराजतत्वों व गड़बड़ी फैलाने वालों से सख्ती से निपटने के लिए जनपदीय पुलिस द्वारा दंगा नियंत्रण, बल्वा मॉक ड्रिल कर शस्त्रों, उपकरणों की क्रियाशीलता को चेक किया गया तथा पुलिस कर्मियों को दंगों से निपटने के लिए दंगा नियंत्रण उपकरणों का पूर्वाभ्यास कराया गया, दंगा नियंत्रण, बल्वा मॉक ड्रिल के दौरान तीसरी आंख ड्रोन से सम्पूर्ण कार्यवाही पर सतर्क दृष्टि रखते हुए निगहबानी की गई. मॉक ड्रिल में पुलिस अधिकारीगण सहित निरीक्षक, उपनिरीक्षक, आरक्षी, मुख्य आरक्षी तथा महिला आरक्षियों को दंगा नियंत्रण उपकरणों का प्रयोग कराकर पूर्वाभ्यास कराया गया. इस दौरान पुलिस उपमहानिरीक्षक विन्ध्याचल परिक्षेत्र व पुलिस अधीक्षक द्वारा सम्बन्धित अधिकारी, कर्मचारीगण को आवश्यक दिशा–निर्देश दिये गये. दंगा नियंत्रण, बल्वा मॉक ड्रिल के उपरान्त पुलिस उपमहानिरीक्षक विन्ध्याचल परिक्षेत्र व पुलिस अधीक्षक द्वारा जनपदीय पुलिस बल के समस्त राजपत्रित अधिकारीगण के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया. बताया गया कि पुलिस बल सदैव सर्तक और सचेत रहें. इस दौरान पुलिस अधिकारियों ने ग्रामीणों से भी संवाद किया.

पुलिस के हत्थे चढ़े छः शातिर तस्कर

600 ग्राम स्मैक और 23 लाख 72 हजार रुपये नकद बरामद

एसपी ने प्रेसवार्ता में किया खुलासा

बाराबंकी(एजेंसी)। थाना रामसनेहीघाट के प्रभारी निरीक्षक ने स्वाट टीम और सर्विलांस टीम के साथ में संयुक्त रुप से छापा मार करके बुधवार सुबह आधा दर्जन शातिर तस्करों को 600 ग्राम अवैध स्मैक और 23 लाख 72 हजार रुपये नकद के साथ पांच मोबाइल फोन भी बरामद किये। प्रभारी निरीक्षक ने एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा पंजीकृत कर सभी तस्करों को जेल भेज दिया। पकड़े गये तस्करों में दो तस्कर जनपद बस्ती के निवासी हैं। पुलिस अधीक्षक दिनेष कुमार सिंह ने पुलिस लाइन परिसर में प्रेसवार्ता का आयोजन कर पत्रकारों को गुडवर्क की जानकारी दी। उन्होने पुलिस टीम को बधाई के साथ पुरस्कृत भी किया। जानकारी के अनुसार, बुधवार सुबह प्रभारी निरीक्षक रामसनेहीघाट ओम प्रकाष तिवारी, स्वाट टीम प्रभारी अजय सिंह और सर्विलांस टीम प्रभारी बृजेष कुमार यादव संयुक्त रुप से कोटवा सड़क कस्बे में छापा मारा और कोटवा सड़क निवासी शातिर तस्कर शुभम पाठक पुत्र स्व. सत्य प्रकाष पाठक यहीं के निवासी आषीष पुत्र रामफेर रावत, धर्मराज पुत्र अषोक, दुर्गेष रावत पुत्र बाबूलाल के साथ में जनपद बस्ती के थाना हरैया व कस्बा निवासी विनोद कुमार पुत्र जग्गी प्रसाद व यहीं के निवासी जीत बहादुर पुत्र सेवालाल को धर दबोचा। पुलिस ने इन लोगों के पास से 600 ग्राम अवैध स्मैक बरामद की। जिसकी अन्तर्राष्ट्रीय कीमत 60 लाख रुपये बतायी गयी है। तलाषी के दौरान पुलिस को 23 लाख 72 हजार रुपये नकद व 12300 रुपये के सिक्कों के साथ में पांच मोबाइल फोन भी बरामद किये। पुलिस लाइन मेंआयोजित प्रेसवार्ता के दौरान पुलिस अधीक्षक दिनेष कुमार सिंह ने बताया कि मुख्य अभियुक्त शुभम पाठक ने अपने स्व. पिता के साथ में मादक पदार्थों की तस्करी का काम शुरु किया था। शुभम के पिता थाना रामसनेहीघाट के हिस्ट्रीषीटर बदमाषों में थे उनकी मौत के बाद शुभम पाठक ने तस्करी का धंधा अपने हाथों में ले लिया था। पुलिस अधीक्षक ने आगे बताया कि शातिर तस्कर शुभम जनपद अयोध्या, अम्बेडकर नगर व थाना रामसनेहीघाट से मादक पदार्थों की तस्करी के आरोप में कई बार जेल जा चुका है। उन्होने आगे बताया कि शुभम अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर तस्करी का काम करता था और आस पास के जनपदों में मादक पदार्थों की बिक्री करता था। इतना ही नही घर पर भी मादक पदार्थ का सेवन करने वाले लोगों को फुटकर मादक पदार्थों को बेचता था। घर पर शुभम अकेले रहता था साथ ही में उसकी मां और पत्नी जनपद लखनऊ में कहीं अलग रहती है। उन्होने बताया कि तकरोही में एक मकान भी है जिसको शुभम ने किराये पर उठा रखा है। मादक पदार्थों से अर्जित पैसो से उसने एक ट्रांसपोर्ट का व्यवसाय भी कर रखा है। श्री सिंह ने आगे बताया कि शुभम उधार के रुप में स्मैक खरीदता था और बिक्री के बाद ही सारा पैसा देता था। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि बरामद रकम देने के लिए रखी थी।

पकड़े गये शातिर तस्कर शुभम के विरुद्ध थाना रामसनेहीघाट जनपद अम्बेडकर नगर के थाना जैदपुर, जनपद अयोध्या के थाना कैंट में चार मुकदमें पंजीकृत हैं। वहीं जनपद बस्ती के थाना व कस्बा हरैया निवासी विनोद पुत्र जग्गी के विरुद्ध 16 मुकदमें पंजीकृत हैं। जिसमें अधिकांष मुकदमें एनडीपीएस एक्ट से सम्बन्धित हैं वहीं कुछ मुकदमें आर्म्स एक्ट के तहत पंजीकृत हैं। वहीं कोटवा सड़क निवासी दुर्गेष रावत के विरुद्ध कोतवाली रामसनेहीघाट में कुल पांच मुकदमें पंजीकृत हैं जिसमें चार मुकदमें एनडीपीएस एक्ट के तहत सम्बन्धित हैं। हरैया निवासी जीत बहादुर के विरुद्ध भी थाना हरैया में दो मुकदमें पंजीकृत हैं।

विद्युत पोल बना मौत, बाइक सवार युवक की हुई दर्दनाक तो साथी हुआ गंभीर रूप से घायल

मीरजापुर (एजेंसी)। जिले के मिर्जापुर–घोरावल मार्ग पर जमुई गांव के पास पेड़ से टकराकर बाईक सवार युवक की दर्दनाक मौत हो गई है, जबकि उसका साथी घायल बताया जा रहा है जिसे घायलावस्था में इलाज के लिए सीएचसी मड़िहान लाया गया, जहां उसकी हालत नाजुक देखते हुए देखते ही डाक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद ट्रामा सेंटर के लिए रेफर कर दिया है. मृतक युवक की पहचान मिर्जापुर नगर निवासी आर्यन के रुप में हुई है. जानकारी के मुताबिक बुधवार की सुबह वह घर से विंध्यवासिनी इंटर कॉलेज कलवारी में मूल प्रमाण पत्र लेने के लिए जा रहे बाइक से जा रहा था कि बाइक अनियंत्रित होकर सीधे विद्युत पोल से टकरा गई जिससे मौके पर ही आर्यन की दर्दनाक मौत हो गई वहीं पीछे बैठा उसका साथी गंभीर रूप से घायल हो गया. मौके पर पहुंची मड़िहान पुलिस द्वारा घायल को इलाज के लिए ट्रामा सेंटर भेजा गया है. मिर्जापुर नगर के कटरा कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत गायत्री पुरम कॉलोनी निवासी आर्यन शर्मा घर से कलवारी स्थित मां विंध्यवासिनी इंटर कॉलेज में अपना हाईस्कूल का मूल प्रमाण पत्र लेने के लिए जा रहा था कि रास्ते में जमुई गांव के पास पहुंचा ही था कि बाइक अनियंत्रित होकर मोड़ पर सीधे जाकर विद्युत पोल से टकरा गई, जिससे बिना हेल्मेट के बाइक चला रहे आर्यन का सिर बुरी तरह से फट गया और आंखें बाहर निकल आईं. इस हादसे में बाइक के पीछे बैठा साथी भी घायल होकर अचेत हो गया था. सूचना होने पर मौके पर पहुंचे मड़िहान थानाध्यक्ष प्रदीप कुमार सिंह ने अपने निजी साधन से तत्काल दोनों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे जहां आर्यन को देखते ही डॉक्टर आनंद सिंह ने आर्यन मृत घोषित कर दिया जबकि उसके साथी का प्राथमिक इलाज करने के बाद ट्रामा सेंटर के लिए रेफर कर दिया. इस संबंध में मड़िहान थानाध्यक्ष प्रदीप सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम लिए भेजा गया है, वहीं अचेतावस्था होने के कारण दूसरे साथी का नाम पता नहीं हो पाया है.

ट्रैक्टर के चपेट में आने से युवक की घटनास्थल पर दर्दनाक मौत

मीरजापुर (एजेंसी)। अदलहाट थाना क्षेत्र के वाराणसी–शक्तिनगर मार्ग पर विशेषरपुर ग्राम के पास मंगलवार की रात ट्रैक्टर के चपेट में आने से युवक की घटनास्थल पर दर्दनाक मौत हो गई। पथरौरा(उसरापर) ग्राम निवासी 24वर्षीय अनिल यादव पुत्र राधेश्याम यादव मजदूरी कर अपने परिवार का भरण पोषण करता है। मंगलवार को एक ट्रैक्टर पर धान लादने के लिए गया था,रात में वापस लौटते समय विशेषरपुर ग्राम के पास ट्रैक्टर के नीचे गिर गया।जिससे ट्रैक्टर से दब कर उसकी घटनास्थल पर मौत हो गई। घटना के बाद चालक ट्रैक्टर लेकर फरार हो गया।घटना की सूचना मिलते ही स्वजनों में कोहराम मच गया।मृतक की पत्नी विन्दु यादव का रो रो कर बुरा हाल हो गया। मृतक को दो पुत्र एक तीन वर्ष तथा दूसरा एक माह का है। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया।

मृत बाइक चालक के पिता की तहरीर पर अज्ञात ट्रैक्टर चालक के विरुद्ध मुकदमा दर्ज

ड्रमंडगंज, मीरजापुर (एजेंसी)। ड्रमंडगंज थाना क्षेत्र के मझिगवां गांव में मंगलवार को ट्रैक्टर ट्राली से टकराकर मृत हुए बाइक चालक के पिता की तहरीर पर पुलिस ने मंगलवार की देर रात अज्ञात ट्रैक्टर चालक के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर जांच में जुट गई है।दी गई तहरीर में हलिया थाना क्षेत्र के राजपुर गांव निवासी रामराज मिश्र ने बताया कि चचरे भाई धर्मराज मिश्र के साथ बेटा प्रशांत बाइक से प्रयागराज जिले के मेजा गए थे। दोपहर में घर वापस लौटते समय जैसे ही गड़बड़ा पुल के आगे मझिगवां गांव में पहुंचे तो आगे चल रहे ट्रैक्टर चालक के लापरवाही पूर्वक ट्रैक्टर चलाने से बाइक ट्राली में टकरा गई जिससे गंभीर रूप से घायल बेटे और बड़े भाई की मौत हो गई। पुलिस ने मृत बाइक चालक के पिता की तहरीर पर अज्ञात ट्रैक्टर चालक के विरुद्ध बीएनएस की धारा 106,125 व 281 के तहत मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच में जुट गई है। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक ड्रमंडगंज अरविंद कुमार सरोज ने बताया कि मृत बाइक चालक के पिता की तहरीर पर अज्ञात ट्रैक्टर चालक के विरुद्ध विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर ट्रैक्टर चालक की तलाश की जा रही है।

दुर्घटनाओं को रोकने के लिये उठाये प्रभावी कदमः सत्येन्द्र कुमार

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित हुई जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक

बाराबंकी(एजेंसी)। कलेक्ट्रेट परिसर स्थित लोकसभागार में बुधवार को जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने जिले के टॉप ब्लैक स्पॉट के विषय में समीक्षा करते हुए दुर्घटनाओं को रोकने के लिये प्रभावी कदम उठाने के निर्देश सम्बंधित अधिकारियों को दिये। जिलाधिकारी ने कहा कि जहाँ पर यूटर्न की वजह से दुर्घटनाएं हो रही है वहाँ पर यूटर्न व्यवस्था बंद कर दी जाए। जिलाधिकारी ने बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि एनएचआई मार्ग के आस–पास बनने वाले नए स्कूलों को तभी मान्यता प्रदान की जाए जब एनएचआई द्वारा रोडसेफ्टी का अप्रूबल प्रदान कर दिया जाए। उन्होंने कहा कि किसान पथ पर दोंनो ओर रॉन्ग साइड में चलने वाले भारी वाहन दुर्घटनाओं का सबब बन रहे उनकी रोकथाम के लिये प्रभावी कदम उठाए जाए जिससे दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने पाए। हैदरगढ़ कोठी रोड पर सड़क के किनारे बड़े–बड़े गढ्ढे हो गए है जिनमें मिट्टी भरवाने के निर्देश सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों को दिए। सड़क दुर्घटना का सबब बन रहे हाइवे पर चलने वाले ई–रिक्शा को प्रतिबंधित किया जाए। शहर की ट्राफिक समस्या के दृष्टिगत लखनऊ से जाने वाली बहराइच, गोंडा, बलरामपुर और श्रीवास्ती आदि जिलों की बसों को नए बस अड्डा पर होते हुए हाइवे के रास्ते से शहर के बाहर से निकाला जाए। रोड सेफ्टी पॉलिसी के 4 ई्ष् में रोड इंजीनियरिंग से सम्बन्धित बिन्दुओं और जनपद में विभिन्न श्रेणी के मार्गो पर सकरी पुलिया के चौड़ीकरण तथा चौडीकरण का कार्य स्वीकृत न होने की दशा में सकरी पुलिया पर समुचित साइन बोर्ड, रोड मार्किंग, प्रकाश व्यवस्था लगाये जाने के निर्देश दिए। डीएम ने जनपद में मा० सुप्रीम कोर्ट कमेटी ऑन रोड सेफ्टी के निर्देशानुसार इलेक्ट्रानिक प्रवर्तन के अन्तर्गत मोटरयान अधिनियम 1988 संशोधित 2019 की धारा 136ए के प्रभावी क्रियान्वयन के तहत मार्ग स्वामित्व वाले विभागों द्वारा मार्गो पर ओवर स्पीडिंग रोकने हेतु एएनपीआर एवं स्पीड कैमरा तथा ओवर लोडिंग रोकने हेतु वे–इन–मोशन ब्रिज स्थापित किये जाने व मार्ग के किनारे इलेक्ट्रिक पोल मुख्य कैरिज–वे के अत्यंत निकट लगे होने की दशा में विद्युत विभाग द्वारा मार्ग पर सुरक्षित आवागमन हेतु निर्धारित मानक के अनुसार पटरियों के अंतिम छोर पर शिफ्ट किये जाने के निर्देश दिये। शिफ्टिंग पूर्ण होने तक दुर्घटना को रोकने हेतु अनिवार्य रूप से इलेक्ट्रिक पोल पर रिफ्लेक्टिव टेप एवं पेन्ट आदि लगाये जाने तथा मार्गों के किनारे अवैध अतिक्रमण को हटाये जाने के निर्देश दिए। विगत माहों में विभिन्न अपराधों के विरूद्ध किये गये चालानों की स्थित की समीक्षा की। जिलाधिकारी ने कहा कि रोड सेफ्टी क्लब द्वारा स्कूल कालेजों में सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता अभियान चलाया जाए। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह, अपर जिलाधिकारी इन्द्रसेन, सीओ सुमित त्रिपाठी, एआरटीओ अंकिता शुक्ला, एसीएमओ डॉ. डी. के. श्रीवास्तव, जिला पूर्ति अधिकारी राकेश तिवारी आदि सहित सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

दूसरे दिन भी प्रशासन का अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया

सीतापुर(एजेंसी)। शहर के पुराना सीतापुर इलाके में दूसरे दिन भी प्रशासन का अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया। नगर पालिका, पीडब्ल्यूडी की संयुक्त टीम ने पुलिस फोर्स की मौजूदगी में दुकानों, घरों के सामने किए गए अवैध अतिक्रमण को बुलडोजर की मदद से हटाया गया। प्रशासन की इस कार्रवाई के दौरान कई अवैध अतिक्रमणकारी पुलिस और प्रशासनिक टीम से नोंकझोंक करते हुए नजर आए। हालांकि पुलिस ने मौजूद भीड़ के पास लाठी फटकार कर लोगों को मौके से भगाते हुए को जमीनदोज कर दिया है। बुधवार को मोहल्ला कोट चौराहे से लेकर काजियारा होते हुए रेलवे स्टेशन तक सड़क के दोनों तरफ अवैध अतिक्रमणकारियों ने मकान और दुकान के सामने पक्का निर्माण कर कब्जा कर लिया था। पीडब्ल्यूडी और नगर पालिका की टीम ने अवैध कब्जे को चिह्नित करते हुए लाल निशान लगाकर तय समय में अतिक्रमण को हटाने का ऐलान किया था। इसके बावजूद समय सीमा पूरी होने के बाद बुधवार को पीडब्ल्यूडी और नगर पालिका की टीम ने पुलिस फोर्स की मौजूदगी में दो जेसीबी को चलाकर अवैध अतिक्रमण को जमीनदोज करने का काम किया है। प्रशासन के इस कार्रवाई के दौरान अपने घरों की बाउंड्रीवाल और दुकानों के सामने बने अतिक्रमण को टूटता हुआ देखकर कई अवैध आक्रमणकारी प्रशासन की टीम से नोंकझोंक करते हुए नजर आए।हालांकि पुलिस की टीम ने सैकड़ों की भीड़ के सामने लाठी फटकार कर भीड़ पर काबू पाया और जेसीबी चलाकर अवैध अतिक्रमण को जमीनदोज कर दिया। इस दौरान करीब एक दर्जन से अधिक मकान और तीन दर्जन से अधिक दुकानों के सामने अवैध अतिक्रमण को ध्वस्त किया गया। तहसीलदार विनय कुमार सिंह ने बताया कि अवैध अतिक्रमण के खिलाफ यह कार्रवाई लगातार जारी रहेगी। इस सड़क मार्ग पर पीडब्ल्यूडी विभाग के द्वारा डिवाइडर और सड़क चौड़ीकरण निर्माण कार्य का काम प्रस्तावित है। इसको लेकर अवैध अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। कोतवाल देहात की कचनार चौकी क्षेत्र की ग्राम सभा भगवानपुर के चक्कर घर में चकमार्ग पर बने अवैध घरों पर बड़ी कार्रवाई की गई है। नायब तहसीलदार अतुल सेन सिंह के नेतृत्व में यह कार्रवाई हुई है। ज्ञात हो कि 27 सितंबर को यह कब्जा हटवाने गयी राजस्व की टीम पर उपद्रवियों ने हमला कर दिया था। जिसके बाद लेखपाल राहुल तिवारी की तहरीर पर 3 दर्जन उपद्रवियों पर पुलिस ने कार्रवाई की थी। जिसके बाद बुधवार की सुबह नायब तहसीलदार अतुल सेन सिंह के नेतृव में कानूनगो अवधेश पांडेय,लेखपाल राहुल तिवारी,कोतवाल विमल गौतम भारी पुलिस बल के साथ चक्कर घर पहुंचे और अवैध बने झोपड़ी व घरों को ढहाने का कार्य किया गया। वहीं कुछ घरों को छोड़ दिया गया है। जिनको एक सप्ताह का अल्टीमेटम दिया गया है।

बिसवांसीतापुर(एजेंसी)। तहसील क्षेत्र अंतर्गत ग्राम मिटमनी में लहरपुर बिसवां संपर्क मार्ग पर विगत दिनों रातों रात मजार का पुनर्निर्माण अराजक तत्वों के द्वारा किया गया था। जिसका संज्ञान क्षेत्रीय विधायक निर्मल वर्मा के द्वारा लिया गया और शासन प्रशासन को इस घटना क्रम के बारे में बताया गया जिसका संज्ञान लेते हुए एसडीएम व बिसवां मनीष कुमार क्षेत्राधिकारी सतीश चंद्र शुक्ला तहसीलदार उमा शंकर त्रिपाठी कानूनगो देशराज वर्मा पीडब्ल्यूडी विभाग के जे ई पवन कुमार एवं दुष्यंत सिंह लेखपाल उपेंद्र यादव आर आई कौशल किशोर शुक्ला सहित अन्य अधिकारी सोमवार को मौके पर पहुंच कर रातों रात नव निर्मित बनी मजार का निरीक्षण किया। स्थानीय लोगों की आस्था को दृष्टिगत रखते हुए मार्ग के बीचों बीच मजार हेतु पास में पड़ी सिंचाई विभाग की जमीन पर स्थानांतरित करने हेतु भूमि की माप जोख की गई इसके उपरांत आपसी व विभागों की सहमति से 7.7 मीटर की जगह को सिंचाई विभाग की जमीन को चिन्हित किया गया ।

प्रत्येक अधिकारी और पटल सहायक का बनेगा डिजिटल हस्ताक्षरःअन्ना सुदन

बाराबंकी(एजेंसी)। मुख्य विकास अधिकारी अन्ना सुदन की अध्यक्षता में बुधवार को विकास भवन स्थित स्वर्ण जयंती सभागार में समस्त जनपद स्तरीय अधिकारियों की उपस्थिति में ई ऑफिस के क्रियान्वन से संबंधित समीक्षा बैठक आयोजित की गई। मुख्य विकास अधिकारी ने सभी अधिकारियों से क्रमवार ई ऑफिस के क्रियान्वयन के संबंध में प्रगति जानी और समस्त अधिकारियों को ई ऑफिस से संबंधित समस्त औपचारिकताओं को समयबद्ध रूप से पूर्ण करने के निर्देश दिए। मुख्य विकास अधिकारी ने बताया कि ई आफिस बनाने के लिए अधिकारियों औरं कर्मचारियों को कल प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि ई ऑफिस को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य कार्यालयों को पेपरलेस बनाते हुए शासकीय कार्यों को गति प्रदान करना है। प्रत्येक पत्रावली पर डिजिटल हस्ताक्षर बनाए जाएंगे। ई–मेल का प्रयोग होगा, रजिस्टर का प्रयोग नहीं किया जाएगा। इसके लिए सभी अधिकारी और पटल सहायकों का ई–मेल आइडी बनेगी। इसके बाद डिजिटल हस्ताक्षर बनाए जाएंगे, जिससे ई–आफिस का काम होगा। उन्होंने बताया कि विकास विभाग को पेपर लेस बनाने की दिशा में काम शुरू हो गया है। मुख्य विकास अधिकारी ने बताया कि सभी पटल सहायक की ई–मेल आइडी और डिजिटल हस्ताक्षर बनाए जाएंगे। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी विभाग ई–मेल आइडी विभाग से जरूर जनरेट करा लें। ई–जिला प्रबंधक धर्मेंद्र उपाध्याय ने बताया कि विभागों में अब सभी कार्य आनलाइन होंगे। जो हस्ताक्षर युक्त पत्रावलियां तैयार की जाती थीं, अब वह आनलाइन तैयार होंगी। पत्रावली हर पटल सहायक की ई–मेल आइडी से अधिकारियों तक जाएंगी। इस मौके पर जिला विकास अधिकारी भूषण कुमार, परियोजना निदेशक मनीष कुमार, डीपीआरओ नीतेश भोंडेले, बीएसए संतोष देव पांडे, उप कृषि निदेशक श्रवण कुमार, जिला कृषि अधिकारी राजित राम सहित सम्बन्धित विभाग के अधिकारी मौजूद रहे

जेई व सहायक अभियंता के निरीक्षण में शिकायत पाई गई सही,

सीतापुर(एजेंसी)। सिंचाई विभाग के नाले पर प्रापर्टी डीलरों द्वारा मंहगे प्लाट बेंचने के लालच में बिना अनुमति निजी तौर पर ह्यूम पाइप डाल मिट्टी पटाई कर दो जगह रास्ता बनाए जाने के मामले में जेई व सहायक अभियंता के निरीक्षण में शिकायत सही पाई गई। सहायक अभियंता ने जांच आख्या एसडीएम को भेजते हुए आवश्यक कार्रवाई किए जाने की बात कही है। मालूम हो कि महमूदाबाद–रेउसा मार्ग पर आनंद फीलिंग सेंटर के निकट पुलिया बनी है। इसी के पड़ोस सिंचाई विभाग का नाला निकला है। काफी लंबे समय से आसपास खेतों को खरीद प्रापर्टी डीलर प्लाटिंग का कार्य कर रहे हैं। यहां एक गेस्ट हाउस बनाने का काम किया जा रहा है। प्लाटिंग को मुख्य मार्ग से जोड़ने के लिए प्रापर्टी डीलरों द्वारा सिंचाई विभाग के नाले में रामपुर मथुरा मार्ग पर पुलिया के पास एक तथा उससे दो मीटर आगे एक और पुलिया अवैध तरीके से ह्यूम पाइप डालकर मिट्टी का पटान कर रास्ता बना दिया गया है। जेई सिंचाई वीरेंद्र सिंह ने मौके पर पहुंच पड़ताल की और रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को भेजते हुए बताया कि इमलिया तिलकापुर ड्रेन के किमी 4.800 पर अज्ञात लोगो नेह्यूम पाइप डालकर अवैध तरीके से पुलिया बना नाले को प्रवाह को अवरुद्ध करने का काम किया है, जिससे बारिश के दौरान नगर में जलभराव की सिथति उत्पन्न हो सकती है। जेई की रिपोर्ट के बाद सहायक अभियंता चतुर्थ सतोश चंद्र गौरव ने एसडीएम महमूदाबाद व कोतवाली पुलिस को पत्र भेजकर प्रभावी कार्रवाई की बात कही गई है। एसडीएम शिखा शुक्ला ने बताया कि सिंचाई विभाग के अधिकारियों संग बैठक कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

दिव्यांग फरियादी को एसडीएम ने किराए के पैसे तथा जूते-मोजे मंगवाकर दिये

सीतापुर(एजेंसी)। एसडीएम शिखा शुक्ल ने नंगे पैर आए दिव्यांग फरियादी को किराए के पैसे देने के साथ तत्काल जूता–मोजा खरीदकर दिया। एसडीएम की दरियादिली की मौजूद अन्य लोगों ने प्रसंसा की। महमूदाबाद के गुलरामऊ के पैरों से दिव्यांग देशराज सरकार द्वारा मिली ट्राई साइकिल की बैट्री खराब होने की समस्या लेकर बुधवार को एसडीएम कार्यालय महमूदाबाद आए थे।

छोटी बातों पर अपने आपको न ठहरायें दोषीः डा. संतोष सिंह

सिरौलीगौसपुर बाराबंकी(एजेंसी)। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिरौलीगौसपुर परिसर में राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत विशाल मानसिक स्वास्थ्य शिविर कार्यक्रम का आयोजन सीएचसी अधीक्षक डॉ सन्तोष सिंह के नेतृव में किया गया। जिसमे मनोचिकित्सक डॉ नितिन शुक्ला आदि डॉक्टरों ने इस शिविर में 118 मरीजो को स्वास्थ्य की जांच और परामर्श दिया गया। वही 63 मानसिक रोग से पीड़ित को उपचारित किया गया। सीएचसी अधीक्षक डॉ सन्तोष सिंह ने कहा कि शिविर का आयोजन समय समय पर सीएचसी अस्पताल परिसर में किया जाता है। इसमें लोगो की स्वास्थ्य की जांच कर दवा का वितरण किया जाता। शिविर का उद्‌घाटन फीता काटकर सीएचसी अधीक्षक डॉ. डॉ सन्तोष सिंह ने किया। बुधवार को राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिरौली गौसपुर परिसर में किया गया जिसमें सीएचसी अधीक्षक डॉक्टर संतोष सिंह ने बताया ऐसे लक्षणों के प्रतीत होने पर मानसिक समस्या हो सकता है। जैसे नींद न आना य अत्यधिक नींद आना बीच–बीच में नींद का टूटना। तनाव उलझन घबराहट बेचौनी चिड़चिड़ापन एवं किसी चीज के बारे में जरूरत से ज्यादा चिंतित रहना। जीवन के प्रति निराशा रहना एवं आत्महत्या का विचार आना। आत्मविष्वास की कमी महसूस करना तथा ध्यान न लगना। छोटी–छोटी बातों में अपने आप को दोषी ठहरना। भूत प्रेत देवी देवता जिन्न आदि की छाया का भ्रम होना। सहित कई बिंदुओं पर उन्होंने लोगों को जागरूक किया उन्होंने बताया कि इस प्रकार के किसी भी लक्षण से ग्रेसित व्यक्ति को मानसिक रोग की समस्या हो सकती है। इन्हें छुपाए नहीं अपितु इसका इलाज कराए पूर्ण इलाज से इन सभी बीमारियों से ठीक हुआ जा सकता है। प्रत्येक माह के चतुर्थ बृहस्पतिवार को सिरौलीगौसपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परामर्श लें। मानसिक रोग के नैदानिक मनोवैज्ञानिक विनोद कुमार पाल, प्रशान्त दीक्षित अहमद अब्बास, डाक्टर देवेन्द्र सिंह चन्द्रेश वर्मा शैलेश कुमार रावत आदि मौजूद रहे।

मारपीट गालीगलौज व धमकी को लेकर सात पर केस दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। मारपीट व गालीगलौज तथा धमकी को लेकर पुलिस ने सात आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के बछवल गांव निवासी संतलाल सरोज पुत्र रामसजीवन सरोज ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि तीस नवंबर की रात करीब ग्यारह बजे वह गांव में चल रहे आर्केस्ट्रा प्रोग्राम से घर वापस लौट रहा था। आरोप है कि रास्ते मे गांव के ही अजय, दीपक व विजय पुत्रगण धुन्नीलाल सरोज व बबलू सरोज पुत्र रामनरेश सरोज तथा तीन अज्ञात लोग उसके पास पहुंचे और गालीगलौज करने लगे। पीडित के विरोध करने पर आरोपियों ने उसे जमकर मारापीटा व घर फूंक देने व जान से मार डालने की धमकी भी दी। कोतवाल नीरज यादव का कहना है कि जांच के बाद सात आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

बाइक चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का केस

लालगंज, प्रतापगढ़। बाइक की टक्कर से घायल की इलाज के दौरान मौत हो गयी। घटना को लेकर मृतक की पत्नी की तहरीर पर पुलिस ने चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज किया है। अन्तू थाना क्षेत्र के भटठी बाजार पूरे रामदेव गांव की नीलम दुबे ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि तीस अक्टूबर की रात करीब साढ़े सात बजे उसके पति शिवशंकर दुबे लालगंज स्थित अपने ननिहाल से बाइक द्वारा घर लौट रहे थे। पीड़िता का आरोप है कि लालगंज के नया का पुरवा के पास शराब के नशे में धुत एक बाइक से आ रहे विनय कुमार पाण्डेय तथा पवन शुक्ल व एक अज्ञात ने उसके पति की बाइक में जोरदार टक्कर मार दिया। जिससे पीडिता के पति शिवशंकर दुबे गंभीर रूप से घायल हो गये। इलाज के दौरान स्वरूपरानी अस्पताल प्रयागराज में आठ नवंबर को शिवशंकर की मौत हो गयी। कोतवाल नीरज यादव का कहना है कि तहरीर के आधार पर बाइक चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज किया है।

एम्बुलेंस को रास्ता दें अभियान के तहत गोष्ठी आयोजित

सुल्तानपुर(एजेंसी) ५ राजकीय इंटर कॉलेज में कटका क्लब सामाजिक संस्था के द्वारा एंबुलेंस को रास्ता दें अभियान के तहत गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ० मनोज कुमार तिवारी ने किया।मुख्य वक्ता के रूप में अनिल सिंह ने कहा कि एंबुलेंस में जब कोई मरीज होता है तो उसे जल्द से जल्द अस्पताल लेकर जाना होता है जिसके लिए एंबुलेंस तेज भी चलती है और लोग उसे रास्ता भी देना चाहिए। इस मौके पर उपस्थित राज्य अध्यापक से सम्मानित केशव सिंह ने बताया कि अगर आप सड़क पर अपना वाहन लेकर चल रहे हैं और आपको दिखता है कि कोई एंबुलेंस सायरन देकर आ रही है, तो आपको उसे रास्ता देना चाहिए। इस मौके पर संस्था अध्यक्ष सौरभ मिश्र विनम्र ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा निर्दिष्ठ इमरजेंसी गाड़ियों का रास्ता बाधित करने पर लागू होता है। इसलिए अगर कभी भी एंबुलेंस सायरन बजाते हुए दिखे तो उसे रास्ता दें। न देने वाले लोगों के खिलाफ नियमों के तहत कार्रवाई हो सकती है।विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉक्टर मनोज कुमार तिवारी ने आए अतिथियों के आभार व्यक्त किया और संस्था के अभियान कि घोर प्रशंसा कि और कहा मानवता के हित में है।इस अवसर पर राम जी विश्वकर्मा, राय साहब सिंह, डॉक्टर पंकज सिंह, अमरनाथ यादव , अच्छे लाल , दिवाकर चौधरी, आदि शिक्षक गण मौजूद रहे।

नेत्र सर्जन ने सफल आपरेशन कर किया पलकों का सृजन

सुलतानपुर(एजेंसी) ५ दूबेपुर ब्लॉक के निवासी रितुराज को एक सड़क हादसे में बाईं आँख तथा सर पर काफी चोट आई जिससे उनकी आँखों के ऊपर तथा नीचे की पलकें तथा पलकोके ऊपर कि खाल भी फट गई थी स्वशासी राजकीय मेडिकल कालेज सुलतानपुर में कार्यरत नेत्र सर्जन डा० शिवप्रिया गुप्ता ने इस युवक की आँख का सफल आपरेशन कर उसकी पलकों का पुनरू सृजन किया ।

डॉक्टर शिवप्रिया गुप्ता ने बताया कि रितु के नीचे की पलक बीच में से कट कर अलग हो गई थी, तथा पलक का थोड़ा सा माँस भी कट कर गायब था पलक का नए सिरे से सृजन करना काफी कठिन था इस आपरेशन में करीब डेढ़ से दो घंटे का समय लग गया आपरेशन सफल रहा और पलको का नवसृजन हो गया आपरेशन के पश्चात प्रशंसापूर्ण परिणाम रहा जैसा कि तस्वीरों में देखा जा सकता है स

जनपद स्तरीय कार्यशाला में एड्स से बचाव के लिए किए जा रहे कार्यो पर की गई चर्चा

कुशीनगर, 12 दिसम्बर (आरएनएस)। मेन स्ट्रीमिंग कार्यक्रम के तहत उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियत्रण सोसाइटी के सहयोग से विकास भवन सभागार में मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में जनपद स्तरीय अधिकारियों का एचआईवी व एड्स संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया।इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी द्वारा जनपद में एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों के साथ बिना भेदभाव व्यवहार एवं सरकारी योजनाओं का लाभ नियमानुसार देने का निर्देश दिया गया। उन्होंने कहा कि एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों के शिकायत पर एचआईवी एड्स एक्ट के तहत दोषियों पर कार्यवाही की जाएगी। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा एचआईवी व एड्स पर जनपद की सेवाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दिया गया। मुख्य चिकित्सा अधीक्षक ने जिला चिकित्सालय संबंध मेडिकल कालेज में स्थित एआर टी सेंटर पर 3200 मरीजों को निशुल्क दवा एवं जांच की सुविधा दी जा रही है। जिला क्षय रोग अधिकारी ने एचआईवी व एड्स जागरूकता हेतु चार की बात के तहत जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में तथा स्कूल कॉलेजों में स्वास्थ्य शिविर जागरूकता और नुक्कड़ नाटक के माध्यम से प्रचार प्रसार समय–समय पर किया जाता है।

जागरूकता गोष्ठी में बेटियों को नारी सम्मान व दहेज कानून की दी गई जानकारी

कुशीनगर, 12 दिसम्बर (आरएनएस)। शासन की तरफ से नारी सुरक्षा को लेकर चलाए जा रहे मिशन शक्ति अभियान के तहत नेहरु इंटरमीडियट कालेज मंसाछापर में जागरूकता गोष्ठी का आयोजन कर नारी सम्मान व दहेज कानून की जानकारी दी गई। गुरुवार को मिशन शक्ति के तहत थानाध्यक्ष जटहा बाजार मनोज कुमार वर्मा ने बेटियों को सुरक्षा की जानकारी दिया तथा बेटियों को प्रशिक्षित कर बचाव के तरीके भी बताए। इस दौरान कक्षा 11 व 12 वीं के छात्र व छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि बेटियां आज किसी भी क्षेत्र में कमजोर नहीं हैं। आवश्यकता है आत्मबल को मजबूत कर लक्ष्य को साधने की। कालेज या कोचिग आते–जाते समय अगर कोई पीछा करे या संदिग्ध हरकत करे तो इसकी सूचना तत्काल 1090 या 112 नंबर पर दें। बेटियों की सुरक्षा को लेकर पुलिस दिन–रात सक्रिय है। उन्होंने छात्राओं को आत्म सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया। इस समय अभियान के तहत पुलिस स्कूल, कालेज व मोहल्लों में पहुंच बेटियों को सुरक्षा की जानकारी दी जा रही है।

भगवाधारी साधुओं को पीटने वालों पर हों कड़ी कार्रवाई

लंभुआध्सुलतानपुर(एजेंसी)। शनिवार को समीप के चाचपारा गांव में भगवाधारी साधुओं को पीटने वाले जल्द ही मुसीबत में फंस सकते हैं। बच्चाचोर के भ्रम में अराजक तत्वों ने पुलिस वाहन से उतार कर पीटा था। इसका वीडियो भी प्रसारित हुआ है। पूर्व प्रधान पति ने मुख्यमंत्री से प्रकरण में हस्तक्षेप की गोहार लगाई है दरअसल, शनिवार को चाचपारा गांव में कार सवार भगवाधारी साधुओं की कुछ लोगों ने बच्चाचोर का भ्रम फैलाकर पिटाई कर दी थी। लाठी – डंडे से लैस अराजकतत्वों ने बेखौफ होकर पुलिस वाहन में बैठे तीन साधुओं को खींच लिया था और जमकर मारापीटा था। इतना ही नहीं, महाकुंभ में शामिल होने जा रहे साधुओं के वाहन में भी तोड़फोड़ की गई थी। पुलिस की मौजूदगी में इस अप्रत्याशित वारदात के बाद ग्रामीणों ने कोतवाली पहुँच कर उनके बच्चाचोर होने और बच्चों के अगवा करने के प्रयास का मुकदमा दर्ज कराया था। हालांकि, कोतवाली पहुँचे बच्चों के बयान भी भिन्न – भिन्न पाए गए थे। पुलिस जांच में बच्चा चोरी के प्रयास की पुष्टि नहीं हुई थी। साथ ही उनके पास से बरामद आधार कार्ड भी सत्यापित कराए गए।

अब जखनी कला के पूर्व प्रधान पति विजय शंकर दूबे ने आईजीआरएस के जरिये प्रकरण की शिकायत की है। उन्होंने आरोप लगाया है कि अराजकतत्वों ने जानबूझकर इस कृत्य को अंजाम दिया है। इसकी विधिवत जांच कराकर मामले में दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। प्रभारी निरीक्षक अखण्डदेव मिश्र ने बताया कि उन्हें कोई तहरीर नहीं मिली है। यदि शिकायत मिली तो जांच कराई जाएगी। साथ ही विधिक कार्रवाई की जाएगी।

कुशीनगर पुलिस ने विदेश भेजने के नाम पर धोखाधड़ी करने वाले 3 शातिर अभियुक्तें गिरफ्तार कर भेजा जेल

कुशीनगर, 12 दिसम्बर (आरएनएस)। जनपद के तरयासुजान, स्वाट व साइबर सेल की संयुक्त पुलिस टीम ने धोखाधड़ी कर साइबर क्राईम करवाने हेतु लाओस, कम्बोडिया जैसे देश में भेजने वाले गैंग का खुलासा कर 03 अभियुक्तों को मय 26 अदद फर्जी मुहरे कूटरचित सरकारी गैर सरकारी व रूपया 2155ध्– नकद, पीड़ितों के अवैध तरीके से रखे 08 अदद पासपोर्ट भिन्न–भिन्न नामों से व अपराध में प्रयुक्त दो अदद लैपटाप, एक अदद कीबोर्ड, एक अदद चार्जर, 01 अदद आधार कार्ड व 05 अदद एटीएम कार्ड व कुल 72 अदद प्रपत्र व अपराध में प्रर्युक्त 03 अदद मोबाइल भिन्न भिन्न कम्पनियों के साथ गिरफ्तार किया गया है।पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्र के निर्देशन में जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुध्द चलाये जा रहे अभियान के क्रम में तरयासुजान पुलिस टीम ने विदेश भेजने के नाम पर भोले भाले लोगों को झांसे में लेकर ठगी व धोखा करने वाले 03 अभियुक्तों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। बीते 07.10.2024 को आवेदक नन्दन पाण्डेय पुत्र भृगुनाथ पाण्डेय सा0 सलेमगढ़ थाना तरया सुजान जनपद कुशीनगर के द्वारा प्रार्थना पत्र दिया गया कि अभिषेक कुमार पाण्डेय पुत्र नगनरायण पाण्डेय निवासी तरया कारी शाही थाना तरयासुजान जनपद कुशीनगर व उनके साथियों द्वारा आवेदक को विदेश भेजने के नाम पर रुपये लेकर ठगी व धोखा किया किया गया है। इस सूचना पर घटना का संज्ञान लेते हुए तरया सुजान थाने पर मु0अ0सं0 430ध्2024ध्धारा 420ध्504ध्506ध्370(1)पअ(2)ध्468 भा0द0वि0 का अभियोग पंजीकृत कराते हुए पुलिस अधीक्षक कुशीनगर द्वारा घटना के शीघ्र अनावरण करते हुए अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु अपर पुलिस अधीक्षक कुशीनगर के नेतृत्व में टीमें गठित कर निर्देश दिये गये थे। जिसके क्रम में आज 12 दिसम्बर 2024 को थाना तरयासुजान, स्वाट व साइबर थाना की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा थाना क्षेत्र तरया सुजान से विदेश भेजने के नाम पर ठगी करने वाले नामजद व वांछित अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिसिया

पूछ–ताछ में अभियुक्तों द्वारा बताया गया कि ये लोग धोखाधड़ी कर साइबर क्राइम करवाने हेतु भोले–भाले लोगों को झांसे में लेकर लाओस, कम्बोडिया जैसे देशों में भेजते हैं। वहां पर किसी बड़ी विल्डिंग के एक कमरे में बंद कर साइबर क्राइम करने हेतु विवश करते हैं तथा मना करने पर प्रताड़ित करते हैं। गिरफ्तार अभियुक्तो मेंअभिषेक पाण्डेय पुत्र नगरायण पाण्डेय सा0 तरया कारी शाही थाना तरया सुजान जनपद कुशीनगर, राहुल राय पुत्र हरिकेश राय सा0 बंजारी थाना गोपालगंज जि0 गोपालगंज बिहार, चुसमन शाह पुत्र दिनानाथ शाह सा0 कपरपुर थाना उचकागांव जनपद गोपालगंज बिहार शामिल है। पुलिस टीम ने गिरफ्तार अभियुक्तो को जेल भेज दिया है।

डीएम ने अभियोजन ई- प्रासिक्यूशन पोर्टल की समीक्षा में लम्बित मुकदमो की पैरवी की ली जानकारी

कुशीनगर, 12 दिसम्बर (आरएनएस)। जिला मुख्यालय स्थित कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी विशाल भारद्वाज की अध्यक्षता में अभियोजन, ई–प्रॉसिक्यूशन पोर्टल पर की गई फीडिंग कार्यों से संबंधित समीक्षा बैठक संपन्न की गई। बैठक में विगत माह के अंतर्गत विभिन्न न्यायालयों में निस्तारित होने वाले एक एक मामलों की समीक्षा की गई तथा खराब प्रगति वाले अधिवक्ताओं को अपेक्षित सुधार लाये जाने सहित शासन द्वारा दिये गए निर्देश के क्रम में तीव्र गति से लंबित पत्रावलियों में पैरवी करने के निर्देश दिए गए। इसके अतिरिक्त महिलाओं से संबंधित अपराध, गैंगस्टर सहित संवेदनशील मामलों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर कराए जाने हेतु निर्देशित किया गया। समीक्षा के दौरान विगत माह में कुल विभिन्न अधिनियमों के अंतर्गत 376 मामलों में निर्णय लिया गया। 330 को सजा दिलाई गई। 15 को रिहा किया गया। लंबित मामलों के संदर्भ में बताया गया कि अधीनस्थ न्यायालय अंतर्गत भादवि के 32142 मामले, अन्य अधिनियम के 14074 मामले। इसी प्रकार सत्र न्यायालय अभियोजन, सत्र न्यायालय डी0जी0सी0, ए0डी0जी0 के कुल लंबित मामलों की जानकारी दी गई। ई–प्रॉसिक्यूशन की फीडिंग अभियोजक वार बताई गई। जिसके अंतर्गत माह नवंबर के अंत तक कुल 2760 मामले पोर्टल पर फीड किए जाने की जानकारी जे0डी0 द्वारा दी गई। इसके अतिरिक्त आर्म्स एक्ट, गैंगस्टर एक्ट, पी0एफ0 एक्ट, ई0 सी0 एक्ट के अंतर्गत अद्यतन स्थिति से अवगत कराया गया तथा गवाहों के संदर्भ में भी जानकारी ली गई। जिलाधिकारी ने समीक्षा के दौरान दिनांक 14 दिसंबर को आयोजित होने वाले लोक अदालत की तैयारियों के संबंध में भी पुछताछ कर अधिक से अधिक मामलों में पैरवी कर निस्तारण कराए जाने का निर्देश सभी संबंधित को दिया। इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक रितेश कुमार सिंह, जे0ध्डी0 वेद प्रकाश उमराव, जगदीश प्रसाद आर्य ज्येष्ठ अभियोजन अधिकारी, धर्मनाथ बिंद अभियोजन अधिकारी सहित सभी सहायक अभियोजन अधिकारी, ए0 डी0 जी0 सी0 के साथ विशेष लोक अभियोजक व अन्य सम्बन्धित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

कुश्ती में वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कालेज के पहलवानों का रहा दबदबा

कुशीनगर, । कुशीनगर महोत्सव के क्रम में उत्तर प्रदेश खेल निदेशालय द्वारा आयोजित फतेह मेमोरियल इंटर कालेज तमकुहीराज के खेल मैदान में तीन दिन तक चले कुश्ती प्रतियोगिता में प्रदेश के दस टीमों के पहलवानों ने भाग लिया। जिसमें विभिन्न भार वर्ग में बेहतर प्रदर्शन करने वाले 36 पहलवानों को जिला खेल विभाग कुशीनगर द्वारा पुरस्कृत किया गया। कुश्ती में वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कालेज के पहलवानों का दबदबा रहा।जिला खेल विभाग द्वारा जारी कुश्ती परिणाम के क्रम में 57 किग्रा, भार वर्ग में प्रथम अंगद यादव स्पोर्ट्स गोरखपुर, द्वितीय यशपाल गोण्डा, तृतीय प्रिंस चंदौली व चतुर्थ सोनू पटेल देवरिया रहे। 61 किग्रा. भार वर्ष में प्रथम मोहित कुमार स्पोर्ट्स गोरखपुर, द्वितीय हरि ओम आजमगढ़, तृतीय अभय गोविन्द राय कुशीनगर व चतुर्थ शिवानन्द रहे। 65 किग्रा. प्रथम मंगेश स्पोर्ट्स गोरखपुर, द्वितीय अंगद यादव प्रतापगढ़, तृतीय अनुराग वाराणसी व चतुर्थ मुकेश कुशीनगर रहे। 70 किग्रा. प्रथम सुजीत पटेल गोण्डा, द्वितीय अर्जुन कुशीनगर, तृतीय कौशल चंदौली व चतुर्थ पवन स्पोर्ट्स गोरखपुर रहे। 74 किग्रा. प्रथम निकेश यादव स्पोर्ट्स गोरखपुर, द्वितीय अनिल यादव प्रतापगढ़, तृतीय विशेष चंदौली व चतुर्थ शिवम यादव वाराणसी रहे। 79 किग्रा. प्रथम अब्दुल रहीम प्रतापगढ़, द्वितीय अंश यादव गोरखपुर, तृतीय विशाल चंदौली व अभिषेक देवरिया चतुर्थ स्थान पर रहे। 86 किग्रा. प्रथम शिव कुमार गोण्डा, द्वितीय मयंक चंदौली, तृतीय विशाल प्रतापगढ़ व सुधीर संतकबीरनगर चतुर्थ स्थान पर रहे। 92 किग्रा. प्रथम शाश्वत यादव स्पोर्ट्स गोरखपुर, द्वितीय अभिनव चंदौली, तृतीय अवधेश यादव कुशीनगर व विराज सिंह देवरिया चतुर्थ स्थान पर रहे। 92 प्लस किग्रा. प्रथम शुभम यादव संत कबीर नगर, द्वितीय आदेश यादव चंदौली, तृतीय शैलेश यादव कुशीनगर व शुभम शाही चतुर्थ स्थान पर रहे। कुश्ती के फाइनल मैच के विजेता प्रतिभागी पहलवानों को कुशीनगर खेल विभाग द्वारा मेडल व पुरस्कार देखकर सम्मानित किया गया।

परतापुर पुलिस का सिर दर्द बना चोरों का गैंग गिरफ्तार, लाखों की ज्वैलरी और कैश बरामद

मेरठ(एजेंसी)। पिछले लगभग दो महीने से परतापुर पुलिस के लिए सिर दर्द और इलाके की जनता के लिए आतंक का पर्याय बना चोरों का गैंग आखिरकार पुलिस के हाथ चढ़ गया। पुलिस ने गैंग के सरगना सहित पांच बदमाशों को गिरफ्तार करते हुए उनके कब्जे से लाखों की ज्वैलरी और कैश बरामद किया है।एसपी सिटी आयुष विक्रम सिंह ने पुलिस लाइन में पत्रकार वार्ता करते हुए बताया कि लगभग दो महीने पहले रिठानी थाना क्षेत्र में पुलिस चौकी के पास ही बदमाशों ने एक के बाद एक चोरी की तीन वारदातों को ताबड़तोड़ अंजाम दिया। घटनाओं के खुलासे के लिए थाना पुलिस और सर्विलॉन्स की टीम ने डेढ़ महीने तक अथक मेहनत की। सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालते हुए मुखबिरों की मदद से पुलिस ने आरोपियों की पहचान की। इसके बाद बुधवार को कंचनपुर घोपला रोड से पांच बदमाशों को गिरफ्तार किया गया। आरोपियों ने अपने नाम भूरे पुत्र मलवा, गोपाल पुत्र समर निवासीगण शिवपुरम, अमित जाटव उर्फ मोटा, शोभित उर्फ योगेंद्र निवासीगण मोहकमपुर और सचिन पुत्र वेद प्रकाश निवासी रेलवे रोड बताएं।आरोपियों से तीनों घरों से चुराई गई सोने–चांदी की लाखों की ज्वेलरी, 1.96 लाख कैश, तमंचा–कारतूस और चोरी में प्रयुक्त एक बाइक बरामद की गई। पूछताछ के दौरान बदमाशों ने बताया कि गैंग का सरगना गोपाल चोरी के लिए मकान तलाश करता था। गैंग के अन्य सदस्य मकान की रेकी करने के बाद जब घर में कोई नहीं होता था तो चोरी की वारदात को अंजाम देते थे। एसपी सिटी के मुताबिक पकड़े गए बदमाशों का अच्छा खासा आपराधिक इतिहास है।इनमें गोपाल पर 10, भूरा पर सात और अन्य तीनों बदमाशों पर तीन–तीन मुकदमे दर्ज हैं। उन्होंने बताया कि बदमाशों की प्लानिंग थी कि चोरी का यह ज्वैलरी वह अपने घर की महिलाओं के माध्यम से मार्केट में बेचेंगे। मगर ज्वैलरी बेचने से पहले ही बदमाश पुलिस के हाथ चढ़ गए।

हज-2025 के प्रशिक्षक हेतु 13 दिसम्बर तक करें आनलाइन आवेदन

मेरठ(एजेंसी)। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी मौ० रुहेल आजम ने बताया कि सचिवध्कार्यपालक अधिकारी उ0प्र0 राज्य हज समिति मौलाना अली मियां मैमोरियल हज हाउस सरोजनी नगर लखनऊ द्वारा अवगत कराया गया है कि हज कमेटी ऑफ इण्डिया मुम्बई द्वारा हज 2025 के हज यात्रियो को प्रशिक्षण प्रदान किये जाने हेतु प्रशिक्षकों की चयन हेतु ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किये गये है।

ऑनलाइन आवेदन दिनांक 04 दिसम्बर से आरम्भ हो गया है जो 13 दिसम्बर 2024 ी मध्य रात्रि तक जारी रहेगा। ऑनलाइन आवेदन हज कमेटी ऑफ इण्डिया की बेवसाइट ीजजचेरूध्धिरबवउउपजजमम. हवअ.पद पर किया जायेगा। हज कमेटी ऑफ इण्डिया द्वारा दिसम्बर 2024 के तीसरे सप्ताह में लिखित परीक्षा ली जाएगी। प्रशिक्षकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण दिल्ली में जनवरी 2025 के प्रथम सप्ताह में सम्भावित है। केवल ऑनलाइन आवेदन स्वीकार किये जायेंगे, ऑफलाइन आवेदन स्वीकार्य नहीं होगे। 150 हज आवेदकों पर 01 प्रशिक्षक का चयन किया जाएगा।

गत वर्षों में जिनका बार–बार चयन हुआ हो परन्तु उनके द्वारा निराशाजनक प्रदर्शन किया गया है, उनका चयन नहीं किया जाएगा। प्रशिक्षक के रूप में शिक्षित, ईमानदार, कुशल, मेहनती और मृदुभाषी व्यक्तियो का चयन किया जायेगा। ऑनलाइन आवेदन के समय निर्धारित प्रपत्र भी अपलोड करना आवश्यक होगा। प्रशिक्षक हेतु आयु 25 वर्ष से कम 60 वर्ष से अधिक न हो। आवेदक के विरुद्ध किसी भी आपराधिक रिकॉर्ड उपलब्ध होने की स्थिति में उनका चयन नहीं किया जायेगा। गत पाँच वर्षों में हज किया होना अनिवार्य है। अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू व स्थानीय भाषा बोलने व समझने में निपुण हो। हज एवं उमराह के अरकानों एवं उसके कियान्वयन की पूर्ण जानकारी रखता हो। मानसिक एवं शारीरिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ हो। भीड़ समूह को सम्बोधित करने व नियंत्रित करने का अनुभव हो। कम्प्यूटर की जानकारी रखता हो। जो आवेदन सही पाये जाएंगे उन अभ्यर्थियों का साक्षात्कार राज्य हज समिति अथवा जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी द्वारा जिला स्तर पर किया जायेगा।

घुड़चढ़ी में डांस को लेकर भिड़ंत, दबंगों ने दूल्हे के घर पर हमला बोलकर तोड़ी टांग

मेरठ(एजेंसी)। परतापुर थाना क्षेत्र से मुरादनगर गई एक बारात में घुड़चढ़ी के दौरान हुई मामूली कहासुनी ने ब्रहस्पतिवार को बड़ा रूप ले लिया। आरोप है कि गांव के रहने वाले दबंगों ने दूल्हे के घर पर हमला बोलते हुए पूरे परिवार की जमकर पिटाई की। हमले में जहां दूल्हे का पैर टूट गया। वहीं, उसकी मां और जीजा सहित कई लोग घायल हुए हैं। पीड़ित पक्ष ने आरोपियों के खिलाफ तहरीर दी है।भूड़बराल गांव के रहने वाले मलवा के बेटे शहबाज की बारात बुधवार को मुरादनगर गई थी। बताया जाता है कि घुड़चढ़ी के दौरान गांव के रहने वाले कुछ युवकों का शाहबाज के जीजा से विवाद हो गया। उस समय तो ग्रामीणों ने दोनों पक्षों को समझा–बुझाकर शांत कर दिया।

ब्लाक परिसर में लगा रोजगार कैम्प, दस का हुआ चयन

लालगंज, प्रतापगढ़। शिक्षित बेरोजगारों को रोजगार प्रदान करने के लिए निजी कंपनियां जगह जगह कैम्प का आयोजन कर रही है। इसी क्रम में एसआईएस लिमिटेड जौनपुर कंपनी द्वारा गुरूवार को सांगीपुर ब्लाक परिसर में रोजगार कैम्प लगाया गया। कैम्प मे कुल तीस शिक्षित बेरोजगारों ने आवेदन पत्र भरे। जिसमे से दस बेरोजगारों को चयनित किया गया। कंपनी के कमाण्डेंट रजनीश राय ने बताया कि बेरोजगारों को रोजगार प्रदान करने के लिए कंपनी की तरफ से कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। यहां कुल दस शिक्षित बेरोजगारों को प्रशिक्षण के लिए चयनित किया गया है। कैम्प मे कंपनी कमाण्डेंट रजनीश राय के साथ बृजमोहन मौर्य भी मौजूद रहे।

पुलिस ने दो वांछित को गिरफ्तार कर भेजा जेल

लालगंज, प्रतापगढ़। लीलापुर पुलिस ने अलग अलग जगहों से एक वांछित व एक वारण्टी समेत दो आरोपियो को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। थाने के दरोगा अमरेश यादव गुरूवार सुबह गश्त पर निकले थे। इसी दौरान मुखबिर की सूचना पर वांछित इकराम पुत्र मो. अली निवासी हण्डौर नहर का पुरवा को ढकवा मोड़ के पास से धर दबोचा। वही दूसरी तरफ दरोगा रामनरेश यादव ने मुखबिर की सूचना पर शकूहाबाद गांव के शहजाद पुत्र मो. रऊफ को उसके घर के पास से गिरफ्तार किया। एसओ अरूण कुमार ने बताया कि गिरफ्तार किये गये दोनों आरोपियों को जेल भेज दिया गया है।

श्रीमदभागवत कथा श्रवण से मिलता है मोक्ष-आचार्य गिरीशचंद्र मिश्र

लालगंज, प्रतापगढ़। मिश्रपुर के नंदू का पुरवा में चल रही श्रीमदभागवत कथा ज्ञान यज्ञ में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ रही है। कथाव्यास आचार्य गिरीशचंद्र मिश्र ने कथा प्रसंग में बताया कि बाल सखा सुदामा का नाम सुनते ही भगवान श्रीकृष्ण ने उनके पास पहुंचकर गले लगा लिया। भगवान ने मैत्रीभाव से सुदामा को गले लगाकर जगत को यह संदेश भी दिया कि उनकी कृपा से दीनहीन भी क्षण भर में सुख समृद्धि हासिल कर लेता है। कथाव्यास गिरीशचंद्र मिश्र ने कहा कि कलियुग में श्रीमदभागवत की कथा श्रवण करने मात्र से मोक्ष की प्राप्ति हुआ करती है। कथा के दौरान बीच बीच में राधे श्रीकृष्ण संकीर्तन से माहौल और भक्तिमय हो उठा दिखा। मुख्य यजमान आशा तिवारी व शान्ती तिवारी तथा रामकुमार तिवारी वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच रोली चंदन से व्यासपीठ का पूजन किया। संयोजक शिवकुमार तिवारी व विनोद कुमार तिवारी ने श्रद्धालुओं का स्वागत तथा प्रमोद तिवारी ने आभार जताया। इस मौके पर अनिल कुमार तिवारी, आचार्य करूणेश, संजय तिवारी, ज्ञानेन्द्र तिवारी, शिवांश, देवांश आदि मौजूद रहे।

तीन बकरियां खोल ले गये चोर, दी तहरीर

लालगंज, प्रतापगढ़। दरवाजे पर बंधी तीन बकरियां बुधवार की रात अज्ञात चोर खोल ले गये। घटना को लेकर पीड़ित ने पुलिस को तहरीर दी है। लालगंज कोतवाली के केदौरा चौरिहन मोहनपुर निवासी परसुराम कोरी का आरोप है कि बीते बुधवार की रात करीब साढ़े ग्यारह बजे एक बाइक से आये दो अज्ञात चोर उसके पशुशाला में बंधी उसकी तीन बकरियां खोल ले गये। अगले दिन गुरूवार सुबह बकरी गायब देख पीड़ित आवाक रह गया। पास लगे सीसी कैमरे में हकीकत खंगाली तो बाइक से आये चोरों द्वारा बकरियों की चोरी की जानकारी हो सकी। कोतवाल नीरज यादव का कहना है कि जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

पांच के खिलाफ मारपीट व तोडफोड़ तथा धमकी का केस दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। बेटी के विवाह हेतु चल रही बातचीत में अवरोध उत्पन्न करने की बात को लेकर आरोपियो ने पीड़िता व उसकी पुत्री को मारापीटा तथा घरेलू सामानो मे तोडफोड किया। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने पांच आरोपियो के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के पूरे इच्छाराम बटौली गांव निवासिनी किरन गौतम पत्नी दिलीप कुमार गौतम ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि आठ दिसंबर की शाम करीब चार बजे पुत्री के विवाह को लेकर उसके घर में आये लोगों से बातचीत चल रही थी। रिश्ता तय होने के बाद लोग वापस जाने लगे। आरोप है कि इसी बीच गांव के रामदीन पुत्र ननकू अपनी पत्नी सगरहिन व पुत्रगण हरिश्चंद्र व जितेन्द्र तथा सुशीला पत्नी टुल्लू के साथ एकराय होकर घर में घुस आये। पीड़िता का आरोप है कि आरोपियो ने रिश्ते तय करने आये लोगों को फर्जी तरीके से एडिट की हुई उसकी बेटी की आपत्तिजनक फोटो दिखाने लगे। पीडिता ने विरोध किया तो आरोपियो ने उसे तथा उसकी पुत्री को जमकर मारापीटा। आरोपियो ने घरेलू सामानों मे तोडफोड करते हुए गाली व जान से मारने की धमकी भी दी। कोतवाल नीरज यादव का कहना है कि जांच के बाद पांच लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

जालसाजी करके खाते से हजारों उड़ाये, केस दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। जालसाजी करके पीड़ित के खाते से हजारों रूपये उड़ाने पर पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के असरही सराय बान सिंह गांव निवासी राजू कोरी पुत्र जोखूराम कोरी ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि अज्ञात आरोपियो ने जालसाजी करके छब्बीस नंवबर की सुबह करीब पौने नौ बजे उसके यूपी बडौदा ग्रामीण बैंक के धारूपुर शाखा में मौजूद खाते से दस हजार रूपये उड़ा लिये। पीडित के मोबाइल पर इसका संदेश आया तो वह आवाक रह गया। कोतवाल नीरज यादव का कहना है कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज किया गया है। जांच के बाद आगे उचित कार्रवाई की जाएगी।

मार्श ने ब्रिस्बेन में फर्श्म हासिल करने के लिए क्लास प्लेयर स्मिथ का समर्थन किया

ब्रिस्बेन, 12 दिसंबर। ऑस्ट्रेलिया के ऑलराउंडर मिशेल मार्श ने ब्रिस्बेन में भारत के खिलाफ टेस्ट में रन बनाने के लिए सीनियर बल्लेबाज स्टीव स्मिथ पर भरोसा जताया है। स्मिथ ने सीरीज की तीन पारियों में अब तक सिर्फ 19 रन बनाए हैं।

स्मिथ ने सीरीज के पहले दो टेस्ट में 0, 17 और 2 रन बनाए थे। उनके फॉर्म को लेकर बढ़ते दबाव के बीच मार्श ने स्मिथ को क्लास प्लेयर कहा और एडिलेड ओवल में पिंक–बॉल टेस्ट में 10 विकेट की शानदार जीत के बाद तीसरे टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया के लिए प्रदर्शन करने की उनकी क्षमताओं का समर्थन किया।मार्श ने गुरुवार को कहा, हम जानते हैं कि वह हमारे अब तक के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से एक है और मैं निश्चित रूप से उसे कुछ रन बनाने के लिए समर्थन दे रहा हूं। मैं शायद स्टीव स्मिथ को यह बताने की स्थिति में नहीं हूं कि उसे किस पर काम करना चाहिए। हम जानते हैं कि वह एक बेहतरीन खिलाड़ी है और उसने ऑस्ट्रेलिया के लिए बहुत सारे रन बनाए हैं और हम जानते हैं कि जब भी हमें उसकी जरूरत होती है, तो वह हमेशा आगे आता है।एडिलेड में एक झटके के बाद भारत गाबा में पहुंचा है, लेकिन 2020–21 श्रृंखला के दौरान इस स्थान पर अपनी उल्लेखनीय जीत की यादें लेकर आया है। उस ऐतिहासिक जीत ने ऑस्ट्रेलिया की मैदान पर अपराजित लकीर को समाप्त कर दिया और ऑस्ट्रेलिया में मेहमानों के लिए बैक–टू–बैक टेस्ट सीरीज जीत सुनिश्चित की थी। हालांकि, मेजबान टीम वर्तमान पर ध्यान केंद्रित कर रही है और पिछले परिणामों पर ध्यान नहीं दे रही है। पर्थ में हार झेलने के बाद, उन्होंने एडिलेड में जोरदार वापसी की और मौजूदा श्रृंखला को बराबर कर दिया और तीसरे टेस्ट में उस लय को बनाए रखना चाहेंगे।मार्श ने कहा, हमारे लिए सबसे बड़ी बात सिर्फ इस हफ्ते पर ध्यान केंद्रित करना है, न कि अतीत में क्या हुआ है। जिस तरह से हमने पर्थ से वापसी की, वह इसका एक उदाहरण है। हम इस हफ्ते अपने खेल पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और उम्मीद है कि हम सीरीज में 2–1 से आगे रहेंगे।गाबा में भारत को हराने की ऑस्ट्रेलिया की उम्मीदें जसप्रीत बुमराह का सामना करने की उनकी क्षमता पर निर्भर हो सकती हैं। दुनिया के शीर्ष क्रम के गेंदबाज ऑस्ट्रेलिया के शीर्ष क्रम के लिए दुश्मन रहे हैं उन्होंने तीन पारियों में दो बार स्टीव स्मिथ को आउट किया और सीरीज में कम से कम एक बार अन्य शीर्ष–पांच बल्लेबाजों – नाथन मैकस्वीनी, उस्मान ख्वाजा, मार्नस लाबुशेन और ट्रैविस हेड को आउट किया। मार्श, जिन्हें अभी तक बुमराह ने आउट नहीं किया है, का मानना है कि भारतीय अगुआ के खिलाफ सिर्फ टिके रहने की कोशिश करने के बजाय दबाव डालना उनके खतरे से निपटने का सबसे अच्छा तरीका है।मार्श ने कहा,हम जानते हैं कि अभी वह शायद दुनिया का सबसे अच्छा गेंदबाज है। यह सिर्फ उस चुनौती के लिए तैयार होने के बारे में है, यह एक बड़ी श्रृंखला है। आप दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का सामना करना चाहते हैं। निश्चित रूप से मेरी मानसिकता यही है। मैं फिर से उनका सामना करने के लिए उत्सुक हूं।उन्होंने कहा,मुझे लगता है कि प्रत्येक बल्लेबाज की अपनी योजना होती है। एक बल्लेबाजी इकाई के रूप में हम एक–दूसरे की योजनाओं का समर्थन करते हैं। मुझे लगता है कि जब आपके पास दुनिया का सबसे अच्छा गेंदबाज होता है और आप उसे आउट करने की कोशिश कर रहे होते हैं तो वह आपके नाम का एक गेंदबाज जरूर होता है। मुझे लगता है कि यह अपने तरीके से दबाव बनाने और चुनौती स्वीकार करने के बारे में है।तीसरा टेस्ट शनिवार से ब्रिस्बेन में खेला जाएगा।

एडिलेड की जीत के बाद आस्ट्रेलिया के पास गति है: गावस्कर

नई दिल्ली, 12 दिसंबर । ऑस्ट्रेलिया ने बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी में वापसी करते हुए एडिलेड में गुलाबी गेंद से खेले गए टेस्ट में 10 विकेट से जीत दर्ज करके सीरीज 1–1 से बराबर कर ली है। अब, शनिवार को गाबा में शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट के साथ, पूर्व क्रिकेट दिग्गज सुनील गावस्कर और हरभजन सिंह का मानना है कि शक्ति का संतुलन ऑस्ट्रेलिया के पक्ष में हो गया है।गावस्कर ने सीरीज पर गति के प्रभाव पर प्रकाश डाला। गावस्कर ने आधिकारिक प्रसारकों स्टार स्पोर्ट्स से कहा, पर्थ में जीत के बाद भारत को जो गति मिली थी, वह दूसरे टेस्ट से पहले दस दिन के अंतराल में खत्म हो गई।अब गति ऑस्ट्रेलिया के पास है क्योंकि उन्होंने एडिलेड टेस्ट जीत लिया है, और गाबा टेस्ट शुरू होने से सिर्फ तीन दिन पहले, गति निश्चित रूप से उनके पास है।हरभजन ने गावस्कर की भावनाओं को दोहराते हुए कहा कि यह सीरीज हाल के वर्षों में सबसे कठिन सीरीज में से एक है, क्योंकि दोनों टीमें विपरीत परिस्थितियों से उबरने की क्षमता रखती हैं। इस सीरीज में अहम भूमिका निभाने वाले पूर्व स्पिनर ने कहा, ऑस्ट्रेलिया के साथ पर्थ में जो हुआ, उसके बारे में उन्होंने नहीं सोचा होगा और भारत ने भी नहीं सोचा होगा कि पर्थ में अपनी शानदार जीत के बाद एडिलेड में क्या होगा। लेकिन अब, अगर हम इसे तीन मैचों की सीरीज के रूप में देखें, तो ट्रॉफी जीतने के लिए भारत को कम से कम दो मैच जीतने होंगे। उनके जीतने का सबसे अच्छा मौका सिडनी और मेलबर्न में होगा, लेकिन गाबा में जीत भारत के लिए सीरीज पर हावी होने का माहौल तैयार करेगी।गाबा में होने वाला आगामी मैच जनवरी 2021 में भारत की ऐतिहासिक जीत की यादों को ताजा करता है। निडर ऋषभ पंत (नाबाद 89 रन) की अगुआई में कमजोर भारतीय टीम ने 328 रनों का चुनौतीपूर्ण लक्ष्य हासिल किया, जिससे ऑस्ट्रेलिया का इस मैदान पर 32 साल का जीत का सिलसिला खत्म हो गया।हालांकि, इस बार हालात अलग हैं। एडिलेड में मिली शानदार जीत से उत्साहित ऑस्ट्रेलिया का पलड़ा भारी लग रहा है। दूसरी ओर, भारत को ब्रिसबेन में ऑस्ट्रेलिया को चुनौती देने के लिए जल्दी से जल्दी अपनी बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों में सुधार करना होगा, जो अपनी तेज गेंदबाजी अनुकूल परिस्थितियों के लिए जाना जाता है।

टेलीकाम पीएलआई में 3,998 करोड़ रुपये का हुआ वास्तविक निवेश

नई दिल्ली, 12 दिसंबर। संसद को दी गई जानकारी के अनुसार, टेलीकॉम और नेटवर्किंग प्रोडक्ट्स के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना में एमएसएमई और गैर–एमएसएमई द्वारा 3,998 करोड़ रुपये का वास्तविक निवेश (प्रतिबद्ध निवेश 4,014 करोड़ रुपये) हुआ है।

संचार और ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. चंद्रशेखर पेम्मासानी ने लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में कहा कि टेलीकॉम और नेटवर्किंग प्रोडक्ट्स के लिए पीएलआई योजना के तहत 31 अक्टूबर तक कुल 42 लाभार्थियों को मंजूरी दी गई है।टेलीकॉम प्रोडक्ट्स की मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने और आयात निर्भरता को कम करने के लिए, दूरसंचार विभाग (डीओटी) ने 2021 में टेलीकॉम और नेटवर्किंग प्रोडक्ट्स के लिए पीएलआई को 12,195 करोड़ रुपये के कुल वित्तीय परिव्यय के साथ अधिसूचित किया।जून, 2022 में योजना के दिशा–निर्देशों में संशोधन किया गया, जिसमें देश में डिजाइन, विकसित और निर्मित उत्पादों के लिए 1 प्रतिशत अतिरिक्त प्रोत्साहन की पेशकश की गई।इससे पहले, सरकार ने बताया कि टेलीकॉम और नेटवर्किंग प्रोडक्ट्स के लिए पीएलआई योजना के तहत निर्यात 30 सितंबर तक 12,384 करोड़ रुपये पहुंच गया।केंद्रीय मंत्री के अनुसार, सितंबर तक आवेदक कंपनियों ने कुल 65,320 करोड़ रुपये की बिक्री की थी।

योजना की मुख्य विशेषताओं में 33 टेलीकॉम और नेटवर्किंग प्रोडक्ट्स, 4 से 7 प्रतिशत तक के प्रोत्साहन, पहले 3 वर्षों के लिए एमएसएमई के लिए अतिरिक्त 1 प्रतिशत प्रोत्साहन और 'भारत में डिजाइन' उत्पादों के लिए अतिरिक्त 1 प्रतिशत प्रोत्साहन शामिल हैं।इस बीच, बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रॉनिस मैन्युफैक्चरिंग के लिए पीएलआई योजना 2020 में अधिसूचित की गई थी।स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देकर, पीएलआई योजना ने आयातित टेलीकॉम सामानों पर देश की निर्भरता को काफी हद तक कम कर दिया है। सरकार के अनुसार, भारतीय निर्माता वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, प्रतिस्पर्धी कीमतों पर उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद पेश कर रहे हैं।

हल्की गिरावट के साथ खुला शेयर बाजार, सेंसेक्स 17 अंक लुढका, निफ्टी 24,604 पर

मुंबई, 12 दिसंबर। कारोबारी सप्ताह के चौथे दिन शेयर बाजार रेड जोन में खुला. बीएसई पर सेंसेक्स 17 अंकों की गिरावट के साथ 81,509.09 पर ओपन हुआ. वहीं, एनएसई पर निफ्टी 0.15 फीसदी की गिरावट के साथ 24,604.45 पर खुला.

आज के कारोबार के दौरान ग्लैंड फार्मा, ग्रीव्स कॉटन, गोदावरी पावर इस्पात, पिलानी इन्वेस्टमेंट एंड इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन, स्ट्राइड्स फार्मा साइंस, सम्मान कैपिटल, पीसी ज्वैलर, ग्रासिम इंडस्ट्रीज और अमी ऑर्गेनिक्स जैसे शेयरों फोकस में रहेंगे.बाजार खुलने के साथ ही निफ्टी पर हिंडाल्को, ओएनजीसी, टेक महिंद्रा, सिप्ला, सन फार्मा बढ़ोतरी के साथ कारोबार कर रहे, जबकि अल्ट्राटेक सीमेंट, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस, एशियन पेंट्स, टाइटन कंपनी और ट्रेंट गिरावट के साथ कारोबार कर रहे.

कारोबारी सप्ताह के तीसरे दिन शेयर बाजार सपाट पर बंद हुआ. बीएसई पर सेंसेक्स 16 अंकों की उछाल के साथ 81,526.14 पर क्लोज हुआ. वहीं, एनएसई पर निफ्टी 0.11 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 24,637.15 पर बंद हुआ.कारोबार के दौरान निफ्टी पर ट्रेंट, बजाज फाइनेंस, ब्रिटानिया इंडस्ट्रीज, श्रीराम फाइनेंस, बजाज फिनसर्व के शेयर टॉप गेनर के लिस्ट में शामिल रहे. जबकि जेएसडब्ल्यू स्टील, अडाणी पोर्ट्स, एनटीपीसी, एसबीआई, एक्सिस बैंक के शेयर टॉप लूजर के लिस्ट में शामिल रहे.

बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप इंडेक्स में 0.3 फीसदी की तेजी रही. सेक्टोरल फ्रंट पर ऑटो, एफएमसीजी, आईटी, मेटल में खरीदारी देखने को मिली, जबकि पीएसयू बैंक इंडेक्स में करीब 1 फीसदी की गिरावट आई.

भारत की रिन्यूएबल एनर्जी कैपेसिटी में 14.2 प्रतिशत की शानदार वृद्धि

नई दिल्ली, 12 दिसंबर। सरकार द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, वित्त वर्ष 2024–25 के दौरान, नवंबर 2024 तक कुल 14.94 गीगावाट नई

रिन्यूएबल एनर्जी कैपेसिटी जोड़ी गई, जो वित्त वर्ष 2023–24 में इसी अवधि के दौरान जोड़ी गई 7.54 गीगावाट क्षमता से लगभग दोगुनी है।अकेले नवंबर 2024 में, 2.3 गीगावाट नई कैपेसिटी जोड़ी गई, जो नवंबर 2023 में जोड़ी गई 566.06 मेगावाट कैपेसिटी से चार गुना अधिक है। भारत के रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर में सभी प्रमुख कैटेगरी में शानदार वृद्धि देखी गई है।सोलर पावर ने बाजी मारी है। जिसकी इंस्टॉल्ड कैपेसिटी 2023 में 72.31 गीगावाट से बढकर 2024 में 94.17 गीगावाट हो गई है, जो 30.2 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि है।

पाइपलाइन परियोजनाओं सहित, कुल सोलर कैपेसिटी में 52.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो 2024 में 261.15 गीगावाट तक पहुंच गई, जबकि 2023 में यह 171.10 गीगावाट थी।विंड पावर की इंस्टॉल्ड कैपेसिटी 2023 में 44.56 गीगावाट से बढकर 2024 में 47.96 गीगावाट हो गई, जो 7.6 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।

मंत्रालय के अनुसार, पाइपलाइन परियोजनाओं सहित कुल विंड कैपेसिटी में 17.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो 2023 में 63.41 गीगावाट से बढकर 2024 में 74.44 गीगावाट हो गई।बायोएनर्जी और हाइड्रोइलेक्ट्रिक परियोजनाओं ने भी रिन्यूएबल एनर्जी मिश्रण में लगातार योगदान दिया।बायोएनर्जी कैपेसिटी 2023 में 10.84 गीगावाट से बढकर 2024 में 11.34 गीगावाट हो गई, जो 4.6 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाती है।छोटी हाइड्रो परियोजनाओं में मामूली वृद्धि देखी गई, जो 2023 में 4.99 गीगावाट से बढकर 2024 में 5.08 गीगावाट हो गई, जबकि पाइपलाइन परियोजनाओं सहित कुल कैपेसिटी 5.54 गीगावाट तक पहुंच गई।बड़ी हाइड्रो परियोजनाओं में इंस्टॉल्ड कैपेसिटी 2023 में 46.88 गीगावाट से बढकर 2024 में 46.97 गीगावाट हो गई, और पाइपलाइन परियोजनाओं सहित कुल कैपेसिटी पिछले वर्ष के 64.85 गीगावाट से बढकर 67.02 गीगावाट हो गई।न्यूक्लियर एनर्जी में, इंस्टॉल्ड न्यूक्लियर कैपेसिटी 2023 में 7.48 गीगावाट से बढकर 2024 में 8.18 गीगावाट हो गई, जबकि पाइपलाइन परियोजनाओं सहित कुल कैपेसिटी 22.48 गीगावाट पर स्थिर रही।

नवंबर में भारत की कुल गैर–जीवाश्म ईंधन इंस्टॉल्ड कैपेसिटी 213.70 गीगावाट तक पहुंच गई, जो पिछले साल इसी महीने के 187.05 गीगावाट से 14.2 प्रतिशत की शानदार वृद्धि को दर्शाती है।नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) ने नवंबर 2023 से नवंबर 2024 तक भारत के रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर में शानदार प्रगति की जानकारी दी, जो पीएम नरेंद्र मोदी द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप अपने क्लीन एनर्जी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए देश की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।इस बीच, कुल गैर–जीवाश्म ईंधन कैपेसिटी, जिसमें इंस्टॉल्ड और पाइपलाइन दोनों परियोजनाएं शामिल हैं, बढकर 472.90 गीगावाट हो गई, जो पिछले वर्ष के 368.15 गीगावाट से 28.5 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाती है।नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अनुसार,

महिला जूनियर एशिया कप: चीन ने भारत को 2-1 से हराकर पूल ए में शीर्ष स्थान हासिल किया

मस्कट, 11 दिसंबर ()। चीन ने बुधवार को यहां महिला जूनियर एशिया कप में तीसरे पूल ए मैच में भारत को 2–1 से हराकर पूल ए में शीर्ष स्थान प्राप्त किया। इन तीन अंकों को जीतकर चीन ने पूल ए विजेता के रूप में सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली।बुधवार को हुए इस महत्वपूर्ण मुकाबले में, चीन के लिए जिनझुआंग टैन (32) और लिहांग वांग (42) गोल करने वाली खिलाड़ी थी, जबकि दीपिका (56) ने भारत के लिए अपना सातवां गोल करके टूर्नामेंट के शीर्ष स्कोरर की सूची में शीर्ष स्थान प्राप्त किया।पहले क्वार्टर में दोनों पक्षों ने शुरुआती गोल की तलाश में सभी मोर्चों पर आक्रामक हमला किया। भारत ने कई मौके बनाए, लेकिन शूटिंग सर्कल में वह उतना प्रभावशाली नहीं रहा।भारत को शुरुआती पेनल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन गोल करने के उनके प्रयास को चीन की मजबूत बैकलाइन ने बचा लिया। पहले क्वार्टर के अंत में चीन को भी पेनल्टी कॉर्नर मिला। जिनझुआंग टैन ने गोल पर एक शक्तिशाली शॉट लगाया, जिसे भारत की गोलकीपर निधि ने महत्वपूर्ण बचाव करके स्कोर बराबर रखा।दूसरे क्वार्टर में भारत को लगातार दो पेनल्टी कॉर्नर मिले, लेकिन वे इस अवसर का लाभ नहीं उठा सके और पहला गोल नहीं कर सके। पहले हाफ में कड़ी टक्कर के बाद, दोनों टीमें अलग नहीं हो सकीं और बिना कोई गोल किए अपने डगआउट में लौट गईं।तीसरे क्वार्टर के शुरुआती मिनटों में, चीन की जुएलिंग जेंग ने एक खतरनाक जवाबी हमला किया, क्योंकि वह बाएं विंग से भारतीय रक्षा को भेदती हुई आगे बढ़ीं और अंततरू निधि ने शूटिंग सर्कल में उन्हें गिरा दिया और अपनी टीम के लिए एक पेनल्टी स्ट्रोक जीता। कप्तान जिनझुआंग टैन ने स्ट्रोक लेने के लिए कदम बढ़ाया और निधि को पीछे छोड़ते हुए एक शक्तिशाली शॉट के साथ पहला गोल किया।चीन ने बढ़त बनाने के बाद गति बनाए रखी और ढेर सारे मौके बनाए। 42वें मिनट में, चीन ने पेनल्टी कॉर्नर के जरिए गोल किया, क्योंकि उनके शीर्ष स्कोरर लिहांग वांग ने बढ़त को बढ़ाने के लिए गेंद को नेट में पहुंचा दिया।चीन ने अंतिम क्वार्टर में दो गोल की बढ़त हासिल की और खेल की गति को नियंत्रित करके तथा गेंद पर कब्जा जमाकर खेल को मजबूती से समाप्त किया। भारत ने मैच के अंतिम क्षणों में एक गोल वापस पाने के लिए अंतिम प्रयास किया। उन्होंने एक महत्वपूर्ण स्थिति में गेंद जीती और कनिका सिवाच ने दीपिका को बेहतरीन पास दिया, जिन्होंने नजदीक से गोल किया। इसके साथ ही भारत ने अंतर को कम किया, लेकिन बराबरी नहीं कर सका और मैच 2–1 से हार गया।

90 प्रतिशत लोग खाते हैं गलत तरीके से गाजर, डायटीशियन से जानें सही तरीका

गाजर में कई तरह के पोषक तत्व होते हैं इसमें विटामिन ए, विटामिन सी, फाइबर, पोटेशियम और एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में पाया जाता है. रोजाना गाजर खाने से न केवल आंखों की रोशनी बढ़ती है बल्कि इससे इम्यूनिटी भी बूस्ट होत है. त्वचा को दुरुस्त रखने से लेकर पाचन को बेहतर बनाने में भी गाजर फायदेमंद होती है. रखने और शरीर को फ्री–रेडिकल्स से बचाने में मदद करती है. लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि लगभग 90त्न लोग गलत तरीके से गाजर खाते हैं इस वजह से उन्हें उतने फायदे नहीं मिल पाते हैं जितने मिलने चाहिए.आइए डायटीशियन भावेश गुप्ता से जानते हैं कैसे खाएं गाजर.

आप गलत तरीके से खा रहे गाजर

डायटीशियन के अनुसार ज्यादातर लोग गाजर को गलत तरीके से खाते हैं आपने देखा होगा कि ज्यादातर लोग गाजर को कच्चा या सलाद के रूप में खाते हैं या फिर गाजर का जूस पीते हैं इस तरह खाने से आपको गाजर में मौजूद विटामिन नहीं मिलता है.

गाजर खाने का सही तरीका

डायटीशियन के अनुसार गाजर को का सेवन हमेशा तेल या घी के साथ खाने किया जाना चाहिए. ऐसा इसलिए क्योंकि इनके साथ खाने से गाजर में मौजूद विटामिन ए का इसका अवशोषण ज्यादा बेहतर तरीके से होता है.

गाजर की सब्जी बेहतरीन ऑप्शन

गाजर की सब्जी खाना सबसे बेहतरीन ऑप्शन है. आप गाजर की सब्जी बना सकते हैं गाजर के फायदे लेने का यह बढिया तरीका है. दूसरा तरीका यह है कि आप गाजर को थोड़े से तेल में सॉटे करके भी खा सकते हैं इसके पकार खाने से विटामिन ए अच्छी तरह अवशोषित होता है.

गाजर खाने के फायदे

एंटीऑक्सीडेंट्सरू शरीर को फ्री–रेडिकल्स से बचाते हैं

गाजर का ग्लाइसेमिक इंडेक्स रू यह ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल रखने में मददगार है.

विटामिन ए रू आंखों की रोशनी और त्वचा के लिए फायदेमंद.

विटामिन सीरू इम्यूनिटी बढ़ाने में मददगार.

फाइबररू पाचन को दुरुस्त रखता है और वेट मैनेजमेंट में सहायक.

पोटेशियमरू हार्ट हेल्थ और ब्लड प्रेशर को संतुलित करता है.

लो–कैलोरी रू लो–कैलोरी और फाइबर गाजर वजन घटाने में मदद करता है.

सर्दियों के मौसम में इन 5 तरीके से खाएं अंडे, कोसों दूर भागेंगी बीमारियां

अंडा सर्दियों में खाना बहुत फायदेमंद होता है. यह प्रोटीन का अच्छा माध्यम है और शरीर को गर्म रखने में मदद करता है. बहुत से लोग अपनी सुबह की शुरुआत अंडे के साथ करते हैं, क्योंकि यह हमें पूरे दिनभर के लिए ताजगी और एनर्जी देता है. अंडे में कई पोषक तत्व मौजूद होते हैं, जो हमारी इम्युनिटी को भी मजबूत करते हैं. तो चलिए, जानते हैं अंडे को खाने के कुछ टेस्टी और आसान तरीके.

एग भुर्जी

एग भुर्जी बनाना बहुत आसान है. इसमें प्याज, टमाटर, शिमला मिर्च और हरी मिर्च डालकर हल्का मसाला बना सकते हैं. इसे रोटी या ब्रेड के साथ खाएं. यह खाने में बहुत टेस्टी और सर्दियों के लिए परफेक्ट कॉम्बिनेशन होता है.

अंडा करी

अंडा करी बना के भी खा सकते हैं जिन्हे अंडा खाना पसंद है उसके लिए अंडा की करी एक अच्छा ऑप्शन है. इसे बनाने के लिए अंडे उबालकर टमाटर की प्यूरी और मसालों के साथ पकाना होता है. यह सर्दियों में खाने में बहुत टेस्टी लगता है और अगर गरमागरम हो तो इसका टेस्ट दोगुना हो जाता है.

अंडा बिरयानी

बिरयानी में उबले अंडे डालने से उसका स्वाद और भी बढ़ जाता है. अगर आप बिरयानी के शौकीन हैं, तो उबले अंडे डालकर इसे और भी टेस्टी बना सकते हैं. इसे हरी चटनी या रायते के साथ खाएं, मजा आ जाएगा.

एलन मस्क 400 अरब डालर की संपत्ति बनाने वाले दुनिया के पहले व्यक्ति बने

नईदिल्ली, 12 दिसंबर। दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति एलन मस्क ने एक और उपलब्धि अपने नाम कर ली है।टेस्ला और स्पेस– एक्स जैसी कंपनियों के मालिक मस्क 40,000 करोड़ डॉलर (करीब 33.94 लाख करोड़ रुपये) की संपत्ति (नेटवर्थ) तक पहुंचने वाले पहले व्यक्ति बन गए हैं।ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स के अनुसार, उनकी संपत्ति 44,700 करोड़ डॉलर हो गई है। यह दुनिया के दूसरे सबसे अमीर अमेजन के प्रमुख जेफ बेजोस की संपत्ति से करीब 20,000 करोड़ डॉलर ज्यादा है।रिपोर्ट के अनुसार, एक ही दिन में एलन मस्क की संपत्ति में 6,280 करोड़ डॉलर का इजाफा देखने को मिला है, जिसके बाद उनकी संपत्ति 40,000 करोड़ डॉलर को पार करते हुए 44,700 करोड़ डॉलर हो गई है।यह उछाल स्पेस– एक्स के शेयर में बिकवाली चलते आया है। इस बिकवाली के बाद एलन मस्क की संपत्ति में 5,000 करोड़ डॉलर का इजाफा हुआ है।साल 2024 में ही उनकी संपत्ति में 21,800 करोड़ डॉलर की बढ़ोतरी आई है।अमेरिका में हुए राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद से ही एलन मस्क की संपत्ति में लगातार उछाल देखा जा रहा है। उनकी संपत्ति में 183 अरब डॉलर की बढ़ोतरी देखने को मिल चुकी है।दूसरी ओर टेस्ला के शेयरों में 4 दिसंबर के बाद से 72 फीसदी से ज्यादा का इजाफा देखने को मिला है।

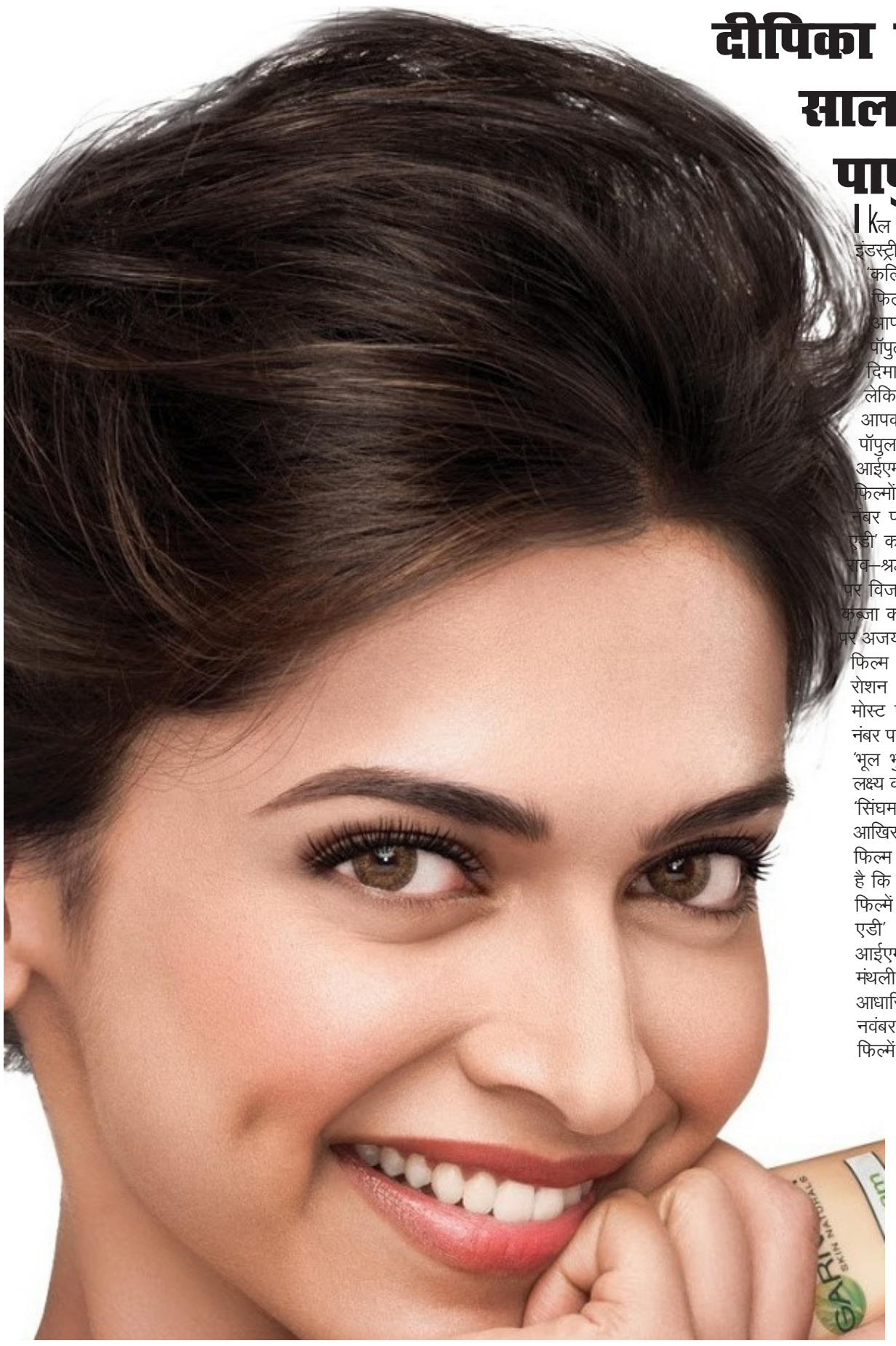

दीपिका की कल्कि साल की मोस्ट पापुलर फिल्म

Ikल 2024 में बॉलीवुड से लेकर साउथ इंडस्ट्री की कई फिल्में रिलीज हुईं। 'स्त्री 2', 'कल्कि 2898 एडी', 'भूल भुलैया 3' जैसी फिल्मों का जलवा रहा। लेकिन क्या आपको पता है कि इस साल की मोस्ट पॉपुलर फिल्म कौन सी है। शायद आपके दिमाग में 'स्त्री 2' का नाम आ रहा होगा, लेकिन आप गलत हैं। चलिए हम ही आपको बता देते हैं कि साल की मोस्ट पॉपुलर फिल्म का खिताब किसे मिला है। आईएमडीबी ने साल 2024 की मोस्ट पॉपुलर फिल्मों की लिस्ट जारी की है। इसमें पहले नंबर पर प्रभास की फिल्म 'कल्कि 2898 एडी' का नाम है। दूसरे स्थान पर राजकुमार राव–श्रद्धा कपूर की 'स्त्री 2' है। तीसरे नंबर पर विजय सेतुपति की फिल्म 'महाराजा' ने कब्जा कर लिया है। इसके बाद चौथा नंबर पर अजय देवगन और आर माधवन की हॉरर फिल्म 'शैतान', पांचवें नंबर पर ऋतिक रोशन की फिल्म 'फाइटर' है।2024 की मोस्ट पॉपुलर फिल्मों की लिस्ट में छठवें नंबर पर मलयालम फिल्म 'मंजुम्मेल बॉयज', 'भूल भुलैया 3' को 7वां, राघव जुयाल–लक्ष्य की 'किल' 8वां और अजय देवगन की 'सिंघम अगेन' को 9वां स्थान मिला है। आखिर यानी 10वें नंबर पर आमिर खान की फिल्म 'लापता लेडीज' है। कमाल की बात है कि इस लिस्ट में दीपिका पादुकोण की फिल्में हैं जिनमें 'फाइटर', 'कल्कि 2898 एडी' और 'सिंघम अगेन' शामिल है। आईएमडीबी की यह लिस्ट 250 मिलियन मंथली विजिटर्स के एक्चुअल पेज व्यूज पर आधारित है। इसमें 1 जनवरी से लेकर 25 नवंबर, 2024 के बीच भारत में रिलीज हुई फिल्में शामिल हैं। ¼fgQ½

चांद का टुकड़ा में सरोज खान से भिड़ गयीं श्रीदेवी

Iरोज खान थोड़ी गुस्सैल मिजाज की थीं। ये उनके साथ काम करने वाले हर शख्स ने कबूल किया। परफेक्शन के साथ स्टार्स को अपनी इशारों पर नचाने वाली सरोज खान की बॉलीवुड की चांदनी यानी श्रीदेवी के साथ झगड़ा हुआ था। बात 90 के दशक की है। झगड़ा पर्दे के पीछे से अखबारों और मैग्जीन की सुर्खियों में छा गया। दोनों की इस कैट फाइट की इतनी चर्चाएं हुईं कि बाद में एक्ट्रेस ने खुद सामने आकर पूरे वाकये पर रिएक्ट किया। इस झगड़े की वजह एक ने माधुरी दीक्षित को बताया तो एक ने यहां तक कह डाला कि मैं तो खामखाह की विलेन बन गई। वैजयंतीमाला, माधुरी दीक्षित, ऐश्वर्या राय से लेकर करीना कपूर तक को अपने इशारों पर सरोज खान ने नचाया है। सलमान खान के साथ उनके झगड़े को कौन नहीं जानता लेकिन क्या आप जानते हैं कि श्रीदेवी के साथ भी उनका झगड़ा हुआ था। किस्सा 1994 में आई फिल्म चांद का टुकड़ा से जुड़ा है। इस फिल्म के गाने सरोज खान ने कोरियोग्राफ किए थे। चर्चाएं थीं कि श्रीदेवी इस फिल्म के एक गाने में सरोज खान की कोरियोग्राफी से खुश नहीं थीं। सरोज खान को अपनी वैनिटी वैन में बुलाया और इस पर नाराजगी जाहिर की थी। श्रीदेवी ने अपने गाने की कोरियोग्राफी की तुलना माधुरी दीक्षित पर फिल्माए धक धक से तुलना की। कहा गया कि श्रीदेवी ने सरोज खान को बुलाकर कहा था कि उन्होंने उनके गाने की कोरियोग्राफी पर इतनी मेहनत नहीं की, जितनी माधुरी के धक धक पर की थी। बस यहीं से मुद्दा इतना गरमाया कि बातें थमी नहीं बल्कि बढ़ने लगीं। दोनों के बीच इतनी गरमा–गर्मी हो गई थी कि सरोज खान ने उनके साथ काम करने से मना कर दिया था और कह दिया था। चूंकि उन्हें अब मुझ पर भरोसा नहीं है, इसलिए मैं उनके साथ पूरे एक साल तक काम नहीं करूंगी। श्रीदेवी ने इस बारे में साल 1993 में एक इंटरव्यू में पूरी कहानी बताई थी। श्रीदेवी ने कहा था, मुझे उनसे कोई दिक्कत नहीं थी। फिल्म के प्रोड्यूसर सावन जी के साथ उनकी समस्या थी क्योंकि वो सेट पर रेगुलर नहीं आती थीं। श्रीदेवी ने कहा था, सावन जी मेरे पास आए और कहा कि मैं अब उनके साथ काम नहीं कर सकता। तो मैंने उनसे कहा कि वह सरोज को एक मौका दे लेकिन उनके बीच बात नहीं बनी और मैं विलेन बन गई। ¼fgQ½

राजकपूर की 100वीं जयंती पर मोदी को न्योता

HKkरतीय सिनेमा जगत के ग्रेट शो मैन राज कपूर की 100वीं जयंती का जश्न जबरदस्त होगा। कपूर फैमिली पूरी आन बान शान से उत्सव की तैयारी में जुटी है। परिवार ने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी न्योता दिया है। खुशी का इजहार पूरे परिवार ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर किया है। 14 दिसंबर को बॉलीवुड के शोमैन राज कपूर की 100 जयंती है। ऐसे में कपूर परिवार इस मौके को खास बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। कपूर फैमिली ने 13 से 15 दिसंबर के बीच आरके फिल्म फेस्टिवल रखा है, जिसके संबंध में कपूर परिवार के सदस्यों ने पीएम मोदी से मुलाकात की, कपूर परिवार के सदस्यों ने इस फिल्म फेस्टिवल के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी इनवाइट किया है। इस दौरान पूरा कपूर परिवार साथ नजर आया। सोशल मीडिया पर उनके फोटोज और वीडियोज भी सामने आए हैं। करीना कपूर, करिश्मा कपूर, आलिया और रिद्धिमा ने भी इस मुलाकात की तस्वीरें अपने–अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर शेयर की हैं। तस्वीरों में उनके साथ नीतू कपूर, रणबीर, सैफ अली खान, अनीषा मल्होत्रा जैन, अरमान जैन भी नजर आ रहे हैं। तस्वीरों में कपूर सिस्टर्स को पीएम मोदी से ऑटोग्राफ मांगते भी देखा गयाकरीना कपूर ने तो तस्वीरों की सीरीज के साथ वो क्लिप भी शेयर किया जिसमें पीएम मोदी उनके बच्चों टिम और जेह को ऑटोग्राफ दे रहे हैं। तस्वीरों को शेयर करते हुए करीना कपूर ने कैप्शन में लिखा– हमारे दादा, महान राज कपूर के असाधारण जीवन और विरासत को मनाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आमंत्रित किए जाने पर हम बहुत विनम्र और सम्मानित महसूस कर रहे हैं। करीना ने आगे लिखा– ऐसी विशेष दोपहर के लिए श्री मोदी जी को धन्यवाद। इस मील के पत्थर का जश्न मनाने में आपकी गर्मजोशी, ध्यान और समर्थन हमारे लिए बहुत मायने रखता है। जैसा कि हम भारतीय सिनेमा में दादाजी की कलात्मकता, दूरदर्शिता और योगदान के 100 गौरवशाली सालों का जश्न मनाते हैं, हम उनकी विरासत के टाइमलेस प्रभाव का सम्मान करते हैं, जो हमें और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा। करीना ने अपने पोस्ट में राज कपूर की फिल्मों को फिर दिखाए जाने पर खुशी जाहिर की और लिखा– हमें उनकी प्रतिष्ठित फिल्मों को प्रदर्शित करने पर गर्व है और राज कपूर 100 फिल्म फेस्टिवल के साथ भारतीय सिनेमा पर उनके प्रभाव को याद करते हैं। ¼fgQ½

छत्रपति शिवाजी बने कांतारा स्टार ऋ षभ शेट्टी, एक्टर का धांसू फर्स्ट लुक आउट

कांतारा से दुनियाभर में पहचान बनाने वाले एक्टर ऋषभ शेट्टी की अपकमिंग फिल्म अनाउंस हो चुकी है. वे अपकमिंग फिल्म में छत्रपति शिवाजी के किरदार में नजर आने वाले हैं. फिल्म का नाम छत्रपति शिवाजी महाराज है. इस फिल्म को संदीप सिंह डायरेक्ट कर रहे हैं. मर्केर्स ने हाल ही में फिल्म का शानदार पोस्टर शेयर करते हुए फिल्म की रिलीज डेट और बाकी की डिटेल अनाउंस की है.

मेकर्स ने हाल ही में फिल्म का पोस्टर रिलीज किया जिसमें ऋषभ शेट्टी का लुक रिवील किया गया. छत्रपति शिवाजी के लुक में ऋषभ शानदार लग रहे हैं. हाथ में तलवार लिए, शिवाजी के ट्रेडिशनल अपीयरेंस में ऋषभ शिवाजी महाराज को परफेक्ट तरीके से रीप्रजेंट कर रहे हैं. मेकर्स ने पोस्टर शेयर करते हुए कैप्शन लिखा, हमारा सम्मान प्रस्तुत है भारत के महानतम योद्धा राजा – भारत का गौरवरू छत्रपति शिवाजी महाराज की एपिक सागा.

पोस्टर के कैप्शन में ही मेकर्स ने फिल्म की रिलीज डेट अनाउंस की है. उन्होंने आगे लिखा, यह सिर्फ एक फिल्म नहीं है – यह एक योद्धा के सम्मान में एक युद्ध घोष है, जिसने सभी बाधाओं के खिलाफ लड़ाई लड़ी, शक्तिशाली मुगल साम्राज्य की ताकत को चुनौती दी और एक ऐसी विरासत बनाई जिसे कभी नहीं भुलाया जा सकता. एक मैग्नम ओपस एक्शन ड्रामा के लिए तैयार हो जाइए, जो एक अलग सिनेमैटिक एक्सपीरियंस है, क्योंकि हम छत्रपति शिवाजी महाराज की अनकही कहानी को उजागर करेंगे. फिल्म 21 जनवरी 2027 को वर्ल्डवाइड रिलीज होगी. हर हर महादेव.

फिलहाल ऋषभ कांतारा चौप्टर 1 को लेकर सुर्खियों में हैं जो कि 2022 में रिलीज हुई ब्लॉकबस्टर फिल्म् कांतारा की प्रीक्वल है. फिल्म 2 अक्टूबर 2025 में दुनियाभर के सिनेमाघरों में दस्तक देगी. कांतारा को बेस्ट फिल्म और ऋषभ को बेस्ट एक्टर के लिए नेशनल अवार्ड से नवाजा गया था.

वरुण धवन की भेडिया के सीक्वल में नजर आएंगी श्रद्धा कपूर? अभिनेत्री ने बताया

अभिनेत्री श्रद्धा कपूर को पिछली बार फिल्म स्त्री 2 में देखा गया था, जिसमें उनकी अदाकारी की खूब तारीफ हुई और बॉक्स ऑफिस पर भी इसने बेहतरीन प्रदर्शन किया। यह साल 2024 की सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्मों में से एक है।अब श्रद्धा ने अपनी आगामी परियोजनाओं पर खुलकर बात की है।इसके साथ उन्होंने बताया कि क्या वह वरुण धवन की फिल्म भेडिया के सीक्वल भेडिया 2 में नजर आएंगी या नहीं।

श्रद्धा ने कहा, यह केवल समय ही बताएगा कि क्या मैडॉक की किसी अन्य फिल्म में मैरा कोई कैमियो आता है या नहीं। मुझे अभी तक पता नहीं है, लेकिन बहुत जल्द मैं उन फिल्मों के बारे में बताऊंगी, जो मैं करने वाली हैं। इन फिल्मों की शूटिंग मैं अगले साल करूंगी।बता दें कि श्रद्धा साल 2022 में आई फिल्म भेडिया के खास गाने ठुमकेश्वरी में नजर आई थीं।

श्रद्धा के प्रशंसक उनकी नई फिल्म की राह देख रहे हैं। हालांकि, उनका नाम तो अब तक कई फिल्मों से जुड़ चुका है लेकिन किसी पर भी मोहर नहीं लगी थी।खबर है कि श्रद्धा फिल्म नागिन में नजर आएंगी, जिसके निर्देशन की कमान निखिल आडवाणी ने संभाली है। फिल्म की कहानी लिखी जा चुकी है।बता दें कि नागिन पुरानी मान्यताओं पर आधारित होगी। इसका फिल्मांकन बिल्कुल जुदा अंदाज में होगा। फिल्म में जबरदस्त वीएफएक्स देखने को मिलेंगे।

बालीवुड की स्टाइल आइकन अनन्या पांडे ने शेयर किया बासी लुक, एक्ट्रेस की हॉटनेस देख घायल हुए यूजर्स

बॉलीवुड एक्ट्रेस अनन्या पांडे आए दिन अपनी लेटेस्ट फोटोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर अक्सर फैंस का सारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। उनका कातिलाना अवतार इंटरनेट पर आते ही ट्रेंड करने लगता है। अब हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट की हैं। इन तस्वीरों में उनकी हॉटनेस देखकर फैंस मंत्रमुग्ध हो गए हैं।

एक्ट्रेस अनन्या पांडे अपनी खूबसूरती और ग्लैमरस अदाओं से अक्सर फैंस के बीच सुर्खियां बटौरती रहती हैं। उनका कातिलाना अंदाज इंटरनेट पर आते ही तेजी से वायरल होने लगता है।

हाल ही में एक्ट्रेस अनन्या पांडे ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट करी हैं। इन फोटोज में उनका स्टनिंग और हॉट लुक देखकर फैंस के होश उड़ गए हैं।

बता दें कि एक्ट्रेस अनन्या पांडे जब भी अपनी फोटोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो उनका हर एक स्टाइल फैंस के बीच ट्रेंड करने लगता है। साथ ही उनके लुक को फैंस अच्छे से फॉलो भी करते हैं।

अनन्या पांडे की लेटेस्ट तस्वीरों में आप देख सकते हैं उन्होंने ग्रे कलर की कोट और पेंट पहना हुआ है, जिसमें वो सिजलिंग अंदाज में पोज देती हुई नजर आ रही हैं।बालों को ओपन कर के, कानों में इयररिंग्स और लाइट मेकअप कर के एक्ट्रेस अनन्या पांडे ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है।

बता दें कि एक्ट्रेस अनन्या पांडे बॉलीवुड इंडस्ट्री की मश्हूर अभिनेत्री हैं और वो इंस्टाग्राम पर काफी एक्टिव भी रहती हैं। साथ ही सोशल मीडिया पर उनकी फैन फॉलोइंग लिस्ट भी काफी जबरदस्त है।

हिन्दी दैनिक विजडम इंडिया
स्वामी,मुद्रक एवं प्रकाशक श्री शील कुमार शुक्ला द्वारा हिन्दुस्तान समाचार फीचर सेवा लि0 ,94, एम0जी0 मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ से छपवाकर 633/387,गेहमर कुंज कालोनी, फैजाबाद रोड, चिनहट, लखनऊ उ0प्र0 से प्रकाशित।
सम्पादक–शील कुमार शुक्ला
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ मान्य होगा।